मैथिली

जदुनाथ सरकार

अनिलचन्द्र बनर्जी

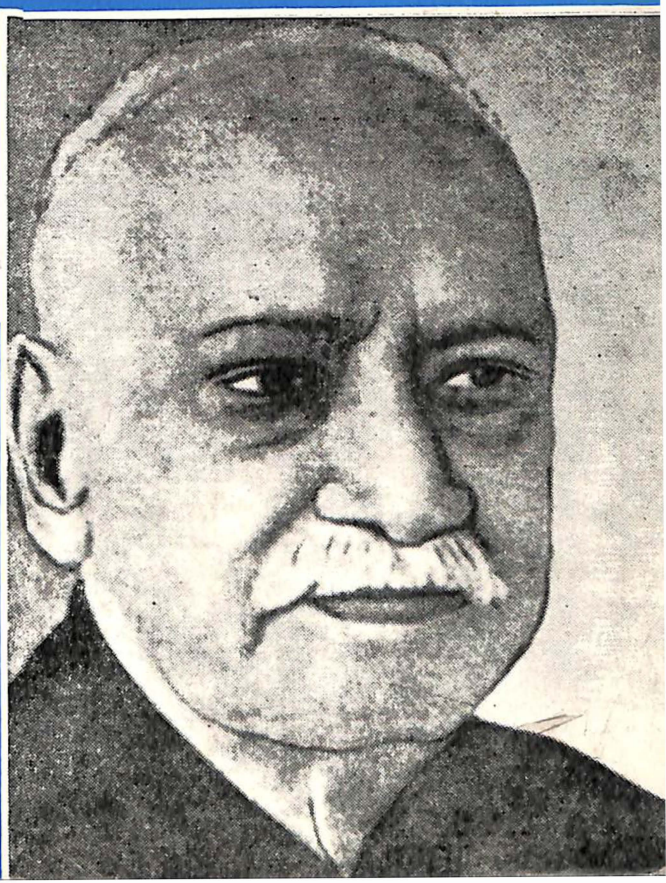

MT
954
Sa 73 B
भारतीय
साहित्यक

MT
954
Sa73B

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

अस्तर पर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओ दृश्य देल गेल अछि जाहिमे तीन भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माय—रानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कय रहल छथि। हिनका लोकनिक नीचाँमे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओहि व्याख्याकेँ लिपिबद्ध कय रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

जदुनाथ सरकार

लेखक
अनिल चन्द्र बनर्जी
अनुवादक
जगदीश प्रसाद कर्ण

साहित्य अकादेमी

Jadunath Sarkar : Maithili translation by Jagadish Prasad Karna of Anil Chandra Banerjee's monograph in English. Sahitya Akademi, New Delhi (1996), Rs. 15.

Library IIAS, Shimla
MT 954 Sa 73 B
00117137

© साहित्य अकादेमी
प्रथम संस्करण : १९९६

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, ३५, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली ११० ००१
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली ११० ००१

क्षेत्रीय कार्यालय
जीवनतारा बिल्डिंग, चौथी मंजिल, २३ए/४४ एक्स,
डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता ७०० ०५३
३०४-३०५, अन्ना सलाई, तेनामपेट, मद्रास ६०० ०१८
१७२, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई ४०० ०१४
ए डी ए रंगमन्दिर, १०६, जे.सी. मार्ग, बैंगलोर ५६० ००२

मूल्य १५ टाका

MT
954
Sa73B

ISBN 81-7201-980-3

लेज़रसैटिंग : पैरागान एन्टरप्राइजेज़, नई दिल्ली ११० ०९२
मुद्रक : कलरप्रिंट, दिल्ली ११० ०३२

117137
9.12.04

विषय सूची

प्रारम्भिक वर्ष	७
प्राध्यापक ओ उपकुलपति	१२
अँग्रेजी मे ऐतिहासिक कृति (१)	१८
अँग्रेजी मे ऐतिहासिक कृति (२)	५५
बँगला साहित्य मे योगदान	७८
जदुनाथ मानवक रूप मे	८५
ग्रन्थ-सूची	८७

प्रारम्भिक वर्ष

जदुनाथ सरकारक दीर्घ कार्यकाल ज्ञानार्जनक प्रति समर्पित अनन्य निष्ठाक अद्‌भुत कीर्त्तिमान थिक। शिक्षकक रूप मे ओ कलकत्ता, पटना, बनारस आ कटक धरि अनेको पीढ़ीक छात्रगण कें पढ़ाओल। शैक्षिक प्रशासकक पद सँ ओ बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयक उपकुलपतिक रूप मे सुधारकक भूमिका मे उतरलाह। मुदा हुनक सर्वोच्च उपलब्धि छल इतिहासक गवेषणाक क्षेत्र मे हुनक अप्रतिम योगदान। ओ एकर अग्रदूत आ मार्ग-निर्धारक छलाह आ जेना-जेना समय आगाँ बढ़ैत गेल ओ एहि मे अद्‌भुत परिपक्वता प्राप्त कयलनि। आजुक विस्तारशील विद्या-जगत् मे ओ जे मानदंड प्रस्तुत कयल से एखनहुँ बेजोड़ अछि। लेखक ओ लेखक-निर्माताक रूप मे बँगला साहित्य मे हुनक देन सेहो कनेको कम उल्लेखनीय नहि।

जदुनाथ सरकारक जन्म १८७० केर १० दिसम्बर कें बंगाल प्रान्तक राजशाही जिला (आब बँगलादेश मे) मे करमचरिया नामक एक छोट गामक समृद्ध कायस्थ जमीन्दार-परिवार मे भेलनि। हुनक पिता राजकुमार सरकार (१८३६-१९१४ ई.) एक विशिष्ट व्यक्ति छलाह। जदुनाथक जीवन पर हुनक बेस प्रभाव पड़लनि।

राजकुमार १८५७ मे नवस्थापित कलकत्ता विश्वविद्याालयक प्रथम एन्ट्रेन्स (प्रवेशिका) परीक्षा मे उत्तीर्ण भेलाह आ ब्रह्मपुर कॉलेज मे (आब पश्चिम बंगाल मे) प्रथम कला-कक्षाक छात्र भेलाह। पिताक मृत्युक उपरान्त परिवारक सम्पत्तिक व्यवस्था करब आवश्यक भऽ गेलनि तें ओ कॉलेज छोड़ि गाम घुरि अयलाह आ ओतहि रहय लगलाह। शिक्षाक्रमक एहि तरहें सहसा अन्त भेलो उत्तर ओ स्वतन्त्र अध्ययन द्वारा अपना कें शिक्षित कयलनि। ओ अँग्रेजी, संस्कृत आ बँगला साहित्य सहित इतिहासक अनेको पोथी किनलनि; इतिहास हुनक सर्वाधिक प्रिय विषय छलनि। जदुनाथ अपन पिता सँ अध्ययनक प्रति विशेष रुचि प्राप्त कयल आ जीवनक प्रारम्भिक काल मे परिवारक पुस्तकालयक नीक जकाँ उपयोग कयलनि।

राजकुमार बंगालक उनइसम शताब्दीक पुनर्जागरण सँ निःसृत प्रगतिशील विचारक पक्षधर छलाह। पुरानपन्थी हिन्दुत्वक अंधविश्वासपूर्ण धारणादि सँ मुक्त

छलाह। ओ वैष्णव मतक सरल रूप सँ आध्यात्मिक शांति प्राप्त करैत छलाह। हुनका बाह्म-समाज दिस किछु आकर्षण छलनि आ रवीनद्रनाथक पिता देवेन्द्रनाथ ठाकुर कें संत प्रकृतिक धार्मिक गुरुक रूप मे सम्मान करैत छलथिन। ओ राजनीति मे कोनो सक्रिय भाग नहि लेल, मुदा राष्ट्रीयता हुनक चरित्र कें अवश्य गढ़लक। जमीन्दार रहितहुँ ओ सामान्य बंगाली गृहस्थ जकाँ सरल जीवन व्यतीत कयलनि। अपना जिलाक जनताक हित लय ओ कठिन परिश्रम कयलनि। गाम मे प्राथमिक पाठशाला, दातव्य औषधालय एवं डाकघर स्थापित करबा मे ओ प्रमुख रूपें कार्य कयलनि। ओ 'राजशाहीवासी' नामक पत्रिकाक सम्पादन कयलनि एवं 'राजशाही एसोशिएशन' केर स्थापना कऽ ओकर मंत्रिपदक कार्यभार सम्हारलनि, सँगहि राजशाही कॉलेज मे बी.ए. कक्षा प्रारम्भ करबाक हेतु प्रचुर धन संग्रह कयल। यूरोपीय निलहा साहेबक अत्याचार सँ पीड़ित मुसलमान किसान सभक हेतु ओ कष्टपूर्ण एवं व्ययसाध्य मोकदमा लड़लाह। ओ देशी वस्तुजातक व्यवहार करथि आ वर्तमान शताब्दीक प्रथम दशक मे बंग-भंग विरोधी आन्दोलनक क्रम मे स्वदेशीक पक्ष लैत छलाह। हुनक सत्य-निष्ठा, उदारवादिता, न्यायप्रियता एवं स्वातंत्र्य-भावनाक कारणें हुनका समस्त जिलाक लोकक स्नेह आ सम्मान प्राप्त छलनि।

एहन पिताक स्नेहपूर्ण लालन-पालन मे जदुनाथ दुर्लभ गुण सभ ग्रहण कयलनि जे आगामी जीवनक क्रियाकलापक हेतु हुनका समर्थ बनओलकनि। अपना जीवनक अन्तिम चरण मे एक गोट रेडिओ वार्त्ता मे जदुनाथ अपना जीवन पर अपन पिताक अमिट प्रभावक चर्चा बड़ मार्म्मिक शब्दें कयलनि। बाल्यकालहि सँ ओ पोथीक प्रबल प्रेमी छलाह। अपना दीर्घ जीवन मे ओ खान-पान आ वेश-भूषा मे सादा रहलाह। ओ अपन देशक एकता आ प्रगति मे अखंड विश्वास रखनिहार राष्ट्रवादी जे बनलाह से अन्त धरि बनल रहलाह।

जदुनाथक शिक्षा पाँच वर्षक अवस्था मे गामक प्राथमिक पाठशाला मे प्रारम्भ भेलनि। दू वर्षक उपरान्त ओ राजशाही शहर आनल गेलाह आ ओतय ओ कॉलेजिएट स्कूल मे भर्ती भेलाह। तकर एक वर्ष पश्चात् ओ कलकत्ता आनल गेलाह, ओहि ठाम ओ हेयर विद्यालय (जे भारत मे अँग्रेजी शिक्षा प्रसारक अग्रदूत डेविड हेयर साहबेक स्मृति मे स्थापित सरकारी विद्यालय छल) एवं ब्राह्म समाज द्वारा स्थापित सिटी कॉलेजिएट स्कूल (एकटा ब्राह्म समाजी संस्था) मे पढ़लनि। कलकत्ता मे ओ समाज आ शिक्षाक महान् सुधारक ईश्वरचन्द्र विद्यासागरक दर्शन कयलनि एवं ब्राह्म समाजक महान् नेता आ वक्ता केशवचन्द्र सेनक धार्मिक प्रवचन सुनलनि। यद्यपि जदुनाथक तखन से वयस नहि छलनि जे हुनका लोकनिक प्रवचनक विहितार्थ बूझि सकितथि, मुदा हुनका लोकनिक व्यक्तित्वक गंभीर प्रभाव हुनक किशोर मानस पर पड़लनि आ वृद्धो भेला पर ई अनुभव हुनक स्मृति-पटल पर अंकित रहलनि।

जदुनाथ पुनः राजशाही आनल गेलाह आ फेर दोसर बेर कॉलेजिएट स्कूल मे दाखिल भेलाह। ओतय पाँच वर्षक (१८८२-'८७) पश्चात् ओ १८८७ ई. मे कलकत्ता विश्वविद्याालयक एन्ट्रेन्स परीक्षा मे उत्तीर्ण भेलाह। ओ विश्वविद्यालय मे छठम स्थान प्राप्त कऽ प्रथम श्रेणीक सरकारी छात्रवृत्ति प्राप्त कयलनि। तत्पश्चात् राजशाही कॉलेज मे दू वर्ष (१८८७-'८९) पढ़ि १८८९ ई. मे कलकत्ता विश्वविद्यालयक एफ.ए. परीक्षा मे उत्तीर्ण भेलाह। ओ पुनः प्रथम श्रेणीक सरकारी छात्रवृत्ति प्राप्त कयलनि।

राजशाही कॉलेज मे आगाँ अध्ययन जारी रखबाक बदला जदुनाथ कलकत्ता अयलाह आ १८८९ ई. मे प्रेसिडेन्सी कॉलेजक बी.ए. कक्षा मे सम्मिलित भेलाह। ताहि समय मे ई कॉलेज उत्तर भारत मे उच्च शिक्षाक अग्रगण्य संस्था छल। १८१७ ई. केर २० जनवरी जहिया कलकत्ताक किछु प्रमुख हिन्दू लोकनिक उदारता आ दूरदर्शिताक फलस्वरूप हिन्दू कॉलेजक स्थापना भेल तहिए सँ प्रेसिडन्सी कॉलेजक निरन्तर विकासक एक इतिहास अछि। भारतवर्ष मे उच्च कोटिक अँग्रेजी शिक्षा प्रदान केनिहार ई सभ सँ पुरान कॉलेज थिक। एहि कॉलेजक सफलते बंगाल मे जनता द्वारा अँग्रेजी शिक्षाक माङ आ शक्ति केर विस्तार कें प्रमाणित कयलक, संगहि ब्रिटिश अधिकारी लाकनि कें शिक्षा-नीतिक निर्माण करबा मे सेहो सहायक सिद्ध भेल। १८५३ ई. मे सरकार एहि कॉलेज कें खास अपन व्यवस्थाक अन्तर्गत लऽ लेलक आ १८५५ ई. क १५ जून कें औपचारिक रूपें एकर नामकरण 'प्रेसिडेन्सी कॉलेज' कयल गेल। एक सरकारी घोषणाक अनुसार एहि कॉलेज कें 'भारतीय विश्वविद्यालयक प्रतिष्ठा आ दर्जा देबाक समकक्ष उद्देश्य' राखल गेल। १८५७ ई. मे एकरा नव स्थापित कलकत्ता विश्वविद्यालय सँ सम्बद्ध कऽ देल गेल; मुदा ई कॉलेज कला आ विज्ञानक स्नाकोत्तर वर्ग तावत् चलबैत रहल यावत् वर्तमान शताब्दीक दोसर दशकक अन्त मे विश्वविद्यालय स्वयं स्नाकोत्तर शिक्षाकें अपना हाथ मे नहि लऽ लेलक।

१८८९ ई. मे कलकत्ता शैक्षिक, धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं राजनीतिक क्रियाकलापक व्यस्त एवं जीवन्त केन्द्र छल। स्वयं सरकार द्वारा संचालित प्रेसिडेन्सी कॉलेज, संस्कृत कॉलेज एवं महिला लोकनिक हेतु बेथ्यून कॉलेज केर अतिरिक्त ओतय अनेक स्वतन्त्र कॉलेज सभ छल, जेना मिशनरी लोकनि द्वारा संचालित स्कॉटिश चर्च कॉलेज, सेन्ट ज़ेवियर्स कॉलेज एवं सेन्ट पॉल्स कॉलेज; ईश्वरचन्द्र विद्यासागर द्वारा स्थापित मेट्रोपोलिटन इन्सटीच्यूशन (जकर नाम पछाति विद्यासागर कॉलेज पड़ल); ब्राह्म समाज द्वारा स्थापित सिटी कॉलेज, काँग्रेसी नेता सुरेन्द्रनाथ बनर्जी द्वारा स्थापित रिपन कॉलेज (जकर नाम बाद मे सुरेन्द्रनाथ कॉलेज पड़ल)। कलकत्ता मे अँग्रेजी आ बँगला मे अनेक प्रभावशाली समाचारपत्र सभ छल। दूटा राजनीतिक संगठन, ब्रिटिश इंडियन एसोशिएशन आ इंडियन ऐसोशिएशन छलैक

जकर मुख्यालय कलकत्ता छल। १८८५ ई. मे बम्बई मे स्थापित इंडियन नैशनल काँग्रेसक द्वितीय अधिवेशन १८८६ ई. मे कलकत्तहि मे भेल छल। अनेको शैक्षिक, आ समाजसेवी संस्था सभ सक्रिय छल। 'वन्दे मातरम्' केर रचयिता बंकिमचन्द्र चटर्जी अपन साहित्यिक शक्ति आ प्रभावक उत्कर्ष पर रहथि।

स्वप्न मे डूबल सुदूर जिला शहर राजशाही मे पलल-पोसल आ पैघ भेल जदुनाथक लेल ई महानगर एकटा नबे संसार छल। ई हुनका मानस कें उद्दीप्त कऽ हुनका लेल एक स्वप्नलोकक सृजन कयलकनि आ जीवनक नव मार्ग फोलि देलकनि। एतय कॉलेज मे ओ एहन सुयोग्य विद्वान् शिक्षक लोकनिक चरण मे बैसलाह जनिक जोड़ा ओ राजशाही मे नहि देखने छलाह। अपना वर्ग मे आ कॉलेज छात्रावास (जतय ओ इडेन हिन्दू होस्टल मे) रहय लगलाह ओ विभिन्न कोटिक सहपाठी लोकनिक संसर्ग मे अयलाह जाहि मे अनेक मेधावी आ अधिकांश युवकोचित विविध क्रियाकलाप मे रुचि रखनिहार आकर्षक छात्र सभ छल। जदुनाथ खेल-कूद खास कऽ फुटबॉल मे भाग लऽ अपन स्वास्थ्य-सुधार कयलनि। फुटबॉल खेलायब ओ बादहुक वर्ष मे जारी रखलनि।

बी.ए. पाठ्यक्रम मे जे ताहि समय मे दू वर्षक होइत छल, ओ अँग्रेजी आ इतिहास कें विशेष अध्ययन लय 'ऑनर्स' रखलनि। हुनका ई विषय पढ़ओनिहार शिक्षक सभ मे छलथिन प्रिंसिपल चार्ल्स एच.टॉनी, प्रोफेसर एफ.जे.रो आ प्रोफेसर एच. एम. पर्सिवल। जदुनाथ १८९१ ई क बी.ए. परीक्षा मे विश्वविद्यालय मे द्वितीय स्थान प्राप्त कयलनि। ओ एक वर्ष प्रेसिडेन्सी कॉलेज मे अँग्रेजीक परीक्षा मे (१८९२ ई.) प्रत्येक पत्र मे औसत ९० प्रतिशतक कीर्त्तिमान अंक आनि प्रथम श्रेणी मे प्रथम स्थान प्राप्त कयलनि। ई एकटा स्मरणीय शैक्षिक उपलब्धि छल।

जदुनाथक अप्रतिम मेधा कें मान्यता दैत सरकार हुनका इंगलैण्ड मे उच्च अध्ययन करबाक हेतु छात्रवृत्ति प्रदान कयलकनि। व्यक्तिगत कारणें ओ एहि प्रस्ताव कें अस्वीकार कऽ देल, मुदा ओ आत्मतुष्ट भऽ आगाँ नब उपलब्धि प्राप्त करबाक प्रयास छोड़ि बैसि रहनिहार व्यक्ति नहि छलाह। ओ प्रेमचन्द-रायचन्द छात्रवृत्तिक हेतु अपना कें सन्नद्ध कयलनि। ई छात्रवृत्ति ताहि दिन कलकत्ता विश्वविद्यालयक छात्र कें प्राप्य सर्वोच्च शैक्षिक पुरस्कार छल।

१८९६ ई. मे बम्बई केर प्रेमचन्द-रायचन्द कलकत्ता विश्वविद्यालय कें दू लाख टाकाक राजोचित दान देने छलथिन। दाताक प्रस्ताव छलनि जे 'एहि राशिक उपयोग कोनो महत् उद्देश्य लय कयल जाय।' विश्वविद्यालयक नियमानुसार एहि कोषक आयक उपयोग एक अति कठिन परीक्षाक आधार पर छात्रवृत्ति प्रदान करबा मे कयल जाइत छल। एहि छात्रवृत्तिक प्रत्येक प्रत्याशी कें किछु विषय मे मौलिक शोध-कार्य करब आवश्यक छलैक। १८९७ ई. मे जदुनाथ अँग्रेजी, इतिहास आ अर्थशास्त्र मे, जे ओहि समय मे इतिहासक अंग छल, लिखित परीक्षा मे

सम्मिलित भेलाह। एहि मे सफल भऽ ओ स्वर्णपदक प्राप्त कयलनि। हुनका पाँच सहस्र टाकाक छात्रवृत्ति सेहो देल गेलनि जे पाँच वर्षक अन्तराल मे किश्तवार देय छल। १९०१ ई. मे "औरंगजेब कालक भारत - सांख्यिकी, स्थलाकृति एवं मार्ग" विषय पर शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत कपलनि। विश्वविद्यालय एकरा स्वीकृति देल आ छात्रवृत्तिक शेष राशि जदुनाथ कें प्रदान कऽ देल गेलनि।

१९०७ ई. मे जदुनाथ कें कलकत्ता विश्वविद्यालय 'ग्रिफिथ मेमोरियल पुरस्कार' प्रदान कयलनि। ई पुरस्कार विज्ञान वा साहित्यक कोनो विभाग मे कयल गेल कार्य वा लिखल निबन्ध पर देल जाइत छलैक। जदुनाथक निबन्धक शीर्षक छलनि '१६५८-'६० केर बंगालक महायुद्ध'। ई मोगल साम्राज्यक इतिहासक अंतर्गत एक घटना छल जकरा जदुनाथ पहिनहि अपन आजीवन अध्ययनक विषयवस्तु बना लेने छलाह।

प्राध्यापक ओ उपकुलपति

उनइसम शताब्दीक अन्तिम किछु वर्ष मे स्नातक युवकलोकनि सरकारी कार्यपालिका मे मजिस्ट्रेटक वा न्यायपालिका मे मुन्सिफक पद प्राप्त करबाक अभिलाषा रखैत छलाह। मुदा ओहि मे अनेक ओकालति प्रारम्भ करथि। जदुनाथ कानूनक स्नातक नहि छलाह तें ओ मुन्सिफ वा ओकील हयबाक अर्हता नहि रखैत छलाह। हनक शैक्षिक कार्यकाल ततेक सफल छलनि जो ओ सहजहि डिप्टी मजिस्ट्रेटक पद पाबि सकैत छलाह, मुदा ओ ताहि लय कखनहु प्रयास नहि कयल। स्पष्ट अछि जे ओ अपन छात्र जीवन काले मे अपन कार्यक सन्धान कऽ लेने छलाह–शिक्षक बनब आ अपन सम्पूर्ण जीवन ज्ञानक अभिवृद्धि मे लगा देब। ई वृत्ति ओहि व्यक्ति लेल अत्यन्त मनोनुकूल छल जे ज्ञानक अनुसन्धानक प्रतिएँ अपना कें समर्पित कऽ देबाक उद्देश्य निर्धारित कऽ लेने होथि।

एम.ए. परीक्षा मे सफल भेलाक किछु मासक अभ्यन्तर ओ १३० टाका मासिक वेतन पर कलकत्ता रिपन कॉलेज मे अँग्रेजीक प्राध्यापकक पदभार ग्रहण कयलनि (१८९३ ई.)। ओ तीन वर्ष आतेय काज कयल। १८९६ ई. मे ओ मेट्रोपोलिटन इन्स्टीच्यूशन मे २०० टाका मासिक वेतन पर प्रोफेसर बनलाह।

प्रेमचन्द-रायचन्द छात्रवृत्तिक लिखित परीक्षा (१८९७ ई.) मे उत्तीर्ण भेला पर जदुनाथ प्रेसिडेन्सी कॉलेज मे अँग्रेजी आ इतिहासक प्राध्यापक भेलाह (१८९८ ई.)। एतय हुनक छात्रलोकनि मे हरेन्द्र कुमार मुखर्जी छलाह जे आगू चलि कऽ विधान निर्मातृ परिषदक उपाध्यक्ष आ पश्चिम बंगालक राज्यपाल बनलाह। आगामी वर्ष १८९९ ई. मे हुनका पटना कॉलेज मे स्थानान्तरित कऽ देल गेलनि। ओतय ओ अँग्रेजी आ इतिहास पढ़बथि। बिहार ओहि समय मे बंगाल प्रेसिडेन्सीक अंग छल। पश्चिम बंगालक भावी मुख्यमंत्री डाक्टर बिधान चन्द्र राय पटना मे हिनक शिष्य रहथिन। १९०१ ई. मे हिनक स्थानान्तरण प्रेसिडेन्सी कॉलेज मे कऽ देल गेलनि। मुदा किछुए मासक पश्चात् जदुनाथ पुनः पटना कॉलेजहि मे पदस्थापित कऽ देल गेलाह। १९११ ई. मे बंग-विभाजनक निरस्त भेलाक बाद नव गठित बिहार-उड़ीसा शिक्षा सेवा मे स्थायी रूपें हिनक स्थानान्तरण कऽ देल गेलनि। १९०१ ई. क अन्त सँ १९१७ ई. क मध्य धरि ओ पटना कॉलेज मे कार्यरत रहलाह। १९०८ ई. सँ

ओ केवल इतिहासक अध्यापन कयलनि, अँग्रेजी पढ़ायब छोड़ि देल। १९१८ ई. मे भारतीय शिक्षा सेवा मे हिनक पदोन्नति कयल गेलनि। १९१९ ई. मे ओ कटक केर रेवेन्शॉ कॉलेज (ताहि समयक संयुक्त बिहार-उड़ीसा प्रान्त) मे अँग्रेजी आ इतिहासक प्राध्यापकक पद ग्रहण कयलनि। १९२३ ई. मे ओ पटना कॉलेज मे स्थानान्तरित भेलाह जतय १९२६ ई. क अगस्त मास धरि सेवानिवृत्ति पर्यन्त काज कयलनि। कटक आ पटना मे बँगलाक प्रसिद्ध उपन्यासकार अन्नदा शंकर रे, आइ. सी. एस. हुनक छात्र छलथिन।

ओहि समय मे कॉलेज शिक्षा मे शिक्षण एवं परीक्षा केर एकमात्र माध्यम अँग्रेजी भाषा छल। जखन जदुनाथ कें बूझि पड़नि जे मातृभाषा मे पढ़ओने ओ अपन विषय विद्यार्थी लोकनि कें अधिक सुगमतापूर्वक हृदयंगम करा सकैत छथि तऽ ओ हिन्दी मे अपन व्याख्यान देथि, कारण बिहार मे दीर्घ कालक प्रवास सँ ओ एहि भाषा मे निपुणंता प्राप्त कऽ लेने रहथि।

जदुनाथ अनेक वर्ष धरि (१९१०-१९१७ ई.) पटना कॉलेजक एम. ए. वर्ग मे इतिहास पढ़ाओल। ताहि समय मे ओ कलकत्ता विश्वविद्यालय सँ सम्बद्ध छल आ हुनका इतिहासक विश्वविद्यालय-व्याख्याताक रूप मे मान्यता प्राप्त रहनि।

विहार आ उड़ीसाक कॉलेज मध्य यदुनाथक सेवा मे अल्पकालक हेतु क्रमभंग भेल। दू वर्ष धरि (१९१७-१९१९ ई.) ओ बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय मे इतिहासक प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्षक रूप मे कार्य कयलनि। शिक्षणक अतिरिक्त ओ इतिहास-विभाग एवं पुस्तकालय कें एहि रूपें संगठित कयल जाहि सँ ओहि ठाम नियमित अध्ययन-अध्यापन एवं अनुसन्धान कार्यक विकास भऽ सकय।

शिक्षकक रूप मे जदुनाथक व्याख्यान विद्वत्तापूर्ण, सुबोध, यथातथ्य आ प्रेरणादायी होइत छलनि। ओ कक्षाक हेतु यत्न सँ अपना कें प्रस्तुत करैत छलाह। ढाका आ लखनऊ विश्वविद्यालयक प्रोफेसर सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता कालिका रंजन कानूनगो हुनका विषय मे लिखने छलथिन, "जे किछु ओ बजैत छलाह से समटा प्रबुद्धवर्ग कें एहन परिपूर्ण कलाकृति जकाँ लगैत छल जे मनीषीक दिव्य दृष्टि सँ समन्वित सुललितं प्रवाह मे बहरायल हो।"ओ नहि चाहैत छलाह जे हुनक छात्र कोनो विषय कें बिनु बुझनहि ग्रहण कऽ लेअय आ ओकर पुनरावृत्ति करैत रहय। हुनक पढ़यबाक एक प्रमुख उद्देश्य छलनि छात्र मे स्वतन्त्र चिन्तन जाग्रत करब। अन्नदा शंकर रे हुनक व्यख्यानक सुबोधता आ श्रोताक ध्यान कें आकर्षित कऽ लेबाक क्षमताक चर्चा कयलनि अछि। ओ ततेक नियमित आ समयनिष्ठ छलाह जे अपन सेवा-निवृत्तिहुक दिन कार्यक्रमानुसार अपन प्रत्येक कक्षाक सभटा कार्य सम्पन्न कयल। पटना कॉलेज मे अपन विदाइ-समारोह मे वर्ग-कार्य पूर्ण कयलाक पश्चाते अपराह्न काल चारि बजे उपस्थित भेलाह।

जदुनाथ मितभाषी रहथि। हुनक गाम्भीर्य हुनक सुपरिचित आ श्रद्धालुओ व्यक्ति सभ सँ हुनका किछु दूरे रखैत छल। मुदा अपन छात्र लोकनिक ओ मित्र छलाह आ अपना कें हुनक सुख-दुखक सहभागी बना लैत छलाह। ओ छात्रगण कें स्वस्थ खेल-कूदक प्रति उत्साहित करैत छलाह। ओकारा सभक भ्रमण कार्यक्रमक नेतृत्व करैत छलाह आ कोनो कष्ट कें हल्लुक मने सहन कऽ लेबा मे ओकरा सभक सहज संगी बनि जाइत छलाह।

गवेषक शिष्य सभक हेतु ओ भारतक प्राचीन कालक आदर्श गुरुक रूप छलाह। विभिन्न प्रान्त सँ आगत एहन प्रत्येक व्यक्ति हुनक परिवारक सदस्य जकाँ पटना आ कटक मे हुनका घर मे रहैत छल आ हुनक व्यक्तिगत निरीक्षण मे पोथी आ पाण्डुलिपिक अध्ययन करैत छल जकर एक विशाल संग्रह हुनक अपन व्यक्तिगत पुस्तकालय मे छलनि। ओहि शिष्य लोकनिक मध्य अनेक विशिष्ट इतिहासज्ञ लोकनि रहथि जेना डा. कालिका रंजन कानूनगो, डा. हरिराम गुप्त (पंजाब विश्वविद्यालयक प्रोफेसर) आ डा. आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव (आगरा कॉलेजक प्रोफेसर)। अन्य विख्यात इतिहासज्ञ जे हुनक मार्गदर्शन मे काज कयलनि से छलाह सीतामउ (मध्यप्रदेश) केर डा. रघुवीर सिंह। ओ हिनका सभक प्रगति पर सर्तक दृष्टि राखथि, हुनक आलेखक संशोधन करथि आ जखन हुनकालोकनि कें कृति पुस्तकाकार होनि तऽ तकर 'प्रूफ' संशोधन सेहो करथि। ओ हुनकालोकनि कें ज्ञानक हेतु ज्ञान मात्र प्राप्त करबाक शिक्षा देथि आ कथमपि ककरो आर्थिक साहाय्य नहि प्राप्त करबाक ने आर्थिक लाभबला पदक लोभ मे पड़बाक प्ररेणा देथि। ओ हुनका सभक बीच बैसि सँगे सादा भोजन करथि आ अपन दैनिक जीवनक छोट-छीन कार्य सभ द्वारा हुनका सभकें 'सरल जीवन, उच्च विचार'क तात्पर्यक बोध कराबथि। मृत्यु सँ मात्र एक वर्ष पूर्व जखन हुनका आभास भेलनि जे ओ 'अनन्तक महासमुद्रक सीमा' पर आबि गेल छथि तऽ ओ अपन शिष्य आ शिष्यक शिष्य सबहुँ कें आग्रह करैत एक गोट 'आशाक सन्देश' बहार कयलनि– "अहाँ सभ समुचित पद्धतिएँ कार्य करी कारण भारतभूमि पर भारतीय इतिहास मे वैज्ञानिक अनुसन्धान करबाक कल्पनातीत महान् अवसर सम्प्रति उपस्थित अछि।" ओ पितामह सदृश अर्धशताब्दी पर्यन्त 'शिष्योपशिष्य'क हेतु प्ररेणाक स्रोत रहलाह।

ऐतिहासिक अनुसन्धानक अथक संवर्द्धकक रूप मे जदुनाथक भूमिकाक दोसर पक्ष महाराष्ट्रक अग्रगण्य इतिहासवेत्ता गोविन्द सखाराम सरदेसाईक संग हुनक दीर्घकालीन पत्राचार सँ प्रकट हाइत अछि। हिनका दुहूक बीच 'घनिष्ठ बौद्धिक मैत्री' १९०४ ई. मे प्रारम्भ भेल आ १९५८ ई. मे जदुनाथक निधन धरि चलैत रहल।

सामान्यतः वर्ष मे एक बेर बहुधा पूनाक निकट सरदेसाईक ग्राम कामशेट मे दुहूक मिलन अवश्य होइत छल आ बीच-बीच मे दुनू गोटे ऐतिहासिक स्थलक

संयुक्त भ्रमण करथि। ओ इतिहासक विभिन्न समस्या सभ पर एक दोसरा कें पत्र लिखथि। परिणामतः सरदेसाईक शब्द मे 'ऐतिहासिक सामग्रीक आदान-प्रदान मे बहुमूल्य सहयोग' सम्पन्न भेल। ओ जदुनाथक 'निःस्वार्थ एवं अदभुत सहायता' कें स्वीकार कयलनि आ लिखल– "हम हृदय सँ अनुभव करैत छी जे हम जे किछु लिखि सकलहुँ ताहि सभ लय हम हुनक ऋणी छिएनि।"

शिक्षण आ अनुसन्धान कार्य जदुनाथक परिश्रम करबाक क्षमता पर कठिन भार उपस्थित कयलकनि आ हुनक सर्वाधिक समयक सर्वाधिक भाग ओही मे लगैत रहलनि। तथापि ओ शिक्षाक समग्र विकास मे सजग रुचि लेबाक प्रयास कयलनि कारण हुनका विचारें ओही पर देशक प्रगति अवलम्बित छल। हुनका शिक्षकक काज पारम्परिक सीमा मे रहि कऽ करऽ पड़लनि, मुदा एकर त्रुटि सभ सँ ओ पूरा अवगत छलाह। हुनक शैक्षणिक प्रयोग सभक पाछाँ इएह कारण छल। ओ तीनटा एहन केन्द्रक यात्रा कयलनि जतय शिक्षण-सम्बन्धी प्रयोग चलि रहल छल– सतीशचन्द्र मुखर्जी द्वारा संचालित राष्ट्रीय महाविद्यालय, बोलपुर मे रवीन्द्रनाथ ठाकुरक स्थल शान्ति-निकेतन आ सँगहि गुरुकुलो। मुदा ओहि अभिनव पद्धतिक तीनू संस्था मे सँ कोनो संस्था केर विचार आ कार्यप्रणाली सँ ओ सहमत नहि भेलाह। एहि केन्द्र सभ मे ज्ञानक ओहि विभाग सभ पर अत्यधिक बल देल जाइत छल जे प्राचीन काल मे समृद्ध भेल छल, मुदा ओतय छात्रलोकनि कें आधुनिक विचार आ वैज्ञानिक प्रगति केर चुनौतीक सामना करब नहि सिखाओल जाइत छल। हुनक विश्वास छलनि जे बीसम शताब्दी मे भारतवर्षक कार्यक्षमता ओकर अतीतकालीन स्तर सँ कतोक गुना अधिक उच्च स्तर धरि पहुँचि सकैत अछि। ओ विश्व कें सम्यक ज्ञान दऽ सकैत अछि। ओकर प्रतिभा वेदान्त-न्यायक भाष्य-रचना वा मोगल कलाक अनुकरण मात्र धरि सीमित रहय से उचित नहि। हुनका भारतक प्राचीन एवं मध्यकालीन परम्पराक निधिक प्रति उच्च श्रद्धाक भाव छलनि। मुदा ओ चाहैत छलाह जे भारत आधुनिक कालक वैज्ञानिक ज्ञान-सम्पदा सँ समन्वित हो आ एहि क्षेत्र मे ओ पश्चिमक नकल सँ नहि प्रत्युत अपन मौलिक प्रयास सँ प्रगति उपलब्ध करय एवं ओकर कृति ओकर अपन प्रतिभाक अभिव्यक्ति करैक। १९५५ ई. मे ओ बाजल छलाहः–

> "भारत बौद्धिक क्षेत्र मे उपेक्षित रहबाक वा भिखारि जकाँ ऑक्सफर्ड, केम्ब्रिज, पैरिस वा वियनाक दुआरि पर भिक्षा मङबाक नियति कें स्वीकार नहि कऽ सकैत अछि। ओकरा अपन अन्तश्चेतना मे उच्चतम मौलिक अनुसन्धानक स्रोत निर्मित करबाक छैक आ एशियाक गुरुकुल मे अपन गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त करबाक छैक जहिना पेरीक्लीजकालीन ऐथेन्स अपना कें हेलास गुरुकुलक रूप देलक।"

भारतक स्वातन्त्र्यपूर्वहु काल मे हुनक ई आदर्श छलनि। जदुनाथक दृष्टि मे एहन कोनो केन्द्र मे उच्चतर शिक्षा कोनो अर्थ नहि रखैत छल जतय उच्चतम योग्य शिक्षक नहि हो, जाहि ठामक छात्र 'सारस्वत साधना' मे पहिनहि सिद्ध नहि भऽ चुकल हो आ 'सम्यक ज्ञान नहि प्राप्त कऽ लेने हो, संगहि जकर प्रधान समुचित अर्थ मे शिक्षाशास्त्री नहि हो।' ओ अनुभव कयलनि जे शिक्षाक निचला स्तर सँ पृथक कऽ उच्चतर शिक्षाक सम्यक् उत्थान नहि कयल जा सकैत अछि। १९२२ ई. मे ओ 'बंगालक हेतु एक शिक्षा कार्यक्रम' शीर्षक लेख लिखलनि ओहि मे माध्यमिक शिक्षाक सुधार पर जोर दैत ओ लिखलनि जे ई 'शैक्षिक संरचनाक आधारशिला' थिक। ओ कलकत्ता विश्वविद्यालयक क्रियाकलाप मे विशेष रुचि राखथि आ १९१७-'२५ ई. क बीच लिखल अपन लेख सभ मे एकर प्रशासन आ परीक्षा स्तरक आलोचना कयलनि। ओहि समय मे रामानन्दचटर्जी द्वारा सम्पादित 'माडर्न रिव्यू' सँ हुनक निकट सम्पर्क छलनि आ हुनक शिक्षा सम्बन्धी अधिकांश विचार कें ओहि मे स्वागत कयल गेलनि। पटना कॉलेज सँ अवकाश ग्रहण करबा सँ ठीक पूर्व हुनका बंगालक गवर्नर महोदय दू वर्षक हेतु कलकत्ता विश्वविद्यालयक उपकुलपति नियुक्त कयलथिन। पटना कॉलेज सँ सेवानिवृत्त भेलाक पश्चात् १९२६ ई. क ८ अगस्त कें ओ ई पद ग्रहण कयलनि आ अवधि पूरा भेलाक उपरान्त पुनर्नियुक्तिक प्रस्ताव कें अस्वीकार कऽ ई पद छोड़ि देल।

कलकत्ता विश्वविद्यालयक उपकुलपति पद १८५७ ई. सँ १९५३ ई. धरि एक अंशकालिक एवं विशुद्ध अवैतनिक पद छल। ई पद ओहि लब्धप्रतिष्ठ व्यक्ति सँ निष्ठापूर्ण सेवाक अपेक्षा रखैत छल जे शिक्षा कें समाजक परमावश्यक रचनात्मक शक्तिक रूप मे महत्त्व दैत छलाह। १९२६ ई. धरि वाइसराय केर एग्जीक्यूटिव काउन्सिलक सदस्य, उच्च न्यायालयक न्यायाधीश अथवा एहने विशिष्ट व्यक्ति जेना प्रमुख अधिवक्ता आदि एहि पद कें सुशोभित करैत छलाह। जदुनाथ प्रथम शिक्षक छलाह जनिका भारतवर्षक सभसँ पुरान विश्वविद्यालयक संचालनक भार सौपंल गेलनि। विद्वान्, शिक्षक एवं शिक्षाशास्त्रीक रूप मे हुनक श्रेष्ठताक ई समुचित स्वीकृति छल।

अपन खास अनुभव आ चिन्तन पर आधारित विचारक संग ओ शिक्षाक प्रशासकीय क्षेत्र मे पदार्पण कयलनि। ओ सरदेसाई कें लिखलथिन, "कलकत्ता विश्वविद्यालयक सुधार द्वारा देशक जनताक सेवा करबाक आशा सँ हम एहि पद कें स्वीकार कयल अछि।" मुदा ओ अपना कें प्रतिकूल वातावरण मे पओलनि। सेनेट आ सिंडिकेटक अनेक सदस्य हुनक विरोध कयलथिन। ओ लोकनि हिनक विचार कें नहि मानलथिन आ १९०६ ई. सँ १९२४ ई. धरि सर आशुतोष मुखर्जी जे विश्वविद्यालय कें नब रूप देने रहथि तनिका द्वारा स्थपित परम्परा मे किछुओ संशोधन करबाक चेष्टा पर ओ सभ अप्रसन्नता व्यक्त करैत गेलाह। उपकुलपतिक

अधिकार बड़ सीमित छलैक। ओ सेनेट आ सिंडिकेटक पूर्ण सहयोग विना विशेष किछु नहि कऽ सकैत छलाह। दोसर कठिनता छल कोषाभाव। एकर आय मुख्यतः विद्यार्थीगण सँ प्राप्त परीक्षा-शुल्क छल। बंगाल सरकार द्वारा देल आर्थिक अनुदान अत्यन्त अपर्याप्त छल।

एहि सभ विकट बाध्यता सँ अबाधित रहि जदुनाथ विश्वविद्यालयक हेतु कठिन परिश्रम करैत रहलाह। काज भारी छल—कारण दू प्रान्त, बंगाल आ आसाम केर माध्यमिक, स्नातक आ स्नातकोत्तर शिक्षा विश्वविद्यालयहिक अधीन छलैक। अपन साहित्यिक काज छोडि कऽ आ अपना कें अवकाशो सँ वञ्चित कऽ ओ विश्वविद्यालयक काज मे प्रतिदिन चारि-पाँच घंटा समय देल करथि। ओ विश्वविद्यालयक प्रशासन कें सुधारबा मे किछु सफल भेलाह, मुदा शिक्षण आ परीक्षा कें सुधारबाक हुनक प्रयास निष्फल सिद्ध भेल। दू वर्षक निराशाक पश्चात् अपन अवधि समाप्त भेला पर ओ एहि कष्टपूर्ण स्थिति सँ अपना कें मुक्त कऽ सकलाह। ओ सरदेसाई कें लिखलथिन, "हम पुनः स्वाधीन भऽ गेल छी आ पिंजर सँ मुक्त भेल पक्षी जकाँ प्रसन्नताक अनुभव करैत छी।" ओ अपन मनोनुकूल कार्यक्षेत्र मे घुरि अयलाह। एतय ओ पहिनहि अपन निर्विवाद प्रभुत्व स्थापित कऽ लेने छलाह। यद्यपि ओ ५८ वर्षक आयु कें प्रायः पार कऽ लेने छलाह, तथापि इतिहास-गवेषणाक जीवनदायी धारा मे पुनः अवगाहन करऽ लगलाह। एहि चिरपरिचित संसार मे असीम उत्साह आ सफलताक दृढ़ विश्वास सँगे विचरण करऽ लगलाह। एहि मे ओ वर्तमान कालक लोकक बदला अतीतक लोक सँ सम्बद्ध छलाह जे हुनका आगू कोनो बाधा ठाढ़ नहि कऽ सकैत छल।

अवकाश प्राप्त कयलाक उपरान्त जदुनाथ कें 'नाइटहुड' प्रदान कयल गेलनि। बंगालक गर्वनर हुनका प्रान्तीय विधान परिषदक सदस्य सेहो मनोनीत कयलथिन। मुदा परिषदक कार्य मे कोनो रुचि नहि रहने ओ १९३२ ई. मे ओकर सदस्यता सँ त्यागपत्र दऽ देल।

अँग्रेजी मे ऐतिहासिक कृति (१)

भारतीय इतिहास मे अनुसन्धानक प्रारम्भ हेतु भारत ईस्ट इन्डिया कम्पनी मे सेवारत अँग्रेज लोकनिक ऋणी अछि। भारतीय इतिहास-लेखनक इतिवृत्त मे एलफिन्सटन, ग्रान्ट डफ, टॉड, कनिंघम, मैलकॉम, ई नाम सभ अविस्मरणीय अछि। आनो कतोक शोधकर्त्ता लोकनि छलाह। वस्तुतः भारतवर्ष मे कार्यरत सैनिक आ असैनिक अँग्रेज पदाधिकारी लोकनि द्वारा ऐतिहासिक अध्ययन-परम्परा वर्तमान शताब्दीक प्रथम चतुर्थांश धरि चलैत रहल।

एंकर स्वास्थ्यकर संसर्ग पुनः भारतीय सभ कें सेहो लगलनि, किन्तु हुनक सामान्य रुचि प्राचीन इतिहास आ सभ्यता मे रहलनि। महाराष्ट्र मे रामकृष्ण गोपाल भंडारकर अपन महान् वैदुष्य कें एहि विषय मे नियोजित कयलनि। बंगाल मे राजेन्द्र लाल मित्र, हर प्रसाद शास्त्री, राधा कुमुद मुखर्जी आदि लोकनि अही क्षेत्र मे गवेषणा कयलनि। राष्ट्रीय पुनर्जागरणक प्रबल लहरि मानव मन कें ओहि गरिमा दिस लऽ गेल जे प्राचीन भारत स्वरूपतः छल। रमेश चंदर दत्त 'आर्थिक इतिहास' लिखबा सँ पूर्व 'प्राचीन भारत मे सभ्यताक इतिहास' केर प्रणयन कयलनि। किन्तु जदुनाथ अपन सुविचारित ध्यान मोगल इतिहास पर केन्द्रित कयल आ शोधकर्त्ताक आगामी पीढ़क लेल सर्वथा नवीन मार्गक निर्माण कयलनि। मध्यकालीन भारत हुनका मे एहन प्रवक्ता पओलक जकर बोध जतबे गहन आ दृष्टि जतबे व्यापक छलैक ततबे दृढ़ छलैक ओकर तथ्यक पकड़ एवं सत्यक प्रति अडिग निष्ठा।

जदुनाथ अपन पिताक इतिहास-प्रेम विरासत मे प्राप्त कयने छलाह। ओ स्वयं लिखलनि, "हम अपन पिता मे अपन जीवनक मार्गदर्शक ध्रुव तारा प्राप्त कयलहुँ। इतिहास हुनक अध्ययनक प्रिय विषय छलनि। जखन हम बालक रही ओ हमरा मन मे इतिहासक प्रति गम्भीर रुचि उत्पन्न कऽ देलनि। ओ प्लुटार्कक 'प्राचीन ग्रीस आ रोमक महापुरुषलोकनिक कथा' पढ़बा मे हमर मार्गदर्शन कयलनि। ओ पोथी सभ, सँगहि 'यूरोपक इतिहास' जे हम पछाति काल पढ़लहुँ, हमर आँखि फोलि देलक। कोनो राष्ट्र कोना कऽ महान् बनैत अछि आ व्यक्ति कोना अपन जीवन कें वस्तुतः सफल बना सकैत अछि, एहि दू विषयक प्रबल प्रभाव हमर

किशोर मानस पर पड़ल।" एहि प्रकारें प्राचीन एवं आधुनिक यूरोपीय इतिहासक छाया मे एक गोट संवेदनशील मानसक विकास भेल।

यूरोपक इतिहास मे बढ़ैत रुचि द्वारा जदुनाथ अपन देशक इतिहासक प्रति आकृष्ट भेलाह। जखन ओ स्नातक पाठ्यक्रमक अध्ययन करैत छलाह तऽ विश्वविद्यालयक पाठ्यक्रम मे भारतीय इतिहास कें गौण स्थान देल गेल छलैह। यूरोपीय इतिहास कें एहि सँ अधिक महत्त्व देल जा रहल छलैक। प्रतिष्ठाक विषय मे अँग्रेजी साहित्य रखबाक कारणें जदुनाथ यूरोपक इतिहासक अतिरिक्त इंगलैण्डक इतिहासक अध्ययन विशेष मनोयोग आ रुचि सँ कयने छलाह कारण कोनो देशक साहित्यक यथार्थ ज्ञान प्राप्त करबाक हेतु ओहि देशक इतिहासक गहन ज्ञान होयब परमावश्यक। ओ इतिहास आ साहित्य कें एक दोसराक पूरक बुझलनि। दान्तेक विशेष रसास्वादन करबाक हेतु ओ सिसमॉण्डक 'इटलीक इतिहास'क अध्ययन कयलनि।

अँग्रेजी आ इतिहास मे ऑनर्सक संग स्नातक भेलाक (१८९१ ई.) ठीक बाद, जेना ओ आगाँ चलि कऽ लिखलनि, "भारतीय इतिहासक क्षेत्र मे हमर 'मसि-जीवन'क श्रीगणेश भेल।" ओ 'टीपू सुल्तानक पतन' शीर्षक सँ एकटा लेख लिखलनि जे प्रेसिडेन्सी कॉलेजक पत्रिका मे प्रकाशित भेल। यद्यपि ओ मौलिक अनुसन्धानात्मक कृति नहि छल, मुदा "मुद्रित रूप मे उपलब्ध अँग्रेजी पोथी आ संवाद-आलेख पर पूर्णतः आधारित छल। ओहि समय मे एक गोट युवा स्नातक हेतु संवादक आलेख सँ सूचना प्राप्त करब अत्यन्त असाधारण बात छल।" स्पष्टतः ओ ओहि सिद्धान्त सूत्र दिस बढ़ि रहल छलाह जकरा ओ पाछतिकाल स्वंय निर्धारित कयलनि– "यदि लिखित प्रमाण नहि तऽ इतिहांस नहि।"

'मसिजीवन'क ई श्रीगणेश कतोक कारणें विशिष्ट छल। जदुनाथ सुदूर अतीत पर दृष्टिपात नहि कयलनि; ओ 'एक गोट मुस्लिम शासिकक दुःखद पतन'क विषय चुनलनि जे एक शताब्दी पूर्व युद्ध मे वीरगतिक वरण कयने छल। दोसर ई जे ई मुसलमान शासक अपन राजनीतिक जीवन पर्यन्त अँग्रेज आक्रमणकारी सभक अटल शत्रु बनल रहल। ओ लॉर्ड वेलेस्लीक 'सब्सिडियरी एलाइऐन्स' (सहायक सन्धि)क प्रस्ताव कें अस्वीकार कऽ स्वंय अपन विनाश कें आमन्त्रित कयने छल। भरिसक राष्ट्रीयताक उमड़ैत लहरि एहि युवा विद्वान् कें विदेशी शासनक विरोध कयनिहार वीरक गाथा चुनबाक हेतु प्रेरित कयलक। तेसर ई जे ई लेख जदुनाथ द्वारा मुसलमाान शासन-काल कें आजीवन अपन अध्ययन विषय बनयबाक पूर्व संकेत दैत छल। मात्र सात वर्षक बाद जदुनाथ औरंगजेबक शासन-काल मे अनुसन्धान प्रारम्भ कयलनि।

जदुनाथक प्रथम ऐतिहास कृति 'औरंगजेबकालीन भारत' जे ओ प्रेमचन्द रायचन्द स्कॉलरशिपक लेल लिखलनि अप्रकाशित पाण्डुलिपि सभ पर आधारित छल। ई

१६०१ ई. मे प्रकाशित भेल। ओ स्वंय कहैत छथि, "ई मोगलकालीन भारतक स्थलाकृति एवं सांख्यिकी प्रस्तुत करबाक एक प्रयास छल।" एहि मे मोगल, विशषतः अकबर आ औरंगजेबक शासन-कालक मार्ग, राजस्व, सामान्य प्रशासन आदिक सम्बन्ध मे यत्नपूर्वक संग्रह कयल विविध सूचना देल गेल अछि। एहि मे ओ स्रोतक रूप मे प्रयुक्त दू गोट पाण्डुलिपि सँ उद्धृत किछु अंशक अनुवाद सेहो कयल। पछाति काल ओ फारसीक आन अनेक ऐतिहासिक कृतिक अँग्रेजी मे अनुवाद कयलनि आ एक गोट अँग्रेज द्वारा अबुल फ़ज़लक 'आइने अकबरी'क दू खण्ड मे कयल अनुवादक संशोधन कयलनि। 'औरंगज़ेबकालीन भारत' मे फारसी मे हुनक उच्च कोटिक प्रवीणताक प्रथम परिचय भेटैत अछि।

'औरंगज़ेबकालीन भारत' दू आन दृष्टिएँ विशेष महत्त्व रखैत अछि। जदुनाथ अपन प्रथम अनुसन्धान कृति मे जे स्थलाकृति कें अपन अध्ययनक विषय बनाओल से एकर पूर्वाभास दैत अछि जे ओ राजनीतिक आ युद्ध-सम्बन्धी घटनाक्रमक भौगोलिक पृष्ठभूमि मे कतेक रुचि रखैत छलाह। इतिहास जाहि भौगोलिक परिदृश्य मे अपना कें प्रकट करैत अछि ताहि पर बादक अपन कृति मे ओ विशेष जोर देलनि। शाहजहाँक मध्य एशिया युद्धक अध्ययनक सँगे ओ भूमिका मे बल्ख आ बदख्शाँक भौगोलिक वर्णन देने छथि। ओ 'नग्न' आ 'निर्जल' पहाड़ी देश छल जाहि मे सउँसे पश्चिमी मरुभूमि सँ बालुक अन्हड़-बिहारि उठैत रहैत छल। स्वभावतः "एहन प्रदेश बड़ छोट-छीन आबादीक भरण-पोषण तऽ कऽ सकैत छल, मुदा अपन थोड़ उपजा सँ कोनो विशाल सेनाक निर्वाह नहि कऽ सकैत छल।" ई तथ्य बहुत अंश मे स्पष्ट करैत अछि जे किऐक शाहजहाँक "निष्प्रयोजन युद्ध"क अन्त सैनिक आ आर्थिक विनाश मे भेल। जदुनाथ कहैत छथि, "इऐह थिक ओ भंयकर मूल्य जे एहि देशक उत्तर-पश्चिम सीमा पर आक्रमक साम्राज्यवाद द्वारा संचालित युद्धक हेतु भारत कें चुकबय पड़ैत छैक।" ई कथन स्पष्टतः ब्रिटेन द्वारा दू-दू अफगान युद्ध मे प्रदर्शित "आक्रमक साम्राज्यवाद"क हेतु भारतीय करदाता कें जे भारी मूल्य देबऽ पड़लैक ताहि दिस व्यंग्यपूर्ण संकेत थिक।

औरंज़ेबक शासनकालक आरम्भ मे उत्तर-पूर्व मे मोगल सभ कें जे अनुभव भेलैक सेहो एहि सँ भिन्न नहि। जदुनाथ असम-घाटीक भौगोलिक चित्र प्रस्तुत करैत छथि; उत्तर, पूर्व आ दक्षिण दिशाक आक्रमण सँ व्यवहारिक रूपें ई कोना अभेद्य अछि तकरा स्पष्ट करैत छथि आ कहैत छथि जे पश्चिम दिस सँ एम्हर बढ़ैत प्रत्येक शत्रु सेना कें "अपन सफलताक हेतु युद्धपोतक एक गोट सशक्त बेड़ा पर निर्भर रहने बिना काज नहि चलि सकैत छलैक।" तें दीर्घकालिक युद्धो मोगल सैन्यशक्ति कें कोनो स्थायी सफलता नहि प्रदान कऽ सकलैक; अहोम साम्राज्य मोगल सीमा सँ बहारे रहल।

मारबाड़क ऊभर-खाभड़ भौतिक परिवेशक वर्णन करैत जदुनाथ कहैत छथि जे 'ई मरुस्थल क्षेत्र' (मरु-मार) मोगल भारतक भूगोल मे 'विचित्र महत्त्व रखैत छल।'

"मोगल राजधानी (आगरा) सँ अहमदाबादक सम्पन्न नगर दिस जयबाक सभ सँ छोट आ सरल व्यापार-मार्ग एहि प्रदेशक सीमा सँ जाइत छल।" औरंगजेब एहि मार्ग पर अपन पूर्ण नियन्त्रण चाहैत छल, तें औरंगजेब ओहि वीर लड़ाकू राठौर जाति सँ तीस-वर्षीय युद्ध ठनलक जे रक्तपात मात्र कें अपन पौरुषक चिह्न मानैत छल।

भौगोलिक रूपें पश्चिमी घाट पर्वतमाला सँ शासित महाराष्ट्र मे प्रकृति स्पार्टाक सादगी कें स्थापित कयने छल। "एहि प्रदेश मे कोनो विलासिता, (पुरोहित कें छोड़ि) कोनो पांडित्य, आमोद-प्रमोद, रस-बोधक कोनो टा विकास, एतेक धरि जे शिष्ट आचरण पर्यन्त सम्भव नहि छल।" मुदा एकर 'अनुपूरक गुणो' अछि। एहन प्रदेश आ जलवायु "स्वावलम्बन, अध्यवसाय, कठोर सरलता, उग्र साहस, निष्कपटता, सामाजिक समानताक भावना आ तकर फलस्वरूप मानव कें मानवक रूप मे प्रतिष्ठा देबाक गौरवक वृद्धि कऽ सकैत अछि।" मराठा चरित्रक आ जाहि प्रदेश मे ओ परिपुष्ट भेल तकरा सँ ओकर सम्बन्धक एहि सँ बेशी गहन विश्लेषण नहि देल जा सकैछ।

जदुनाथक इतिहास-लेखनक इऐह विशेषता छनि– इतिहासक पाछाँ भौगोलिक स्थितिक महत्त्वक अभिज्ञान। ई ने केवल हुनक इतिहास-कथा कें आलोकित करैत अछि आ हुनक पाठक कें ऐतिहासिक शक्तिक संचालनक आवश्यक संकेत दैत अछि, अपितु ई ओकर कल्पना कें जागृत आ दृष्टि कें विस्तृत सेहो करैत अछि। मोगल सेना कोना अफगानिस्तान आ मध्य एशियाक पहाड़ी क्षेत्रक अथवा राजस्थानक विषम आ निर्जल रेगिस्तानक वा असम घाटीक जलप्लावित निम्नतलीय भूमिक वा महाराष्ट्रक सह्याद्रिक उच्च एवं खंडित पर्वतमाला आ कर्नाटकक हँसैत मैदानी भागक यात्रा करैत अछि तकर वर्णन करैत छथि तऽ पाठक हुनका सँगे ओहि सभ स्थानक सेहो परिभ्रमण करैत अछि। ओ परस्पर विपरीत परिवेश आ जलवायुक भिन्नता पर प्रतिक्रिया करैत अछि; ओ विजय आ पराजयक लहरिक बीच भारतवर्षक प्राण-स्पन्दनक अनुभव करैत अछि।

जतय धरि वैज्ञानिक आधार पर मध्ययुगीन भारतीय इतिहासक अनुसन्धानक प्रश्न अछि, जदुनाथ भारतीय विद्वद्गणक अग्रदूत छलाह। जखन ओ मोगल-काल कें अपन अध्ययनक विषय बनओलनि तऽ ओ तकर पूर्वकाल अर्थात् सोड़हम शताब्दी (बाबर, हुमायूँ आ अकबरक शासन-काल) कें छोड़ि देल, कारण ओ पहिनहि एर्सकिन आ बेवरिज सदृश अँग्रेज लेखक लोकनिक ध्यान आकर्षित कऽ चुकल छल। ओ एक गोट अस्पृष्ट क्षेत्रक गवेषणा करऽ चाहैत रहथि। ओ सत्रहम शताब्दी कें चुनलनि जे एक दिस मोगल साम्राज्यक शक्ति आ वैभवक चरम उत्कर्ष-काल छल तऽ दोसर दिस ओकर पतनक आरम्भ-काल सेहो छल। एहि कालखण्डक प्रमुख प्रभावशाली व्यक्ति औरंजेब छल जकरा अधीनु, जदुनाथक

117137
9.12.04

शब्द मे "मोगल साम्राज्य अधिकतम सीमा धरि विस्तृत भेल आ इतिहासक आदि काल सँ ब्रिटिश शक्ति आ सत्ताक अभ्युदय काल धरि भारतवर्ष मे ज्ञात सभ सँ पैघ राज्यक निर्माण भेल।" मुदा ई अन्यतम शासन-काल "अपन पतन आ विघटनक प्रारम्भ केर निस्संदिग्ध चिह्न कें सेहो देखलक।" "महाराष्ट्रक राष्ट्रीयताक प्राकट्य" एवं "शासक-सत्ताक सशस्त्र विरोधी सैनिक समुदायक रूप मे सिख-सम्प्रदायक उदय" एहि "पतन आ विघटन सँ सम्बद्ध छल। वस्तुतः अठारहम शताब्दी एवं उनइसम शताब्दीक आरम्भिक काल मे भारतीय इतिहासक जतेक सर्वोच्च सत्य थिक तकर जड़ि औरंजेबक शासन आ नीति मे अछि।" सँगहि "अपना देशक राजनीतिक इतिहासक आकाश मे नव प्रभातक प्रथम आभाक स्पष्ट दर्शन अही काल मे भेल। अही काल मे हमरालोकनिक भावी भाग्य-विधाता लोकनि एहि भूमि पर अपन सुदृढ़ एवं सुरक्षित आधार प्राप्त कऽ लेलनि।" एकरा तुलना मे सोड़हम शताब्दी शान्त एवं अनाकर्षक काल छल।

यूरोपीय इतिहासक अध्ययन जदुनाथक मानस मे राष्ट्रसभक उत्थान आ पतनक कारणसभक प्रति गम्भीर रुचि उत्पन्न कऽ देने छलनि। भारतवर्षक सन्दर्भ मे एहि समस्याक अवलोकन करबाक हेतु औरंज़ेबक शासनकालक इतिहासक गहन परीक्षण हुनका सक्षम बनओलकनि। एहि मे सम्राटक चरित्र केन्द्रविन्दु छल, मुदा एकर वास्तविक नायक कोनो व्यक्ति नहि प्रत्युत एक महा शक्तिशाली संस्था अर्थात् मोगल साम्राज्य छल जे एक उपमहादेशक सम्पूर्ण लक्ष्य, संघर्ष, समृद्धि आ पीड़ा कें अभिव्यक्त करैत छल।

जदुनाथक 'औरंज़ेबक इतिहास' पाँच खण्ड आ २,४२२ पृष्ठ मे छनि। ओ १९०४ ई. मे एकर प्रारम्भ कयलनि। प्रथम दू खण्ड १९१२ ई. मे प्रकाशित भेल। तेसर, चारिम आ पाँचम खण्ड क्रमशः १९१६, १९१९ आ १९२५ ई. मे प्रकाशित भेल। जखन ओ अपन दुस्साध्य यात्राक अन्त लग अयलाह तऽ ओ लिखलनि, "हम एहि कठिन कार्य मे बीस वर्ष सँ अविराम गतिएँ लागल रहलहुँ। एहि क्रम मे अपन वृत्ति सँ सम्बन्धित कठोर कर्त्तव्य एवं अनेक निजी चिन्ता सभ सँ गुजरलहुँ जे बयसक सँगे बढ़ितहि गेल अछि।" (एहि अवधि मे हुनका १९०८ ई. मे एक पुत्रीक एवं १९२० ई. मे एक पुत्रक वियोग सहन करऽ पड़लनि)।

'औरंगज़ेबक इतिहास' केर प्रथम खण्ड औरंज़ेबक जन्म (२४ अक्टूबर, १६१८) सँ गृहयुद्धक प्रारम्भ (अप्रैल, १६५८) धरिक ओकर जीवनक घटनाक्रम प्रस्तुत करैत अछि जे ओकरा सम्राटक उच्च पद धरि उठा देलकैक। अपन वृद्धावस्थो मे ओ अपन जन्मस्थान गुजरातक छोट-छीन शहर दोहदक स्मृति कें हृदय मे स्नेहपूर्वक जोगबैत रहल। जदुनाथ ओकर शिक्षा-दीक्षाक रोचक विवरण आ ओकर चरित्रक किछु विशेष बात सभ अंकित करैत छथिः सहजात मानसिक विचक्षणता; अरबी आ फारसीक विद्वत्ता; कोरान आ हदीसक (पैगम्बरक परम्परागंत उक्तिसभ)

आधिकारिक ज्ञान; विभिन्न भाषा सभ (हिन्दुस्तानी जे ओकर मातृभाषा छलैक, हिन्दी, चगताई, तुर्की) केर ज्ञान; दरवेश सबहिक समाज मे आनन्द लेबाक प्रवृत्ति; चित्रकला, संगीत आ वास्तुकलाक प्रति अरुचि। शासकक रूप मे ओकर सफलता आ असफलता दुहूक पाछाँ ओकर ई सभटा गुण-दोष काज करैत छल। ओकर 'उपयोगितावादी मनोवृत्ति' कलाक उत्कृष्ट कृति कें निरर्थक बुझैत छल। अपना राज्यकाल मे ओ जे मसजिद बनबओलक से सभटा 'सामान्य आवश्यक वस्तु' छल– मात्र ईंटा आ सुर्खीक ढेरी। तें ओकर राज्यकाल मे मोगल कलाक विकास हठाते रुकि गेलैक।

जदुनाथ चौदहवर्षीय औरंगज़ेब आ एक गोट क्रुद्ध हाथीक बीच मिडन्तक वर्णन करैत छथि– "ओ चलायमान पर्वत औरंगज़ेब पर टूटि पड़ल। राजकुमार घोड़ा कें पाछू घुमबा सँ रोकि अपन स्थान पर मौज सँ डटल रहल आ हाथीक माथ पर भाला फेकलक। हाथी लग मे आबि अपन विशाल सूँढ़क एक झटका सँ औरंज़ेब कें खसा देल। ई असमान युद्ध शीघ्रे ओहि वीर बालकक जीवनलीला समाप्त कऽ दितैक, मुदा लगले ओकरा बचा लेल गेलैक.....।" जखन शाहजहाँ ओकर अद्‌भुत साहस पर ओकरा स्नेहपूर्ण प्रतारणा देलकैक तऽ ओ जबाब देलक, "जँ ओहि भिड़न्त मे हमरा प्राणे गमाबऽ पड़ै तऽ ओ कोनो लाजक बात नहि होइत। मृत्युक छाया तऽ बादशाहोक जीवन पर पड़ैत छैक, एहि मे कोनोटा अप्रतिष्ठा नहि।"

"उच्च भावना आ मृत्युक उदात्त उपेक्षा" केर प्रदर्शन सँ औरंज़ेबक जे स्वभाव सूचित होइत अछि तकरा ओ अपन मृत्युपर्यन्त कायम रखलक। मध्य एशिया अभियान (१६४७ ई.) क नायकक रूप मे ओकरा एक दिन एहन भेलैक जे ठीक जखने एम्हर सँझुका नमाज पढ़बाक समय भेलैक तऽ ओम्हर युद्ध घोरतम रूप लऽ लेने छलैक। ओ अपन कालीन मैदान मे पसारलक आ चारू कात मारि-काट आ कोलाहलक बीच शान्तिपूर्वक नमाज पढ़लक। ओकर शत्रु सभ आश्चर्य सँ एहि दृश्य कें देखैत रहि गेल। किछु वर्षक बाद धरमत (१६५८ ई.) आ खजवा (१६५९ ई.) मे राजगद्दीक हेतु लड़ैत काल ओ खुजि कऽ मृत्यु कें ललकारा देलक जखन कि कोनो मार्मिक घाव ओकर भविष्य कें ध्वस्त कऽ सकैत छलैक। अपन अठहत्तरिम वर्ष मे मराठा सभ सँ लड़ैत काल ओ वाजिंजरक सोझा घेराबन्दी करैत खन्दक मे ठाढ़ छल। जदुनाथ एहि सभ घटनाक वर्णन ई देखयबा लेल करैत छथि जे हुनक इतिहासक केन्द्रीय व्यक्ति कोन तत्त्वक बनल छल। राजनीतिक वा सैनिक, कोनोटा संकट ओकर अचल धैर्य कें नहि हिला सकैत छलैक।

औरंगज़ेबक प्रथम सैनिक कार्यभार छल बुन्देला सभक विरुद्ध अभियानक नाममात्रक नेतृत्व (१६३५ ई.)। ओ तखन मात्र सोड़ह वर्षक किशोर छल। महान् मोगल सम्राट सभ अपन पुत्र कें प्रमुख सैनिक संघर्षक नेता वा प्रान्तक सूबेदार

नियुक्त करबाक चलन कें जारी रखलनि। बहुधा सहायता आ परामर्श देबाक हेतु ओकरा सँग सक्षम सेनाध्यक्ष एवं प्रशासक रहैत छलैक। ई व्यवस्था दू उद्देश्यक पूर्त्ति करैत छल। प्रथम, शाहजादा सभ सैनिक आ राजनीतिक अनुभव प्राप्त करैत छल। दोसर, उच्च पद पर सर्वोच्च नेताक उपस्थिति मात्र सेना आ प्रशासन मे अनुशासन आ आज्ञाकारिता कें क्रियान्वित करैत छल।

जदुनाथक कथा सत्रहम शताब्दीक भारत मे जे राजनीतिक एवं सैनिक प्रस्तर खण्ड एम्हर-ओम्हर छिड़िआयल छल ताहि सभ पर सँ अबाध एवं तीव्र वेगें बहैत स्वच्छ चकमकाइत धार जकाँ अछि। एवं प्रकारें अपन चरित्रक अन्तर्निहित बल कें विकसित करैत, निर्मम रूपें कार्य करबाक अपन इच्छाशक्ति कें प्रखरतर बनबैत, शत्रु आ मित्र दुहू कें समान रूपें नियन्त्रित करबाक क्षमता कें प्रदर्शित करैत आ तत्कालीन परिस्थिति सँ अपना नीतिक अनुसार सामंजस्य करबाक अपन कौशल कें सूचित करैत औरंज़ेब एक घटना सँ घटना दिस आगाँ बढ़ैत अछि। ओ अपन शिक्षण कालक पूर्ण उपयोग कयलक।

बुँदेला सभक दमनक बाद औरंगज़ेब मोगल दक्कनक सूबेदारक रूप मे अपन पहिल कार्यकाल पूर्ण कयल (१६३६-'४४)। ओ बीजापुर आ गोलकुडांक सुलतान सभक संगहि नव उदीयमान मराठा जातिक सम्पर्क मे सेहो आयल। ओ दक्षिणक उग्र राजनीतिक स्थिति कें नीक जकाँ बुझलक। मुदा ओतय अपन काज पूरा करबा सँ पहिनहि ओकरा दोसर उपद्रवग्रस्त प्रान्त गुजरातक सूबेदार बना कऽ पठा देल गेलैक। दू वर्षक अल्प समय मे (१६४५-'४७) ओ अपन "क्षमता आ साहसक बलें अपन प्रतिष्ठा जमा लेलक आ शीघ्रे एक सुदूर स्थान मे बजा लेल गेल जतय ओकर एहि गुण सबहिक सर्वोच्च आवश्यकता छलैक।" शाहजहाँ द्वारा १६४५ ई. मे प्रारम्भ कयल गेल अनावश्यक आ खर्चीला युद्ध पूरा करबाक हेतु १६४७ ई. मे ओकरा बल्खक सूबेदार बना कऽ पठा देल गेलैक।

ओतय ओ पूर्ण सफलता नहि प्राप्त कऽ सकल किएक तऽ ओ उजबेक जनता केर राष्ट्रीय विद्रोहक युद्ध छल आ ओकरा सभक नेता 'शक्तिशाली आ योग्य' छल। अनेक वर्षक बाद औरंगज़ेब कें एहने 'राष्ट्रीय विद्रोहक मोकाबिला महाराष्ट्र मे करऽ पड़लैक से ओकर साम्राज्यक पतनक कारण भेल।

ओरंगज़ेबक अगिला कार्यभार सिंध आ मुल्तानक सूबेदारी छलैक (१६४८-'५२)। एहि अवधि मे ओ दू बेर कन्दहारक घेराबन्दीक नेतृत्व कयलक। मुदा जे फारसी सभ ओहि विशाल किला पर कब्जा कऽ नेने छल तकरा ओ नहि हटा सकल। एहि पराजय लेल ओकरा जे जवाबदेह बनाओल गेलैक से न्याययुक्त नहि छल, कारण ओकरा पाछाँ एहन परिस्थिति छल जे ओकरा नियन्त्रण सँ बहार रहैक। तथापि ओकरा दोसर बेर दक्षिणक सूबेदार बना कऽ पठा देल गेलैक (१६५३-'५८)। यद्यपि ओकर ध्यान प्रमुख रूपें राजनीतिक आ सैनिक कार्यक्षेत्र दिस छलैक, जेना

बीजापुर, गोलकुंडा आ शिवाजीक नेतृत्व मे मराठा लोकनि सँगे सम्बन्ध, मुदा ओ सेना आ प्रशासन मे महत्वपूर्ण सुधार सेहो कयलक। सहसा शाहजहाँ दुखित पड़ि गेल (१६५७ ई.) आ ओकर चारू पुत्र मे सँ प्रत्येक उत्तराधिकारक युद्धक हेतु अपना-अपनी कऽ उद्यत भेल। एहि प्रतिद्वन्द्वी सभ मे सभ सँ योग्य आ चतुर औरंगज़ेब छल; ओ अप्रैल १६५८ ई. मे नर्मदा कें पार कयलक।

'औरंगज़ेब इतिहास' क प्रथम खण्ड एतय आबि कऽ समाप्त होइत अछि। जदुनाथ ओहि युगक भाग्यविधाताक स्पष्ट चित्र अंकित कयने छथि आ मोगल प्रशासनक अनेक पक्ष पर, पुनः मोगल सैन्य-शक्ति आ दुर्बलता दुहू पर, सहज रूपें प्रकाश दैत छथि। राजपूत सभक राजभक्ति पर हुनक टिप्पणी बहुत रास बातक उद्घाटन करैत अछि। धर्म मे राजपूत लोकनि कें जे परम्परागत निष्ठा छलैक से ओकरा सभ कें मन्दिर सभ ध्वस्त करबा मे भाग लेबा सँ वर्जित नहि केलकैक। ओ कहैत छथि, "एहि पुण्य कार्य मे, अर्थात् बुँदेल राजा वीर सिंह देवक राजधानीक लग मे ओकर विशाल उत्तुंग मन्दिर कें ध्वस्त करबा मे, जे राजपूतसभ मोगल पताकाक अधीन लड़ैत सहायता कयलक ताहि मे सिसोदिया आ राठौर, कछवाहा आ हाड़ा, सभ सम्मिलित छल।" ई घटना जहिना हिन्दू जातिक दुर्बलता कें प्रकट करैत अछि तहिना मोगल साम्राज्यक शक्ति कें सेहो देखबैत अछि।

दोसर खण्ड मे उत्तराधिकारक संर्घष एवं (१६५८ ई. क अप्रैल सँ जुलाइ १६५९ ई. धरि) औरंगज़ेबक भव्य राज्यभिषेक समारोह क वर्णन अछि। दारा आ शुजा पर विजय प्राप्त करबा मे ओकरा कोनो बाधा नहि भेलैक। युद्ध या राजनीति मे ओकर एक रंग कौशल आ दाव-पेंचक परिपूर्ण निपुणता ओकरा उत्कर्षक शीर्ष पर पहुँचा देल। एहि सभ युद्धक जदुनाथ जे वर्णन कयने छथि से असाधारण रूपें विस्तृत रहितहुँ सामान्य पाठक कें क्लांत नहि करैत अछि। इतिहासवेत्ताक सरल शब्दावली ओहिना गति सँ बढ़ैत जाइत अछि जेना सेना अभियान पर आगाँ बढ़ैत चल जाइत अछि। औरंगज़ेबक धूर्त्तताक सूक्ष्म तत्त्व सभक विश्लेषण निष्णात नाट्यकारक दक्षता सँ कयल गेल अछि। सँगहि सुदूरगामी राजनीतिक महत्त्वक घटना सभ पर सैन्य कलाक प्रभावक अध्ययन करबा मे जदुनाथ सैनिक इतिहासकारक रूप मे प्रकट होइत छथि। उदाहरणस्पवरूप, धरमतक स्थिति मे ओ औरंगज़ेबक आक्रामक रणनीतिक औचित्य पर बल दैत छथि आ सामूगढ़ मे ओकर आत्मरक्षाक रणकौशलक प्रासंगिकता पर। ओ सामूगढ़क औरंगज़ेब आ वाटरलूक वेलिग्टंनक बीच तुलना करैत छथि; दुहू इ़ाम "विजय एहि सँ अधिक पूर्ण नहि भऽ सकैत छल।"

यद्यपि जदुनाथ युद्धक वैज्ञानिक पक्ष पर ध्यान दैत छथि, तथापि ओ इहो नहि बिसरैत छथि जे युद्धक खर्चक भार मात्र लड़निहार कें नहि वहन करऽ पड़लैक। ओ लिखैत छथि, "सामूगढ़ आ आगराक बीच मार्गक दूनू कात किछु-किछु डेग पर घायल लोकक समूह सभ छल जे घर पहुँचि अपन इलाज करयबाक निष्फल

आशा लेने युद्धभूमि सँ लड़खड़ाइत बहार भेल छल, मुदा दुश्मनक तरुआरि सँ नहि तऽ मइ मासक घातक लू केर लहरि सँ, पीड़ा आ थकनी सँ ओ भगौड़ा सभ एक-एक कऽ दम तोड़ि दैत छल। युद्धभूमि आ सड़कक कात दुहू ठाम मनुक्खक लाशक सँगे पसरल छल युद्धक शिकार भेल मूक जीव सभ– बड़द, खच्चर, ऊँट, घोड़ा आ हाथी।"

औरंगज़ेब हत्या आ विश्वासघात सँ अपन साम्राज्य कें सुदृढ़ बनओलक। वृद्ध आ रुग्ण पिता शाहजहाँ मृत्यु पर्यन्त (१६६६ ई.) एकान्त कारावास मे राखल गेल। औरंगज़ेबक संग देनिहार मुराद कें धोखा दऽ कऽ पकड़ि लेल गेलैक; ओ ग्वालियर किला मे बन्द कऽ देल गेल आ ओतहि ओकर हत्या कऽ देल गेलैक। "चालिस वर्षक उपरान्त औरंगज़ेब जखन स्वंय बूढ़ भऽ कऽ मृत्यु दिस बढ़ि रहल छल तऽ ओ हत्याक शिकार अपन भाइक कब्रक चर्च कयलक, मुदा ओहि मे पश्चाताप वा करुणाक एको टा शब्द नहि रहैक।" दारा कें ओएह पठान पकड़बा देल जकर प्राण ओहि अवसर पर ओ बचओने छल आ औरंगज़ेबक हुकुम सँ ओकरो हत्या कऽ देल गेलैक। विनाँ कोनो टिप्पणी देने जदुनाथ खूनक डाबर मे पड़लं दाराक अन्तक वर्णन करैत छथि आ दृश्यक विस्तृत वर्णन मे निहित मर्मस्पर्शी आघातक अनुभव मे सहभागी हयबा लेल पाठक कें छोड़ि दैत छथि। मुदा ओ "अहू सँ अधिक खूनी दृश्यक" स्मरण करैत छथि जे सिपाही विद्रोह काल "जतय दारा शिकोहक क्षत-विक्षत शरीरक अवशेष कें माटि मे गाड़ि देल गेल छल तकरा लग घटिक भेल छल।" तीन गोट मोगल शाहजादा जाहि भे एक गोट राजगद्दीक उत्तराधिकारी छल १८५७ ई. मे अँग्रेज सैनिक द्वारा "नृशंसतापूर्वक गोली सँ मारि देल गेल।" ओ कहैत छथि, "अपन भायक रक्त मे नहाय औरंगज़ेब सिंहासनारूढ़ भेल आ तकरा सन्तानक सन्तान केर रक्त मे ओकर वंश सँ राजकीय नाम मेटा गेलैक।"

मुराद आ दारा शिकोह– एहि दुहूक हत्या लय औरंगज़ेब प्रत्यक्षतः जवाबदेह छल। दाराक ज्येष्ठ पुत्र सुलेमान शिकोहक दुःखद अन्त औरंगज़ेबक चरित्रक आओरो अधिक वीभत्स पक्ष प्रस्तुत करैत अछि। बन्दी शाहज़ादा "सम्राट कें अत्यन्त धैर्यपूर्वक कहलकनि जे जँ अहाँ कें हमरा पोस्ता पिऐबाक मोन हो तऽ हम विनती करैत छी जे कृपा कऽ कऽ हमरा तुरन्ते मारिए दी। औरंगज़ेब बड़े गम्भीर मुद्रा मे उच्च स्वरें प्रतिज्ञा कयलक जे 'निश्चित रूपें ई पेय ओकरा नहि देल जयतैक; ताहि लेल ओ निश्चिन्त रहओ'... मुदा सुलेमान शिकोह मृत्युओ सँ बेशी जाहि भवितव्य सँ भयत्रस्त छल, औरंगज़ेब अपन देल गम्भीर वचन क उल्लंघन कऽ ओकरा ओएह परिणति देल।" एक वर्षक बाद "औरंगज़ेबक महत्त्वाकांक्षाक शिकार दोसर शाहजादाक लग ग्वालियर पहाड़ी पर ओकरा दफना देल गेलैक आ ओहि कलंकित क़ब्रगाह मे सुलेमान शिकोह आ ओकर पित्ती मुरादबख्श कें मृत्यु एक कऽ देल।"

~

बलात् पोस्ता पिया कऽ हत्या करबाक तरीका मोगल चलन छल। जदुनाथ कहैत छथि, "पोस्ताक पेय पोस्ताक मूड़ी कें थूरि राति भरि पानि मे राखि कऽ बनाओल जाइत छैक। ई घुट्टी सामान्यतः ग्वालियर किला मे बन्दी ओहि शाहज़ादा सभ कें देल जाहत छलैक जकरा बादशाह लोकनिन्दाक भय सँ कत्ल नहि कऽ पबैत छल। एकटा पैघ प्याला मे ई घुट्टी ओकरा सभ कें पिअयबा लय भोरहरिया मे आनल जाइत छलैक आ यावत् ओ एकरा घोंटि नहि लैत छल, ओकरा खाइ लय किछु नहि देल जाइत छलैक। ओ घुट्टीं पीनें ओ अभागल लोक सभ दुब्बर भऽ जाइत छल, ओकर बल समाप्त भऽ जाइत छलैक, ओ सुषुप्त आ संज्ञाशून्य भऽ जाइत छल आ अन्ततः मृत्युक ग्रास बनि जाइत छल।" सुलेमान शिकोह एक वर्ष धरि घिसिऔड़ कटैत रहल आ तकरा बाद "ओकर रक्षक सभक प्रयास ओकरा परलोक पहुँचा देलकैक।"

औरंगज़ेब क सेना शुजा कें खेहारैत रहलैक तऽ ओ आराकान भागि पड़ायल।

एहि उत्तराधिकारी वनवाक युद्ध मे कपट, स्वार्थ आ विश्वासघातपूर्ण कुकृत्य सवहिक जे नमहर क्रम अछि तकर एकमात्र अपवादक उल्लेख जदुनाथ यत्न सँ करैत छथि। से थिक एक गोट चमत्कारपूर्ण स्वामिभक्तिक कथा।

"अन्त धरि" शुजाक प्रति अनुरक्त रहनिहार आ एहि सुदूर अज्ञात प्रदेश धरि ओकर सुख-दुःख मे संग देनिहार अनन्य स्वामिभक्त बराहक दसटा सैयद सभ छल। "सम्राटक विशेष युद्ध-पंक्ति मे सम्मानक पद पयबाक आनुवंशिक अधिकार बरहाक सैयद लोकनि कें प्राप्त छलैक। तें ई सर्वथा उचित छल जे ई सैयद लोकनि विकटतम दुर्भाग्य आ संकटक घड़ी मे अपन स्वामीक संग देबाक हेतु सर्वदा प्रस्तुत रहथि।" शुजा आराकान मे आश्रय लेलक, मुदा किछु काल बाद माघ राजाक सैनिकगण द्वारा मारल गेल।

आगरा किला मे बन्दीक रूप मे शाहजहाँक अन्तिम समय 'औरंगज़ेबक इतिहास'क तेसर खण्ड मे वर्णित अछि। "राजाधिराज लेल ई परिवर्तन वस्तुतः अत्यन्त दुःखद छल आ अनेक संघर्षक बादे ओ एकरा स्वीकार कयल.....महान् मोगल जे अपनहि युद्ध मे अश्वारोहण नहि कऽ सकैत छल, प्रकृतिक व्यवस्था मे फालतू छल। ओकरा राजमंच सँ हटि जायब आवश्यक।" पिता-पुत्र कटु पत्राचार करैत रहल। "शाहजहाँ अपन क्रूर पुत्र कें चेतओलक जे अहाँ कें स्मरण रखबाक चाही जे अहूँक सन्तान अहाँक संग ओहने व्यवहार कऽ सकैत अछि जेहन अहाँ अपन पिताक प्रति कयल अछि।" औरंगज़ेब कें "दैवी दण्ड" तखन जा कऽ भेटलैक जखन ओकर चारिम पुत्र अकबर १६८१ ई. मे विद्रोह कऽ देलकैक आ सम्राट कें समाद पठओलक "अहाँ कें अपन पिता कें गद्दी सँ हटा देवाक आ दू भायक हत्या करवाक पापक प्रायश्चित अपना वृद्धावस्था मे ईश्वरक ध्यान मे लगा कऽ करबाक चाही।"

"अन्त मे शाहजहाँ अपन अनिवार्य अन्तक आगाँ ओहिना हारि मानि लेलक जेना बच्चा कनैत-कनैत सूति रहैत अछि आ फरियाद करब बन्न कऽ दैत अछि।" अपन निर्दय पुत्र द्वारा विविध प्रकारें उत्पीड़ित आ "शत्रु सबहिक हेज सँ सर्वथा घरेल" ओ बूढ़ बादशाह जाहि एकान्त कक्ष मे बन्न रहैत छल तकर झाँकी जदुनाथ पाठक कें दैत छथि। धर्म मे आ सँगहि मातृवत् सेवा कैनिहारि अपन जेठ पुत्री जहाँनारा सँ ओ शान्ति प्राप्त करैत छल। अन्त मे ओकर स्रष्टा, ओकर मालिक ओकर पर दया कयल। अन्तिम क्षण धरि पूर्ण चेतना रखने आ अपन प्रेमिका चिर-वियुक्ता मुमताजमहलक विश्राम-स्थल पर दृष्टि गड़ओने अल्लाहक प्रति इस्लामी निष्ठाक शब्द सभ दोहरबैत आ क्षीण स्वरें प्रार्थना करैत ओ शान्तिपूर्वक शाश्वत विश्राम मे निमग्न भऽ गेल।

औरंगज़ेब कें "ने अपन मरैत बाप लग जयबाक ने ओकर अन्तिम संस्कारक हेतु कोनो निर्देश देबाक विचार भेलैक।" मोगल बादशाह लोकनि मे सभ सँ शानदार बादशाह कें माटि मे आश्रय देबाक हेतु मात्र "किछु हिजड़ा सभ आ ओही तरहक आन लोक ओकरा तेना कऽ लऽ गेलैक जेना अन्य कोनो बादशाह कें नहि लऽ गेल छलैक, ने ओकर वंशक दृष्टिएँ शोभनीय छलैक।"

जदुनाथ कहैत छथि, "पिताक प्रति औरंगज़ेबक व्यवहार ने केवल नैतिक भावनाक उल्लंघन छल, अपितु युगक सामाजिक मर्यादाक घोर प्रतिकूल सेहो छल। शासन करिते काल पिताक प्रति विद्रोह करब मोगल परिवारक अभिशाप छल। जहाँगीर अकबरक शासनक खिलाफ बगावत कयने छल, शाहजहाँ जहाँगीरक विरुद्ध। ओ दूनू अपन पिताक सेनानायक वा अपन सत्ताक प्रतिद्वन्द्वी भायक विरुद्ध निर्द्वन्द्व ठाढ़ भेल छल, मुदा युद्ध मे अपन पिताक सामना करबा सँ पाछू हटि जाइत छल। स्वयं बादशाहक उपस्थित भेला पर विद्रोही शाहज़ादा की तऽ आत्मसमर्पण कऽ दैत छल वा लाजें पड़ा जाइत छल। मुदा औरंगज़ेबक महत्त्वाकांक्षा शिष्टता आ सभटा सामाजिक रेवाजक अतिक्रमण कऽ चुकल छल। आव प्रजा ओकरा एहन निडर कलंकित व्यक्तिक रूप मे घृणा करऽ लागल जकरा ने कोनो नीति, ने दया-माया, ने लज्जेक लेश मात्र छलैक!"

ई टिप्पणी औरंगज़ेबक धार्मिक नीतिक संकेत दैत अछि। जदुनाथक कथन छनि, "प्रजावर्गक सम्मान अर्जित करबाक उद्देश्यें अति अपेक्षित धार्मिक सुधारक मुद्दा बना कऽ, पुनः ईश्वरीय इच्छाक अनिच्छुक किंतु विवश यन्त्रक रूप मे अपना कें इस्लामी परम्परानिष्ठाक पक्षधरक रूप मे प्रस्तुत करब ओकरा आवश्यक बुझना गेलैक। तें शुद्ध इस्लामी फरमान सभ कें पुनः लागू करबा मे ओ बड़ जोश देखओलक जाहि सँ पुत्र आ भायक रूप मे ओकर विगत आचरण कें जनता बिसरि जाय.....।" बूझि पड़ैत अछि जे जदुनाथ 'जनता' शब्दक प्रयोग मुसलमान जनताक अर्थ मे करैत छथि, कारण हिन्दू सभ कें इस्लामक शुद्धीकरण सँ कोनो

मतलब नहि छलैक, ने पुत्र आ भ्राताक रूप मे औरंगज़ेबक आचरण पर बनल हिन्दूलोकनिक धारणे ओकर धार्मिक कट्टरता सँ प्रभावित भऽ सकैत छल। असल बात तऽ ई छल जे औरंगज़ेबक पाप कें क्षमा करबाक बदला ई समुदाय ओकर धार्मिक परम्परानिष्ठा कें अपन धार्मिक भावनाक सँग-सँग अपन राजनीतिक आ आर्थिक हित कें हानि पहुँचयबाक ओकर सम्पूर्ण नीतिक जड़ि बुझलक।

विवेकशील इतिहासकार कोनो ऐतिहासिक पुरुष की कयलक तकरेटा वर्णन नहि करैत अछि, प्रत्युत ओकर कृतित्वक पाछाँ कोन प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष आधार छलैक तकरो लेखा-जोखा प्रस्तुत करैत अछि। जदुनाथ एहि बातक उपेक्षा नहि करैत छथि जे पिताक प्रति औरंगज़ेबक दुर्भावना के बढ़यबा मे दाराक प्रति शाहजहाँक अतिशय स्नेहक हाथ छलैक। यद्यपि "एके माता सँ उत्पन्न" चारि पुत्र मे सभ सँ ज्येष्ठ कें अपन प्रियपात्र बनायब कोनो अन्याय वा पक्षपात नहि छल, वरन् प्राकृतिक नियमक उचित अनुसरणे छल जे जेठ सन्तति कें सभ कनिष्ठ सँ अधिक अधिकार आ प्राथमिकता प्रदान करैत छैक। मुदा मोगल परम्परा मे एहि 'प्रकृतिक नियम'क कोनो स्थान नहि छलैक। हुमायूँ आ अकबरक विरोध ओकरा भाय द्वारा भेल छलैक आ शाहजहाँ स्वयं अपन जेठ भाय खुसरोक हत्या कऽ देने छल जखन ओ असहाय आन्हर बन्दीक रूप मे ओकरा हिरासति मे छल। एकरा अतिरिक्त शाहजहाँ दारा शिकोह सँगे एना व्यवहार करैत छल जाहि सँ आकर आन पुत्र सभ अधिकार आ प्रधानताक अपन वैध अंश सँ अपना कें वञ्चित बुझैत छल। जखन शाहजहाँ आगरा किला मे बन्दी छल तऽ औरंगज़ेब ओकर पत्र मे लिखने छल, "यदि अहाँ विभिन्न प्रकारें अपन जेठ पुत्रक सहायता नहि कयने रहितिऐक आ ओकरा निजी विश्वासक पद पर प्रतिष्ठित नहि कयने रहितिऐक.....आ ओकरा प्रति अपन आवेशक कारणे अपन आन पुत्र सभक सुरक्षाक समुचित प्रबन्ध करबा सँ च्युत नहि भेल रहितहुँ तऽ सभ भाय एक सँगे शान्तिपूर्वक रहितय आ गृह-युद्धक आगि नहि भड़कितय।"

औरंगज़ेबक दीर्घकालीन शासन (१६५८-१७०७ ई.) केर राजनीतिक इतिहास आ ताहि सँ निकट रूपें सम्बद्ध सैनिक इतिहासक विस्तृत अध्ययन 'औरंगज़ेबक इतिहास'क तेसर, चारिम आ पाँचम खण्ड मे कयल गेल अछि। "औरंगज़ेबक राज्यकाल स्वाभाविक रूपें लगभग पच्चीस वर्षक दू समान भाग मे विभाजित कयल गेल अछि। एकर प्रथम भाग ओ उत्तर भारत मे व्यतीत कयलक आ दोसर भाग दक्षिण मे।" प्रथम कालखण्ड मे (१६५८-'८२), "ध्यानक प्रमुख केन्द्र निश्चत रूपें उत्तर भारत रहल.....कारण सैनिक आ असैनिक सर्वाधिक महत्त्वक जतेक परिणाम भेल तकर सम्बन्ध एहि प्रदेश सँ छल, जखन कि दक्षिण सुदूर आ उपेक्षणीय क्षेत्रक रूप मे प्रतीत होइत छल। तेसर खण्ड मे वर्णित एहि अवधि मे "उत्तर भारत मे ध्यानक केन्द्र आश्चर्यजनक वेग एवं विस्तार सँगे बदलैत अछि।" जदुनाथ एहि परिदृश्यक उपसंहार एना करैत छथि:

"शाही पताका सुदूर पश्चिम मे काबुल सँ भारतक सुदूर पूर्व कामरूप पर्वत श्रेणी धरि आ उत्तरी सीमाक पार तिब्बत सँ साम्राज्यक दक्षिणी सीमाक पार बीजापुर धरि अभियान करैत अछि। असम केर मंगोल-जातीय अहोमजन आ आराकनक बर्मी लोक सँ लऽ कऽ दक्षिण बिहार मे पलामूक आदिवासी चेरो जाति आ बिहार सँ उत्तर दिस मोरंग आ कुमाऊँक पहाड़ी जातिक संग युद्ध पर युद्ध होइत हमरा लोकनि देखैत छी। एकर अलावा अराजक किसान सभ पर आ दूर-दूर पर अनेक जिलाक सरदार सभक संग छोट-मोट अनेको फौजी कार्रवाई होइत अछि। हमरालोकनि सम्राटक धार्मिक असहिष्णुताक नग्न रूप देखैत छी आ हिन्दू पुनर्जागरणक प्रथम लक्षणक सेहो अवलोकन करैत छी जे कि सरकार द्वारा एक गोट जीवित धर्म पर अत्याचार करबाक प्रक्रिया कें उक़सयबाक सहजस्वाभाविक प्रतिक्रिया छल।"

जदुनाथ जनैत छलाह जे एहन विस्मयकारी "विविधता आ आकस्मिकता" पाठक कें परस्पर असम्बद्ध राजनीतिक क्रियाकलापक समूह केर आभास दऽ सकैत छल, तें ओ पाठक कें परामर्श देल जे "ओ अपने दृष्टि कें सम्राट पर केन्द्रित राखय जकर संकल्प सम्पूर्ण शासन कें संचालित कऽ रहल छल आ जकर नीतिटा विभिन्न प्रान्त मे असम्बद्ध सन लगैत क्रियाकलाप कें एक सूत्र मे बन्हैत छल।" भारतवर्षक एकता एक शासकक व्यक्तित्त्व मे मूर्त्त भऽ गेल छल जकर वज्र सन संकल्प, स्वनिर्धारित सिद्धान्तक परिपालन आ अतिमानवीय अध्यवसाय विविध रंगक अनेक सूत्र कें एकत्र कयने छल। जदुनाथ स्वयं अनेक स्थानीय वर्णनविस्तार कें कात कऽ देने छलाह यद्यपि ओकर संकलन विभिन्न स्रोत-भंडार सँ कयल गेल छल मुदा ओ उपमहादेशक इतिहासक मुख्य धारा मे अप्रासंगिक लगैत छल। ओ लिखैत छथि, "हमर विषय दिल्ली साम्राज्यक इतिहास अछि ने कि कोनो प्रान्तीय जाति" जेना राजपूत, सिख वा अहोम जाति। तथापि ओ मारबाड़क भूमि आ उपजा, सिखलोकनिक आदिकालीन इतिहास, असम केर भूगोल आ पश्चिमोत्तर सीमाप्रान्तक पठान सभक आदिकालक इतिहास आ सामाजिक व्यवस्थाक विषय मे लिखलनि, कारण शाही नीतिक सफलता वा असफलता कें स्पष्ट बुझबा लेल एहि सभक विवरण आवश्यक छल।

औरंगज़ेबक राज्यकालक पूर्वार्द्ध उत्तर भारत मे साम्राज्यक सीमावर्त्ती क्षेत्र मे छोट-छीन विजयक काल छल। तिब्बत पर एक अस्पष्ट प्रकारक अधिराज्य स्थापित कयल गेल। ओतय औरंगज़ेबक नामांकित मुद्रा चलाओल गेल आ एकटा मस्जिद निर्मित कयल गेल। तकरा बाद एक बेर शाही सेना तिब्बत मे प्रवेश कयलक आ तातार आक्रमणकारी सभ कें भगओलक। तिब्बत कें मोगल साम्राज्य मे मिला लेबाक सरकारी इतिहासकारक दावा स्पष्टतः निराधार छल। मोगल-तिब्बत सम्बन्धक ई भीतरी झाँकी जदुनाथक सम्यक् अध्ययन-पद्धतिक उदाहरण थिक।

औरंगज़ेबक राजनीतिक आ सैनिक क्रियाकलापक इतिहास मे तिब्बतक प्रसंग एक उपेक्षणीय विषय छल, मुदा इस्लामक प्रचार मे उत्साहातिरेकक निदर्शनक दृष्टिएँ ई ध्यान देबा योग्य वृत्तान्त अछि। ओ तिब्बतक प्रधान सँ दूटा माङ कयलकः ओकरा देश मे इस्लामक चिह्नक प्रवेश आ पादशाहीक अधीनता स्वीकार करबाक सार्वजनिक घोषणा।

तिब्बतक दुर्गम हिमाच्छादित पहाड़ी प्रदेश पर वस्तुतः पिनष्फल आक्रमण सँ कतोक गुना अधिक अर्थपूर्ण छल अहोम राजा सभक द्वारा शासित ब्रह्मपुत्र घाटीक अभियान। शान जातिक एक साहसी शाखा छल अहोम समुदाय जकर मूल भूमि ऊपरी बर्माक उत्तर-पूर्व प्रदेश छल। पूर्वहि मे ओकर सभक हिन्दूकरण भऽ गेल छलैक, यद्यपि ओ सभ अपन किछु पुरानो धार्मिक आ सामाजिक लक्षणसभ कें कायम रखने छल। अनेक शताब्दी सँ इस्लामक आतंक रहितहुँ हिन्दुत्व मे एतेक शक्ति छल जे उत्तर-पूर्वक विदेशी जाति पर ओ मौन रूपें अपन प्रभाव राखि सकैत छल। एहि प्रभावक स्रोत छल बंगाल : 'हिन्दू पुरोहित आ कारीगर' सभक असम मे आगमन भेल आ बहुसंख्यक बन्दी बंगालीसभ (अधिकांशतः मुसलमान) अहोम राज्य मे बसि गेल। आजुक असम मे 'आबादीक विविधता' सोड़हम आ सत्रहम शताब्दीक देन थिक।

आक्रमक अहोम अपन सीमां चौकी कें बढ़ा कऽ मुसलमानी सूबा बंगालक राजधनी ढाका सँ पाँच दिनक दूरी मात्र पर आनि नेने छल। ओकरा सभकें सैंतबाक समय आयल १६६१ ई. मे। अपन पूर्वी सीमाक सुरक्षा करबाक दृढ़ संकल्प सँ औरंगज़ेब अपन विश्वस्त प्रतिनिधि बंगालक सूबेदार मीरजुमला कें असम आ आराकानक उपद्रवी जमीन्दार सभ कें दण्ड देबाक आदेश देलक। असम मे मीर जुमलाक अभियानक जदुनाथ जे वर्णक कयल अछि से एक शक्तिशाली सेना द्वारा मनुष्य आ प्रकृतिक विरुद्ध साहसी संघर्षक यथार्थवादी कथा थिक। ढाका घुरैत काल मीर जुमलाक मृत्यु मनुक्खक बीच एक गोट 'जन्मजात नरपति'क दुःखद अन्त छल। एक ईरानी जे हीराक सौदागरक रूप मे गोलकुंडा आयल छल से भारतवर्षक पूर्वी कोन मे सेनाध्यक्षक रूप मे मृत्यु कें प्राप्त कयलक। ओकर उत्तराधिकारी शाइस्ता खाँ आराकान समस्या कें अपना हाथ मे लेलक। चटगाँव (आब बाँगलादेश) पहिने पुर्तगाली सभ सँ आ पछाति आराकानी लोक सँ छीनल गेल। परम्परा सँ कमजोर मोगल जलसेनाक ई विशिष्ट सफलता छल। औरंगज़ेबक राज्यरोहणक एक दशकक अभ्यन्तर बंगालक दक्षिणी-पूर्वी क्षेत्र सँ पुर्तगाली आ आराकानी (माघ) सभक आक्रमण कें समाप्त कऽ देल गेल।

जदुनाथ पाठक कें उत्तर-पूर्व आ दक्षिण-पूर्व सँ उत्तर-पश्चिम दिस लऽ जाइत छथि। ओतय समस्या सर्वथा भिन्न प्रकारक छल– दुर्दान्त आ स्वतन्त्रताप्रेमी पठान लोकनिक प्रतिरोध। बंजर पहाड़ी प्रदेश मे रहनिहार पठान सभ "पेशेवर दस्यु छल

जकर काज सदैव सरकार सँ लड़िते रहब छल।" एहि अन्तहीन युद्ध मे भूगोल ओकरा सभक पक्ष मे छलैक; मुदा ओकरासभक जनजातीय सरदारीक निरन्तर संघर्षजन्य पारस्परिक कलह ओकरा सभक कमजोरीक स्थायी कारण छल। जदुनाथ कहैत छथि, "अपन सम्पूर्ण इतिहास मे ओ सभ कोनो पैघ सुसम्बद्ध राज्य नहि स्थापित कऽ सकल, ने कबीला सभक एकटा कोनो टिकाऊ संघो धरि बना सकल।" मुदा औरंगज़ेबक प्रतिरोध करब एक 'राष्ट्रीय' रूप लऽ लेलक। एकर प्रभाव कन्दहार सँ अटक धरि समस्त पठान प्रदेश पर पड़लैक। खुशहाल खाँ खंटकक व्यक्तित्त्व मे ओ सभ अपन कठोर एवं अनम्य नेता पओलक जे ने केवल योद्धा प्रत्युत कवि सेहो छल। ओकर अपन बेटे विश्वासघात कऽ ओकरा शत्रुसभक हाथ मे दऽ देलकैक। ओ लिखलक, "ओकरा सभक (अर्थात् आन पठान नेता सभक) बीच अपन राष्ट्रसम्मानक चिन्ता एक हमरहिटा छल।" पठान सभक हेतु अफगान युद्ध एक गोट त्रासदी छल, मुदा मोगल लोकनिक हेतु आर्थिक दृष्टिएँ विनाशकारी एवं राजनीतिक दृष्टिएँ हानिकारक छल।

सीमान्त पर कठिन युद्ध सभ भेल जाहि दिस बादशाह कें व्यक्तिगत रूपें ध्यान देमऽ पड़लैक। आन्तरिक शान्ति मे जे बाधा होइत रहलैक से ओकर अधिकारी गण कें बझओने रखलकैक। एहन विघ्न-बाधा सभ कें जदुनाथ अनेक श्रेणी मे रखैत छथि – "राजकुमार सभक उत्तराधिकारक हेतु संघर्षक मध्य अपरिहार्य रूपें भड़कल विद्रोह सँ नागरिक प्रशासन विच्छिन्न भऽ जायब"; "मन्दिर-विध्वंसक नीतिक विरुद्ध हिन्दू जनताक संग्राम"; "अधीनस्थ राजागणक विद्रोह"; "दूर-दराजक वा जँगली इलाकाक सरदार सभक बगावत।" औरंगज़ेबक जीवन कथा सँ उत्तेजित हिन्दू विद्रोह आ सिख जातिक संग औरंगज़ेबक व्यवहार विस्तार सँ प्रस्तुत कयल गेल अछि। छोट-छीन उपद्रव सभ कें लघु टिप्पणी वा चर्चा मे देल गेल अछि।

हाल सालक मोगल इतिहासकार सभ मोगल कालक किसान विद्रोहक कारण आ स्वरूप पर विशेष ध्यान देलनि अछि। ओ वास्तव मे धार्मिक वस्तुस्थितिक उपेक्षा कऽ देलनि अछि। जदुनाथ समस्या कें 'मोगलकालीन शान्ति'क दृष्टिकोण सँ देखैत छथि जकरा औरंगजेबक नीति भंग कऽ देलक। ओ आर्थिक प्रक्रियाक उपेक्षा कऽ देलनि। मुदा ओ दू गोट प्रसंगक उल्लेख कयलनि जकरा पर हुनक परवर्त्ती मोगलकालक अध्येता लोकनि ध्यान नहि देल। ओ कहैत छथि–

> "जन समुदाय संक्रमणशील छल, स्थिर नहि। निरन्तर लोकक भीतरी स्थानान्तरण होइत रहैत छलैक। विभिन्न पीढ़ी मे विभिन्न गिरोह नब प्रदेश मे स्थान-परिवर्त्तन करैत रहैत छल आ नब स्थान सँ पुरना निवासी सभ कें हटयबाक प्रयास करैत रहैत छल आ अपन घर बसबैत रहैत छल। अथवा, जेना बहुआ होइत छल, एक कुल कोनो प्रदेश मे पहिने नोकर वा असामीक रूप मे अबैत छल मुदा किछु पीढ़ीक बाद एतेक शक्तिशाली भऽ

जाइत छल जे ओ अपन स्वामी कें दबा दैत छल आ स्वंय ओहि प्रदेशक प्रमुख कुल आ स्वामी धरि बनि जाहत छल।"

एतय जदुनाथ मोगलकालीन भारतक आर्थिक-सामाजिक अध्ययक नब दिशा सूचित करैत छथि।

किछु हालक लेखकलोकनि औरंगजेबक हिन्दू (अधिकांश राजपूत) मनसबदार सभक सम्बन्ध मे आँकड़ा जुटओलनि अछि। राजपूत सभक सैनिक सेवा अत्यावश्यक छल, तें छोट-छीन मनसबदारी दऽ ओकरा सभक समावेश करऽ पड़ैत छलैक। मुदा ओकर कर्त्तव्य छल लड़ब, ओ सभ कहियो सेना मे बख्शी (Pay-master-General) केर पद नहि प्राप्त कयलक। बहुत रास एहन हिन्दू सभ छल जे राजस्व प्रशासन मे कुशल छल। टोडरमल अकबरक शासन-काल मे राजस्व-विभाग कें संगठित कयलनि। मुदा ओहू विभाग विशेष मे मुसलमाने सभक वर्चस्व रहैक। जदुनाथ हमरा सभ लय औरंगज़ेबक प्रमुख पदाधिकारी सभक पूरा सूची देने छथि; तीन वजीर (दीवान), एगारह वख्शी, नौ खान-ए-समन। ओ सभ मुसलमान छल। राजा रघुनाथ जे निष्कलंक निष्ठा, कार्य मे परिश्रमपूर्ण ध्यान एवं प्रशासनक उत्कृष्ट क्षमता सँ सम्पन्न व्यक्ति छलाह, अनेक वर्ष धरि सहायक वा स्थानापन्न दीवानक कार्य कयल मुदा कहियो अपना पद पर स्थायी नहि बनाओल गेलाह। अर्ध शताब्दीक शासन-काल मे तीनू सर्वोच्च पद मे सँ कोनो पदक हेतु हिन्दू व्यक्ति कें नहि चुनल गेल। अपना दिस सँ विना कोनो टिप्पणी देने मात्र नामक सूची संकलित कऽ जदुनाथ औरंगज़ेबक शासन-संचालन कोना साम्प्रदायिक छल से सूचित करैत छथि।

जदुनाथ औरंगज़ेबक धार्मिक नीतिक व्याख्या विस्तार सँ तीन अध्याय मे करैत छथि जे ओकर शासनकालक इतिहास कें बुझबाक हेतु प्रायः सभ सँ प्रमुख सूत्र थिक। अपन शासन-कालक आरम्भिक वर्ष मे ओ अपना प्रति एशियाक दोसर मुसलमानी राज्य सभक नीक धारणा प्राप्त करबाक प्रयास कयलक। पिता आ भायलोकनिक प्रति कयल ओकर व्यवहार कें बाहरी मुस्लिम संसार बिसरि जाय, एहि उद्देश्य सँ ओ अपन प्रजा सँ भारी करक रूप मे असूल कयल धनराशि कें पानि जकाँ बहओलक। विदेशी राजा आ हुनकर दूत सभ कें मुक्तहस्त सँ उपहार दऽ कऽ ओ ओकरा सभ कें चकित करबाक प्रयत्न कयलक। भारतवर्षक सम्पदाक अपव्यय सँ देश कें कोनो प्रकारक लाभ नहि भेलैक। अपन शासनक उत्तर काल मे ओ अपन उदारता कें कम कयलक, "किछु तऽ एहि कारणें जे ओकर उद्देश्यक पूर्त्ति भऽ गेल छलैक आ किछु एहि कारणें जे लगातार युद्धक क्रम ओकरा खजाना कें खाली कऽ देलकैक।" अनेक वर्ष धरि ओ धार्मिक स्थल सभक व्यवस्थापक मक्काक शरीफ कें विशाल धनराशि प्रदान कयलक। "दुधगरि गायक रूप मे भारतक प्रसिद्धि इथियोपियो राज्य सँ आगाँ पश्चिम धरि व्याप्त

भऽ गेलैक।" "ईश्वर प्रेमी लोक सभक आत्मा कें प्रसन्न करबाक" औरंगज़ेबक प्रयास ओकर साम्राज्य कें राजनीतिक वा आर्थिक कोनोटा लाभ नहि प्रदान कयलकैक।

कठोर आ दुराग्रही सुन्नी औरंगज़ेब मात्र मूर्त्तिपूजक हिन्दुए कें नहि प्रत्युत शिया आ सूफी पर्यन्त कें रफीज़ी अर्थात् विधर्मी बुझैत छल। ओ इस्लामक विशुद्ध रूप कें पुनः प्रतिष्ठित कऽ ओकर सरंक्षण करऽ चाहैत छल। एहि संयुक्त उद्देश्य कें पूरा करबाक लेल ओ दू कोटिक फरमान जारी कयलक। ओकर हिन्दू-विरोधी फरमान हिन्दू धार्मिक प्रथा सहित व्यापार आ रोजगारक अवसरक सम्बन्ध मे हिन्दू जनताक सम्मुख अनेक अवरोध उपस्थित कयलक। जदुनाथ जजिया (धर्म-कर) आ मन्दिर-विध्वंसक विस्तृत विवरण दैत छथि। ओकर विशुद्धतावादी फरमान ओहि प्रथा सभ पर रोक लगओलक जकरा ओ इस्लाम-विरोधी बुझलक। एकरा द्वारा ओकर उद्देश्य नैतिक सुधार कें सेहो आगू बढ़यबाक छलैक। जाहि उदार मुसलमान लोकनिक दारा शिकोह समर्थन कयने छल तकरा सभ कें कठोर दण्ड भोगऽ पड़लैक। एहि मे ओ प्रसिद्ध सूफी सन्त सेहो छल जे कविक रूप मे 'सरमद' उपनाम सँ विख्यात छल। मुसलमानी बोहरा आ खाजा सम्प्रदाय कें क्रूरता सँ सताओल गेल।

जदुनाथ स्पष्ट करैत छथि जे औरंगज़ेबक धार्मिक असहिष्णुताक जड़ि मुसलमानी राज्यक धर्मतंत्रीय स्वरूप मे छल। एहन राज्य मे "दीवानी कानून पूर्णतः धार्मिक कानूनक अधीन रहैछ आ वस्तुतः ओहि मे अपन अस्तित्व कें सर्वथा विलीन कऽ दैत छैक।" एहन शासनतन्त्रक हेतु "पुरातनपन्थी इस्लामक सीमाक बाहर कोनो धर्म वा मतक प्रतिएँ सहिष्णुता राखब पाप सँ समझौता करबाक बरोबरि थिक।" मुसलमानी राज्य मे रहनिहार गैर-मुसलमान नागरिक कें सामाजिक अयोग्यताक दशा मे रहऽ पड़तैक। ओ ज़िम्मी अर्थात् एहन व्यक्ति होहछ जकरा मुसलमानी शासक एहन शर्तक स्वीकृतिक आधार पर संरक्षण दैछ "जे गुलामीक कनेके बदलल रूप थिक।" ओकरा ज़िज़िया सेहो देमऽ पड़तैक। एहि सभ विचारक व्याख्या करबा मे जदुनाथक आधार पूर्णतः प्रामाणिक छनि। जाहि सभ प्रामाणिक स्रोत सँ ओ उद्धरण लेलनि ओहि मे 'एनसाइक्लोपीडिया ऑव इस्लाम' सन ग्रन्थ अछि। राज्यक इस्लामी अवधारणा मे ओ दू प्रकारक दुर्गुण देखैत छथि। पहिल, ई "शासक वर्ग आ शासित जनसमुदाय दुहूक नैतिक आ आर्थिक विनाशक कारण बनैत अछि। दोसर, ई एक राष्ट्रक निर्माण कें असम्भव बना दैत अछि। हुनक निष्कर्ष छनि– "जखन मिश्रित जनसमुदाय पर इस्लामी धर्मतन्त्र थोपल जाहत अछि तऽ ओ अल्पतन्त्र (Oligarchy) आ विदेशी शासन दुहूक सम्मिलित निकृष्ट गुण सँ परिपूर्ण रहैत अछि।"

औरंगज़ेब अपन धर्मत्तंत्रीय विचार कें व्यावहारिक रूपें हिन्दू प्रजा पर जे लागू कयलक तकर प्रमुखतः दू टा रूप छलैक। मन्दिरक ध्वंस आ ज़िज़िया कर लगायब

जकरा अकबर उठा देने छल। जदुनाथ एकर पूर्ण विवरण दैत छथि आ तत्कालीन अधिकारी व्यक्ति सभक प्रचुर उद्धरण दैत छथि। हुनक कोनो कथन विशेष पर आपत्ति कयने विना हालक किछु लेखकगण हुनका पर ई दोष लगबैत छथि जे ओ विकृत साम्प्रदायिक दृष्टकोण रखलनि। जदुनाथ कें एक धर्मक रूप मे इस्लामक प्रति कोनो विरोधी भावना नहि छलनि। औरंगज़ेबक व्यक्तिगत गुण सभक ओ बड़ आदर करैत छलाह। ओ कहैत छथि, "बादशाह पापाचरण, बुद्धिहीनता, आलस्य सँ मुक्त छल।" ओकर बौद्धिक प्रखरता लोकप्रसिद्ध छल। ओकर उत्साह आ उद्यम, शासकीय कार्य मे ध्यान, ओकर धैर्य आ अध्यवसाय अनुकरणीय छलैक। निजी जीवन मे ओ वानप्रस्थी जकाँ सरल आ संयमी छल। ओ प्राचीन कालक ओहि ज्ञान पर अधिकार रखैत छल जे नीति-शास्त्रक ग्रन्थ सभ मे पाओल जा सकैछ। "ओकर चिर अभिलाषा छलैक जे इस्लामी विश्रामक दिन जुम्मा (शुक्र) कें ओकर अन्त होइक आ से अल्लाहताला जे असीम कृपालु छथि अपन नैष्ठिक सेवक सभ मे सँ एक केर प्रार्थना स्वीकार कयल।" ई शब्द सभ कोनो पूर्वाग्रहग्रस्त इतिहासकारक नहि थिक। ओ औरंगज़ेबक धार्मिक नीतिक आलोचना कयलनि किएक तऽ ओ ई जानऽ चाहैत छलाह जे एहन बादशाहक "पचास वर्षक शासनक परिणाम किएक असफलता आ अव्यवस्था भेल।" ओ एकर प्रमुख कारण औरंगज़ेबक धार्मिक नीति मे पाओल जे अकबर द्वारा स्थापित परम्परा कें कात कऽ देलक। किछु हाल सालक लेखक लोकनि वास्तव मे एहि धार्मिक कारणक उपेक्षा कऽ दैत छथि आ आर्थिक प्रभाव सभ पर जोर दैत छथि। जँ यदुनाथ धर्मक अतिरिक्त आन आधार कें कम महत्त्व दैत छथि तऽ हुनको लोकनिक दोष ई जे ओ सभ धर्मबला पक्षक अवहेलना कऽ दैत छथि जे मध्यकालीन भारतीय इतिहासक प्रमुख आधार छल।

औरंगज़ेब कें जज़िया कर लगयबाक विरुद्ध आग्रह करैत शिवाजीक लिखल ऐतिहासिक पत्रक अनुवाद जदुनाथ कयल जे विशिष्ट महत्त्वक अभिलेख थिक। मुदा हालक लेखक लोकनि एकर चर्चो टा नहि करैत छथि, कारण ओ औरंगज़ेबक धार्मिक नीति कें मान्य रूप मे प्रस्तुत करबाक प्रयास करैत छथि। शिवाजी अकबर आ औरंगज़ेबक धार्मिक दृष्टिकोण बीचक विषमता कें एहि तरहें इंगित कयल :

> "साम्राज्य रूपी प्रासादक निर्माता.....अकबर.....विभिन्न धर्म यथा ईसाई, यहूदी, मुसलमान, दादूपन्थी, 'फलकिया', 'मलकिया', भौतिकवादी 'अ. न्सारीन', नास्तिक 'दहरिया', ब्राह्मण आ जैन पुरोहित लोकनिक सम्बन्ध मे एक विश्व समन्वयक नीति अपनओलनि। हुनक उदार हृदयक लक्ष्य सर्व जनसमुदायक लोकक सम्मान आ रक्षा करब छलनि। तें ओ 'विश्वक आध्यात्मिक गुरु' उपाधि सँ विभूषित भेलाह।"

शिवाजी आगू कहलनि जे यद्यपि जहाँगीर आ शाहजहाँ कें ज़िया लगयबाक अधिकार छलनि, मुदा ओ लोकनि धर्मान्धता कें अपन हृदय मे स्थान नहि देल किएक तऽ ओ ईश्वर-निर्मित ऊँच आ नीच, सभ मनुक्खक सिद्धान्त आ प्रवृत्ति मे विविधताक उदाहरण मानैत छलाह। ओ घोषणा कयलनि जे औरंगज़ेब "तैमूरी वंशक नाम आ प्रतिष्ठा कें माटि मे मिला देल।"

> "यदि अहाँ वास्तव मे ईश्वरक किताब आ शब्द (अर्थात् कोरान) मे विश्वास करैत छी तऽ ओहि मे अहाँ देखबैक जे ईश्वर कें 'सर्वमानवक मालिक' (रब्ब-उल-आलमीन) सँ सूचित कयल गेल छैक, मात्र 'रब्ब-उल-मुसलमीन', 'मुसलमान सभक मालिक' सँ नहि। ई ठीक अछि जे इस्लाम आ हिन्दू धर्म विपरीतता बोधक शब्द थिक। ई से विविध रंगद्रव्य थिक जकरा ओ असली चित्रकार, ईश्वर, विभिन्न रंगक संयोजन करबाक हेतु आ सम्पूर्ण मानवजातिक अपन चित्र केर रूपरेखा कें भरबाक हेतु उपयोग करैत अछि। यदि मस्जिद अछि तऽ अजानक पुकार हुनके स्मरण मे कयल जाइत अछि; यदि मन्दिर अछि तऽ घंटाक ध्वनि मात्र हुनके प्राप्त करबाक लालसा सँ कयल जाइत अछि। कोनो मनुक्खक मत आ चलनक प्रति कट्टरता प्रदर्शित करब ओहि 'पवित्र किताब'क शब्द कें बदलि देबाक बरोबरि थिक। मूल चित्र पर अपना दिस सँ नव रेखा खींचि देब ओहि सर्वोच्च चित्रकारक कृति मे दोष बहार करबाक समाने एक क्रिया थिक।"

ईश्वर कें 'रब्ब-उल-आलमीन' नहि, 'रब्ब-उल-मुसलमीन' क रूप मे मानबाक औरंगज़ेबक हठ जदुनाथक अनुसार "हिन्दू प्रतिक्रिया" कें उत्तेजित कयलक। ज़िया कर लगयबा सँ पूर्व मथुरा प्रदेश मे भेल जाट आ सतनामी विद्रोह एकर प्रथम चरण छल। एहि दूनू मामिला मे धार्मिक आ आर्थिक शिकाइत सभ मिझरायल छल। तकरा बाद जदुनाथ मोगल-समाजक आंहू सँ अधिक विकट शत्रु सिख लाकनि दिस ध्यान दैत छथि जे ता धरि एकरा विरुद्ध संघर्ष करैत रहल जा धरि एकर पतन नहि भेल। ओ गुरु नानकक काल सँ गुरु गोविन्द सिंहक काल धरि सिख लोकनिक अभ्युदयक रूपरेखा प्रस्तुत करैत छथि। ई सर्वेक्षण अत्यन्त संक्षिप्त अछि आ अपेक्षाकृत गौण प्रामाणिक कृति, मेकॉलिफक 'सिख धर्म' पर आधारित अछि। गुरु गोविन्द सिंहक प्राणदण्डक विषय मे ओ कहैत छथि जे "ई धार्मिक अत्याचारक मामिला नहि छल, प्रत्युत राजनीतिक अपराधी कें देल जाइत प्रचलित दण्डमात्र छल।" आधुनिक अध्ययन सँ स्पष्ट सूचित होइत अछि जे हुनक ई दृष्टिकोण सर्वथा त्रुटिपूर्ण छल। तहिना हुनक इहो कथन दोष पूर्ण अछि जे "गुरु गोविन्द सिंह इस्लामक खुल्लमखुल्ला विरोधक नीति अपनाओल।" आसाम आ राजपुतानाक इतिहास प्रस्तुत करबा मे ओ क्रमशः बुरंजी आ राजस्थानी इतिवृत्तक

उपयोग कयलनि मुदा ओ सिख इतिहासक अध्ययन मे पंजाबी इतिवृत्तक पूर्णतः उपेक्षा कयलनि। एहि मे विभिन्न प्रकारक स्रोत-सामग्रीक उपयोग करबाक अपन पद्धति सँ ओ स्वयं हटि गेलाह। परिणाम ई भेल जे ओ मोगल-सिख सम्बन्धक वास्तविक स्वरूप एवं सिख लोकनि द्वारा धार्मिक अत्याचारक विरोधक दूरगामी महत्त्वक सम्यक् आकलन करबा मे असफल भऽ गेलाह।

राजपूत लोकनि द्वारा औरंगज़ेबक विरोधक नाटकीय कथा 'औरंगज़ेबक इतिहास' क तेसर खण्डक दू अध्याय मे कहल गेल अछि आ पाँचम खण्डक एक अध्याय मे आगाँ जारी राखल गेल अछि। मारबाड़क जसवन्त सिंह मोगल दरबारक प्रमुख हिन्दू दरबारी छलाह; हुनक मृत्युक लाभ उठा कऽ औरंगज़ेब हुनके राज्य कें अपन साम्राज्य मे मिला लेलक यद्यपि हुनक दू विधवा रानी दू पुत्र कें जन्म देलथिन जाहि मे सँ एक गोट जीवित रहल। 'कृषिक दृष्टिएँ दरिद्र' मारबाड़ कें अपन साम्राज्यक अंग बना लेब औरंगज़ेब एहि कारणें वांछनीय बुझैत छल जे वीर राठौर सभक एहि प्रदेश पर शाही शासन स्थापित भऽ गेला उत्तर कोनो सम्भावित योग्य प्रधान कें ओकर धार्मिक अत्याचारक विरुद्ध विद्रोह करबाक कोनो अवसरे नहि रहय। ओकर धार्मिक जोश ओकरा एहन डेग उठयबाक हेतु प्रेरित कयलक जेहन ओकर कोनो पूर्ववर्त्ती शासक अपन कोनो दरबारीक रियासतिक सम्बन्ध मे नहि उठओने छल। फलतः तीस-वर्षीय युद्ध प्रारम्भ भेल जकर अन्त औरंगज़ेबक मृत्युक बादे भऽ सकल।

अनेको राजनीतिक आ व्यक्तिगत मोड़ सँ भरल एहि दीर्घकालीन संघर्षक गुत्थी सभ कें जदुनाथ विरल साहित्यिक पटुता सँ सोझरबैत छथि। एहि क्रम मे अनेक विशिष्ट व्यक्ति सभ अभरैत छथि। मेवाड़क महाराणा राजसिंह मन्दिर-ध्वंस आ ज़िज़िया कराधान पर रोष सँ भरि शाही फौज सँ एहन हठपूर्ण युद्ध कयलनि जे तत्कालीन लोक कें एक शताब्दी पूर्व मोगलक विरुद्ध राणा प्रतापक संग्रामक स्मरण करा देल। राठौर राज्यक विश्वासी सेवक दुर्गादास जसवन्त सिंहक पुत्र अजीत सिंह कें जे शिशु छल, बादशाहक कारागार नूरगढ़क किला सँ छोड़ा कऽ लऽ अनलनि आ पचीस वर्षक अथक परिश्रम एवं चतुर योजनाक पश्चात् ओकरा अपना पिताक गद्दी पर बैसा देलथिन। ई मध्ययुगीन दुस्साहसी सामन्तोचित स्वामिभक्ति, साहस आ आत्मबलिदानक असाधारण गाथा थिक जकर तुलना मध्ययुगक दुस्साहसी अँग्रेज सामन्ते सँ कयल जा सकैछ। मुदा अजीत सिंह एहन सेवाक पात्र नहि छलाह। "ओ चंचल आ उद्धत प्रकृतिक छलाह, हितकर मंत्रणा सँ अधीर भऽ उठैत छलाह आ दुर्गादासक सर्वथा उचित प्रभाव सँ ईर्ष्या करैत छलाह।" ओकर मूर्खतेक कारण मोगलक हाथ सँ मारबाड़क पुनः मुक्ति मे विलम्ब भेल। औरंगज़ेबक चारिम आ प्रिय पुत्र अकबर कें राजपूत-युद्ध मे सेनाक कमान सुपुर्द कयल गेलैक। राजपूत सभ ओकरा तेना फुसिया लेलक जे ओ अपना कें

बादशाह घोषित कऽ देल। औरंगज़ेब बड़े चतुरता सँ विद्रोही शाहज़ादा आ राजपूतलोकनिक बीच विभेद उत्पन्न करा देलक। राजपूत सभ जखन ओकर संग छोड़ि देल तऽ ओ अभागल गद्दीक दावेदार पड़ाकऽ दक्कन चल गेल आ मराठा राजदरबार मे आश्रय तकलक। वीर दुर्गादास देखलनि जे औरंगज़ेबक छलक द्वारें हुनका दुर्भग्यक सामना करऽ पड़ि रहल छनि तऽ ओ पाँच सय राठौर अश्वारोहीक संरक्षण मे शाहज़ादा कें कोंकण पहुँचा देल। महाराज राजसिंहक मृत्यु भऽ गेलनि आ हुनक कमजोर उत्तराधिकारी जयसिंह मोगल शासक सँ सन्धि कऽ लेलक, यद्यपि राठौर सभ आ ओकर सभक सहयोगी हाड़ा लोकनि संग-संग संघर्ष करितहि रहल। औरंगज़ेब कें ई भय भेलैक जे 'पादशाही'क दावेदार अकबर जँ शिवाजीक उत्तराधिकारी शम्भूजी सँ मिलि जायत तऽ शाही गद्दीक हेतु गम्भीर खतरा उत्पन्न भऽ जयत। तें मेवाड़ सँ सन्धि कऽ ओ दक्कन दिस प्रस्थान कयलक। मारबाड़क छिट-फुट युद्ध तावत धरि चलैत रहल जावत दू वर्षक बाद औरंगज़ेबक देहान्तक उपरान्त ओकर उत्तराधिकारी बहादुरशाह अजीत सिंह कें मारबाड़क राजाक रूप मे स्वीकार नहि कऽ लेलक। अकबर शम्भूजीक सहायता पयबा मे असफल रहि समुद्र-मार्ग सँ फारस देश विदा भऽ गेल आ ओतहि कतोक वर्ष पछाति मुइल।

जदुनाथ औरंगज़ेबक राजपूत-नीतिक अनर्थकारी परिणाम कें रेखांकित करैत छथि। "ओ अपन साम्राज्यक सम्पूर्ण साधन कें दू गोट छोट-छोट राज्य, मारबाड़ आ मेवाड़, केर विरुद्ध केन्द्रित कयलक, किन्तु कोनो निर्णायक सफलता नहि प्राप्त कऽ सकल।" ओ अफगान क विरुद्ध सीमान्त प्रान्तक युद्ध मे मोगल सेनाक सर्वश्रेष्ठ एवं नितान्त अनन्य स्वामिभक्त सैनिक राठौर आ सिसोदियाक उपयोग नहि कऽ सकल। राजपुताना मे अराजक तत्त्वसभक जे लहरि उठल से "अन्त मे बढ़ि कऽ मालवा धरि पसरि गेल आ एहि द्वारें मालवा होइत दक्कन जाइबला अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मोगल मार्ग संकटग्रस्त भऽ गेल।" इएह छल ओ 'उपलब्धि' जे ओकर राजनीतिक अविवेक, धार्मिक अत्याचार एवं राष्ट्राभिमानी राज्य सभक दमनक निष्फल अभियान सँ ओकरा प्राप्त भेलैक !

औरंगजेबक हेतु ओकर प्रिय पुत्र अकबरक विद्रोह शाहजहाँक विरुद्ध ओकर अपन विद्रोहक सर्वथा उचित 'दैवी दण्ड विधान' छल। अकबर ओकरा प्रति कटु व्यंग्य सँ भरल एक पत्र लिखलक जे आगरा किला मे कारावास भोगैत शाहजहाँ कें सम्बोधित ओकर अपन पत्र सँ अद्‌भुत साम्य रखैत छल। भाग्यक केहन विडम्बना जे 'ईश्वरक एक सभ सँ नैष्ठिक सेवक'क विषय मे ओकर बागी पुत्रे घोषित कयलक जे ओ, औरंगज़ेब, इस्लामी कानूनक उल्लंघन कऽ गद्दी कें जप्त कऽ नेने छल! औरंगज़ेबक आन पुत्र सभ ओकरा प्रति एहि सँ कोनो वेशी वफादार नहि छल। मुहम्मद सुलतान ग्वालियरक शाही कारागार मे बारह वर्ष धरि बन्दी बनाकऽ राखल गेल किएक तऽ उत्तराधिकारी बनबाक युद्ध मे ओ शुजाकें संग देने छल। शाह आलम गोलकुंडाक सुलतानक संग गुप्त सम्बन्ध रखबाक अभियोग

मे आठ वर्ष सँ अधिक काल कैद मे राखल गेल। कमबख्श किछु मास कैद मे राखल गेल छल। केवल आज़म बन्दीगृह सँ अपना कें मुक्त राखि सकल। शाही दरबाक अमीर सभक उत्थान आ पतनक समानान्तरे अपन पिताक पक्ष मे शाहज़ादालोकनिक उदय आ अस्तक काण्ड भेल।

'औरंगज़ेबक इतिहास'क चारिम खण्ड मे औरंगज़ेबक राजनीतिक आ फौजी क्रियाकलापक क्षेत्र बदलि कऽ दक्षिण भारत भऽ जाइत अछि। अपन शासनक उत्तरार्ध ओ ओतहि बितओलक; ओ उत्तर भारत कहियो नहि घुरल। एकमात्र अकबरक पड़ा कऽ मराठा दरबारक आश्रय लेबाक द्वारें औरंगजेब नर्मदा कें पार करबाक हेतु विवश भेल। एहि सँ ओ मराठा समुदायक विरुद्ध अन्तहीन युद्ध-प्रक्रिया मे फँसि गेल जकरा जदुनाथ 'दक्कनक व्रण' केर संज्ञा दैत छथि।

दक्षिण भारतक मुसल्मानी सल्तनत सभ – अहमदनगर, बीजापुर गोलकुंडा – कें जितबाक प्रयास मे मोगल शासन कें पूरा एक शताब्दी लागि गेलैक। "प्रकृतिक अनिवार्य, द्रुत एवं मूक प्रक्रिया मे स्वयमेव एहि सल्तनत सभक मोगल साम्राज्य मे विलय भऽ जइतइक जँ दक्षिणक राजनीति मे मराठा जातिक नव तत्त्वक आगमन नहि होइत"। मोगल बादशाह, दक्षिणी सल्तनत सभ आ मराठा जातिक बीच बदलैत सम्बन्धक जे ओझरायल सूत्र सभ अछि तकरा जदुनाथ अद्वितीय स्पष्टता आ ऐतिहासिक विचक्षणताक सँग पृथक् करैत छथि। प्रत्येक पक्षक शक्ति आ ओकर दुर्बलता दुहू कें उचित महत्त्व देल जाइत अछि। एक विवरणक बाद दोसर विवरण प्रवहमान धार जकाँ अबैत अछि, मुदा विवरणक जंगल मे मुख्य गतिविधि झँपा नहि जाइत अछि।

शिवाजीक नेतृत्व मे मराठा शक्तिक उदयक इतिहास जदुनाथ चारि अध्याय मे प्रस्तुत करैत छथि। ओ एहि मराठा नायकक विशेष प्रशंसक छलाह। ओ कहैत छथि, ".....हुनक जीवनक अक्षय उपलब्धि छल मराठा जाति कें एक राष्ट्रक रूप मे संगठित करब। अपन प्रजा मे ओ जाहि प्रेरणाक संचार कयलनि से आगामी पीढ़ी सभक प्रति हुनक अमूल्य देन छल।...कोनो दोसर हिन्दू आधुनिक काल मे एहि कोटिक क्षमता नहि देखाओल।" पुनः,

> "ओ अपन उदाहरण सँ ई सिद्ध कऽ देल जे हिन्दू जाति एक राष्ट्रक निर्माण कऽ सकैत अछि, शत्रु कें धूरा चटा सकैत अछि; अपन प्रतिरक्षाक स्वयं संचालन कऽ सकैत अछि; ओ साहित्य एवं कला, वाणिज्य आ व्यवसायक संरक्षण आ अभिवर्धन कऽ सकैत अछि; जलसेना आ सामुद्रिक व्यापारक लेल जहाजी बेड़ा राखि सकैत अछि आ विदेशी सभक विरुद्ध समान स्तर पर नौसैनिक युद्धक संचालन कऽ सकैत अछि। ओ आधुनिक हिन्दू जाति कें अपन विकासक पूर्ण उच्चता धरि पहुँचबाक शिक्षा देल।"

शिवाजी हिन्दू-संस्कृति मे सम्यक् आचरण एवं उदारताक चिर-नवीन स्रोत प्राप्त कयल। हिन्दुत्व हुनक मानस कें एकदम अभिभूत नहि कयलकनि, ने धर्मान्धे बनओलकनि। हुनक कार्यकालक विशेषता छल सभ धर्म (जहिना इस्लाम तहिना हिन्दू) केर पवित्र व्यक्ति (सन्त-महात्मा) केर प्रति निष्पक्ष समान सम्मान आ श्रद्धा भाव एवं सभ मत-विश्वासक प्रति सहिष्णुता। ई उदारता औरंगजेबक बुद्धिक परे छल।

स्वतन्त्रता-प्राप्तिक पूर्व अपन लेखन मे जदुनाथ ओहि शिक्षा पर जोर देल जे भारत शिवाजीक चरित्र आ उपलब्धि सँ ग्रहण कऽ सकैत अछि :

> "बादशाह जहाँगीर प्रयागक अक्षयवट कें जड़ि धरि काटि देल आ ओकर खूँट पर एक गांट लौह कड़ाह कें गर्म कऽ ठोकवा देल। तखन ओ बड़े आत्मश्लाघा सँ एलान कयलक जे हम एहि वृक्षक विनाश कऽ देल। मुदा देखू, एक वर्षक अभ्यन्तर ओ वृक्ष पुनः पनगल आ अपन वृद्धिक मार्गक भारी अवरोध कें हटा कऽ कात कऽ देलक।" शिवाजी ई देखाओल जे हिन्दुत्वक वृक्ष मृत नहि भेल अछि आ ओ अनेकहु शताब्दीक राजनीतिक दासताक बोझक निचाँ सँ पुनः आविभूर्त भऽ सकैत अछि.....ओ नब डारि-पात उत्पन्न कऽ सकैत अछि, ओ अपन माथ व्योम-शीर्ष धरि उठा सकैत अछि।"

'औरंगज़ेबक इतिहास'क चारिम खण्ड मे शिवाजीक अपेक्षाकृत संक्षिप्त इतिवृत्त सँ सन्तुष्ट नहि भेलाह तें जदुनाथ एक गोट बृहत् ग्रन्थ "शिवाजी आ हुनक काल" केर प्रणयन कयल। एहि मे ओ शिवाजीक राजनीति एव महान् सैनिक संगठनक पहिने सँ बहुतो अधिक विस्तृत विवरण देलिन। एतबे नहि, ओ "शासन संस्था एवं नीति" पर एक गोट नबे अध्याय सेहो एहि मे जोड़लनि आ पुनः एक आन अध्याय मे "एक स्थायी राज्य क निर्माण करबा मे शिवाजीक असफलता"क "कारण" पर प्रकाश देलनि अछि। हुनक विश्लेषण ज्ञानवर्धक अछि :

> "शिवाजी आ बाजीराव प्रथमक विजयक परिणामस्वरूप भेल राष्ट्रीय गौरव आ समृद्धि हिन्दुत्वक परम्परानिष्ठाक पक्ष मे प्रतिक्रिया उत्पन्न कयलक; ओ वर्ण भेद आ दैनिक धार्मिक अनुष्ठानक विधान-शुद्धता पर बल देलक जे निर्धन आ राजनीतिक रूपें दलित मराठा जातिक सरलता आ पारस्परिक समानताक प्रतिकूल छल। एतावता हुनक राजनीतिक सफलता अपने सफलताक प्रमुख आधार कें कमजोर कऽ देल.....जतेक मात्रा मे शिवाजी हिन्दू 'स्वराज'क आदर्श हिन्दू परम्पराक निष्ठा पर आधारित छल ताही मात्रा मे ओ अपना भीतर अपन विनाशक बीज नेने छल।"

हिन्दुत्वक 'अक्षयवट' राष्ट्रीय अखण्डताक आधारक काज नहि कऽ सकैत छल जँ ओकर आन्तरिक ऊर्जा कें ओकर अपने अन्तरक कीड़ा सभ – जातिवादक अभिशाप – खा जाइ। मराठा जाति जैं एक उदार समाजक विकास करबा मे असफल रहि गेल, तें ओ अपन राजनीतिक विनाश कें आमन्त्रित कयलक।

दुर्बलताक एहि आधारभूत कारणक अतिरिक्त जदुनाथ आन अनेक तत्त्व पर जोर दैत छथि। मराठा समाजक नेता लोकनि घमंडी, ईर्ष्यालु, राजनीतिक दूरदर्शिता तथा व्यवहारिक यथार्थ सँ रहित अन्ध-महत्वाकांक्षी लोक छल। सामान्य जनता मनुक्खक रूप मे भेड़ी-बकरी सदृश छल : ओकर क्षितिज कठिन दैनिक श्रमक कठिन परिस्थिति सँ सीमित छलैक आ ओकर एकमात्र सान्त्वना छल सरल भावनात्मक विश्वास। देसर गप्प ई जे मराठा शासक लोकनि राज्यक आर्थिक विकास पर ध्यान नहि देल। महाराष्ट्रक सीमित संसाधन "शिवाजीक विशाल सेनाक निर्वाह नहि कऽ सकैत छल आ ने ओ पेशवा सभक विश्वराज्य आ साम्राज्यक अभिलाषा कें पूरा कऽ सकैत छल।" तें आपूर्त्तिक सामान्यो साधन जुटयवा लेल मराठा शासक सभ कें युद्ध ठानऽ पड़ैत छलैक। ओकरा सभक सैनिक अभियान आक्रान्त प्रदेशक उद्योग-व्यवसाय आ धने कें नष्ट कऽ दैत छल आ "अन्ततः युद्धक उद्देश्ये कें विफल कऽ दैत छल।" आर्थिक दृष्टिएँ "मराठा राज्य कें कोनो स्थिर आधार वा अपना भीतर विकासक कोनो सामान्य साधन नहि छलैक।" अन्तिम बात ई जे पछाति कालक मराठा शासक सभ "धूर्त्तता आ षड्यन्त्र पर अत्यधिक निर्भर छल। कोनो सन्धिक दायित्वक निर्वाह करबा लय ओकरा सभ पर सर्वदा विश्वास नहि कयल जा सकैत छल।" "कर्मठ व्यक्ति, योद्धा राजनेता सभ दिन मात्र षड्यन्त्र कैनिहार मैकियावेली सन राजनीतिज्ञा पर विजय प्राप्त करैत आयल अछि। अन्ततोगत्वा विश्वासघात कखनो सफल नहि होइत छैक।"

जदुनाथ मात्र घटनाक्रमक प्रामाणिक एवं इमानदार प्रस्तोता नहि छलाह जे कोनो अर्थपूर्ण तथ्य कें नहि छोड़ैत अछि वा अप्रासंगिक विषय नहि अनैत अछि। ओ ऐतिहासिक घटनाक्रमक विकास केर विश्लेषण करैत छलाह आ कारण एवं परिणामक श्रृंखला कें बहार कऽ दूर दृष्टिएँ ओकर तात्पर्यक विवेचना सेहो करैत छलाह। ओ शिवाजीक उपलब्धिक हेतु हुनका पूर्ण श्रेय देल, मुदा हुनका मृत्यु सँगे अपन कथ्य समाप्त करक बदला (जेना कोनो सामान्य इतिहासकार सभ करितथि), ओ स्थायी एवं शक्तिशाली मराठा राज्यक निर्माण करबा मे ओहि महान् नेताक विफलताक पाछाँ जे सामाजिक-आर्थिक कारण छल तकरो समीक्षा कयल। धर्म जहिना शक्तिक स्रोत भऽ सकैत छल तहिना कमजोरीक सेहो। ओहि सामाजिक आ आर्थिक कमज़ोरी सभ कें ओ बुझाआल जे सभटा चुनौती सभक सामना करबा योग्य ठोस मराठा राष्ट्र कें विकसित नहि होमऽ देलक। ओ जँ उदार प्रशंसक छलाह तऽ कठोर आलोचक सेहो। ओ घटनाक्रम आ लोक सभ कें ओकर पृष्ठभूमि

सँ फराक कऽ कऽ अपन विचारक विषय नहि बना सकैत छलाह आ हुनक मूल्यांकन पूर्व निश्चित धारणा सभ सँ प्रभावित नहि होइत छलनि।

यदि 'औरंगज़ेबक इतिहास'क चारिम खण्ड पर पुनः दृष्टिपात करी तऽ देखबा मे अबैत अछि जे जदुनाथ दूटा समस्या कें प्रस्तुत करैत छथि : शिवाजीक निधनक पश्चात् मराठा शक्ति आ बीजापुर ओ गोलकुंडाक पतनोन्मुख सल्तनत। दुहू सल्तनत कें मोगल साम्राज्य मे मिला लेल गेलैक। जाहि बादशाह कें अपना भाय सभ आ अपन वृद्ध पिताक प्रति करुणा नहि भेलैक ओकरा सँ एहि दूनू खसल सुल्तानक प्रति उदारताक व्यवहारक अपेक्षा नहि कयल जा सकैत छल। ओकरा दूनू कें दौलताबादक सरकारी कारागार मे बन्न कऽ देल गेलैक।

शिवाजीक पुत्र सभ तरहें अयोग्य उत्तराधिकारी भेल। औरंगज़ेब ओकरा "दोजख केर काफिरक दोजख औलाद"क संज्ञा देल। ओ मराठा राजाक दुर्बलता आ मूर्खताक पूरा लाभ उठओलक। ओहि 'काफिर' कें पकड़ि लेल गेल आ "माथ पर विदूषकक नमहर टोपी पहिरा कऽ आ गरा मे घन्टी बान्हि कऽ भाँड़ जकाँ" शाही शिविर मे चारू कात घुमाओल गेल। अन्त मे एक पक्ष धरि यन्त्रणा आ अपमान भोगौलाक बाद ओकर अंग-प्रत्यंग कें एकाएकी काटि ओकर माँसु के कुकुर सभंक बीच फेकि देल गेलैक। "मुसलमान सभक हत्या, गिरफ्तारी आ अपमान करबाक आ इस्लामी नगर सभ कें लुटबाक कारणें ओकरा एहन दण्ड देल गेलैक।" किछु मासक बाद मराठा राजपरिवारक सभ सदस्य, स्त्री आ पुरुष सभ कें पकड़ि लेल गेल; मात्र शिवाजीक द्वितीय पुत्र राजारामटा पड़ा सकल। सभ बन्दी कें शाही खेमा मे राखल गेल, मुदा ओकरा सभक सँग नीक व्यवहार कयल गेलैक।

"१६८६ क अन्त होइत-होइत औरंगज़ेब उत्तर आ दक्षिण भारतक समान रूपें अप्रतिम सर्वोच्च स्वामी बनि गेल।" एतय आबि कऽ 'औरंगज़ेबक इतिहास'क चारिम खण्ड समाप्त होइत अछि। जदुनाथक अन्तिम परिच्छेद विजय सँ पराभवक दिस संक्रमणक हेतु पाठक कें उद्यत करैत अछि :

> एहन बूझि पड़ल जे ओरंगज़ेब सभ किछु प्राप्त कऽ लेलक, मुदा वास्तव मे ओ सभ किछु गमा देल। ई अन्त केर प्रारम्भ छल। ओकर जीवनक सभसँ दुःखद आ निराशाजनक अध्याय आब फुजल.....ओकर शत्रु सभ सभ दिस सँ उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। ओकरा सभ कें ओ हरा तऽ सकैत छल मुदा सदा-सर्वदा लेल दबा नहि सकैत छल.....दक्षिणक मराठा सभक विरुद्ध ओकर अन्तहीन युद्ध ओकरा खजाना कें सठा देल। नेपोलियन प्रथम कहैत छल – "स्पेन-युद्धक व्रण हमरा विनष्ट कऽ देलक।" दक्कनक व्रण औरंगज़ेब कें ध्वस्त कऽ देलकैक।

इऐह "दक्कनक व्रण" 'औरंगज़ेबक इतिहास'क पाँचम खण्डक केन्द्रीय विषय थिक। ई अठारह वर्षक अवधि (१६८६-१७०७ ई.) क इतिवृत्त प्रस्तुत करैत अछि

जे औरंगज़ेबक मृत्यु सँगें समाप्त होइत अछि आ एहि मे ओकर सम्पूर्ण त्रासदी केन्द्रीभूत अछि।" । जदुनाथ औरंगज़ेबक जीवन कें "एक गोट दीर्घकालीन त्रासदी"क रूप मे देखैत छथि– "अदृश्य किन्तु दुर्दमनीय नियति सँ जूझैत एक व्यक्तिक कथा, कोना कऽ मनुक्खक सर्वाधिक सशक्त प्रयास युग शक्तिक आगाँ विफल भऽ गेल तकर एक गोट आख्यान।" "पचास वर्षक कठोर श्रम सँ भरल शासन"क अन्त "विराट विफलता" मे भेल। एहि त्रासदी कें जदुनाथ सन्तुलित शबदावली मे खोलि कऽ रखैत छथि :

> "नहुएँ-नहुएँ मुदा निर्मम गतिएँ ओकर सभटा प्रयास कें विफल करैत ओकर नियति अपन काज करैत अछि यद्यपि ओकर असफलताक परोक्ष कारण ओकर अपन चरित्र आ विगत कर्म छलैक। शनैः शनैः मुदा अधिकाधिक स्पष्टता सँ ओकर करुण कथावस्तु अपना कें फोलैत चल जाइत अछि यावत् औरंगज़ेब कें ओकरा विरुद्ध सन्नद्ध शक्ति सभक यथार्थ स्वरूप आ संपूर्ण गतिविधिक प्रवाह-दिशा बुझबा मे नहि आबि जाइछ। मुदा तइयो ओ अपन प्रयास नहि छोड़ैत अछि; संघर्षक व्यर्थता ओकरा आ ओकर दरबार कें विवश कऽ दैत छैक, तथापि अपन प्रयास मे ओ पूर्ववते कठोर बनल रहैत अछि.....जखन मृत्यु कालक अन्तिम संकेत ओकरा भेटैत छैक तखने ओ अहमदनगर मे जा कऽ शरण लैत अछि। तखन आ तखनेटा ओ शोक भरल मोनें अहनगर कें अपन जीवन-यात्रक अन्तिम पड़ाव, 'खतमुस-सफर'क रूप मे चिन्हैत अछि।"

एहि तरहक स्थल सभ जदुनाथक कृति मे यत्र-तत्र अबैत अछि आ पाठकक मानस कें इतिहासक हाड़ सदृश शुष्क विवरण सँ ऊपर उठाकऽ प्रेरणापूर्ण चिन्तनक स्तर पर लऽ जाइत अछि। साहित्यिक लालित्य आ दर्शनिक ज्ञानक आलोक सँ ऐतिहासिक वर्णन प्रकाशित भऽ जाइत अछि; पाठक ऐतिहासिक गतिविधि कें आओर नीक जकाँ बुझऽ लगैत अछि। 'औरंगज़ेबक इतिहास'क समीक्षा करैत हेनरी बेवरिज कहैत छथि जे जदुनाथ कें "बंगाली गिब्बन" मानल जा सकैत अछि। हुनक कहब कोनो गलत नहि अछि।

एहि दुःखान्त नाटकक अन्तिम अंक 'अकथनीय विषाद'क काल छल। जेना-जेना बादशाहक दुब्बर शरीर कब्र दिस बढ़ल जाइत छल, ओ अपना कें अपन पूर्व परिचित संसार सँ कटल जकाँ अनुभव करैत छल। जदुनाथक कहब छनि, "एकाएकी पुरना अमीर सभ एहि संसार सँ विदा भऽ चुकल छल। एक प्रकारक अतिप्राकृतिक भयक अनुभव करैत लोक सभ एहन व्यक्तिक सोझाँ सँ नुकाय लागल जे सामान्य मनुक्खक दुःख-सुख, दुर्बलता आ करुणा सँ परे भऽ गेल छल, जकरा मे भरिसके कोनो मानवीय तत्त्व रहि गेल छलैक, जे संसार मे रहितो संसारक लोक सन नहि

प्रतीत होइत छल। पारिवारिक वियोग-व्यथा सभ ओकर मुनाइत आँखिक चारू कात सघन भऽ उठलैक।"

'औरंगज़ेबक इतिहास' क पाँचम खण्डक उद्देश्य ई देखायब थिक जे कोना कऽ "शनैः शनैः मुदा निश्चित रूपें साम्राज्यक नैतिक पतन वस्तुतः शासन आ समाज-व्यवस्थाक विघटनक रूप लऽ लेलक।" मराठा सभ कें दमन करबाक सभटा प्रयास कें ओ सभ पश्चिमी दक्कन मे, मद्रास मे, कर्नाटक मे, कोंकण मे आ महाराष्ट्र मे, सर्वत्र विफल कऽ देल। शम्भूजीक देहावसानक बाद मराठालोकनि शिवाजीक देसर पुत्र राजाराम कें अपन राजा मानि नेने छल। ओकर मृत्युक पश्चात् ओकर पत्नी तारा बाई शासन-सूत्र अपना हाथ मे लेलक, "ओकर प्रशासनिक प्रतिभा एवं चरित्रक दृढ़ता ओहि भयंकर संकट काल मे राष्ट्र कें बचा लेल..... ।" मुखिया सभक बीच गम्भीर विभेदक कारणें मराठा सभ कमज़ोर भऽ गेल आ ओहि महक किछु कें मोगल सभ अपना दिस मिला लेलक। मुदा तें प्रतिरोध मे शिथिलता नहि आयल। यद्यपि मोगल सेना किछु पैघ किला सभ पर कब्जा कऽ लेलक, तथापि मराठा "अपन सम्पूर्ण राज्य मे पूरा शक्तिशाली भऽ गेल।" (जेना कि तत्कालीन हिन्दू इतिहासकार लोकनि लिखैत छथि) औरंगज़ेब कें बुझऽ मे आबि गेलैक जे 'दक्कनक व्रण' असाध्य अछि।

एहि अभ्यन्तर राजस्थान मे युद्ध चलि रहल छल आ विभिन्न प्रकारक व्यापक गड़बड़ी उत्तर भारतक सूबा सभ पर शाही नियन्त्रण कें कमज़ोर कऽ रहल छल। ई संक्रमण "दक्कनक व्रण" सँ बहरायल। शासनक उत्तरार्द्ध (१६८१-१७०७ ई.) मे अपने ओरंगज़ेब, ओकर बेटा सभ आ उच्चपदस्थ सिपाहसालार सभ दक्षिण मे एक ठाम जुटि गेल छल। जदुनाथ कहैत छथि, "दक्कन-युद्ध द्वारा जे रिक्तता सतत बनल रहैत छल तकरा भरबा लेल उत्तर भारत सँ प्रतिवर्ष अनवरत सार्वजनिक धन एवं युवा सैनिक लेल जाइत रहत.....नर्मदाक उत्तर जे पुरना प्रान्त सभ छल से अपर्याप्त सैनिकक संग द्वितीय श्रेणीक अमीर सभक हाथ मे छोड़ि देल गेल।" सामुद्रिक क्षेत्रक कमज़ोरी औरंगज़ेब कें भारत मे अँग्रेज व्यपारी लोकनि कें प्रचुर सुविधा देबा पर विवश कऽ देलक।"

जखन मृत्युक छाया औरंगज़ेबक मानस कें घेरि लेलकैक तखन ओ अपन दू टा अपराध स्वीकार कयलक। अपन पुत्र आज़मक नामें अन्तिम पत्र मे ओ लिखलक, "हम राज्य मे कोनो (असल) शासन नहि कयल, ने कृषक वर्गक पोषणे कयल।" विलम्ब सँ कयल गेल एहि पश्चाताप सँ कतोक गुना अधिक महत्त्वपूर्ण ओकर अन्तिम वसीयतनामा छल जकरा विषय मे कहल जाइत छैक जे एकरा अपना हाथें लिखि कऽ ओ अपन मृत्यु-शय्या पर गेडुआ तर मे छोड़ने छल। ओकरा बुझबा मे आबि गेलैक जे जाहि विशाल साम्राज्य कें ओ बलपूर्वक अपना अधिकार मे कऽ ओकर विस्तार कयने छल ओकर मुत्युक उपरान्त खण्ड-खण्ड

भऽ कऽ रहत किएक तऽ ओकर बेटा सभक बीच उत्तराधिकार लेल युद्ध अवश्यम्भावी छल। तें ओ साम्राज्यक विभाजन करबाक राय देल। ओकरा आशा छलैक जे ई महान् विरासत एहि तरहें एक तैमूरी झंडाक निचाँ विभिन्न खण्डक रूप मे अन्ततः बाँचल रहत। महान् मोगल शासक सभक महत्तम उपलब्धि छल भारतक राजनीतिक एकीकरण। ओहि श्रृंखलाक अन्तिम व्यक्ति अपन कठोर परिश्रमक जीवनक अन्त मे एहन विलक्षण पारम्परिक निधिक आंशिक परिसमापन पर विचार करबा लेल विवश भऽ गेल।

पाँचम खण्डक अन्तिम दू अध्याय मे जदुनाथ औरंगज़ेबकालीन भारत पर अपन चिन्तन प्रस्तुत करैत छथि। मोगल साम्राज्यक शीघ्र पतनक कारण सभक विश्लेषण करबाक क्रम मे "शताब्दीक एक चौथाई धरि चलऽबला दक्कन-युद्ध मे औरंगज़ेब द्वारा कयल गेल धनक अपव्यय कें ओ सभ सँ अधिक प्रमुखता दैत छथि। ओ कहैत छथि, "भूमि कें जोतनिहार राष्ट्रीय धनक एकमात्र स्रोत" शिल्पी सभ सेहो ओकरे पर निर्भर रहैत छथि। जे किछु किसानक उत्पादन-क्षमता कें क्षीण करैत अछि वा ओकर धनक असुरक्षा उत्पन्न कऽ ओकर संचय-शक्ति कें नष्ट करैत अछि से राष्ट्रीय पूँजीक वृद्धि कें रोकि देशक आर्थिक स्थायित्व कें कमज़ोर बनबैत अछि। जदुनाथक गृध्रदृष्टि कृषिक दुर्दशाक किछु एहन कारण सभ कें चीन्हि लैत अछि जाहि पर पेशेवर आर्थिक इतिहासकारलोकनिक दृष्टि नहि जाइत छनि। उदाहरणक लेल हम सभ आइ-काल्हि वन-संरक्षणक विषय मे बहुत रास गप्प करैत छी। जदुनाथ १६२४ ई. मे औरंगज़ेबक युद्ध सँ दक्षिण मे दीर्घ काल धरि भेल वन विनाशक 'अनिष्ट' केर चर्च कयलनि। वन-विनाश सँ खेती-बारी पर "सर्वाधिक हानिकारक प्रभाव" पड़ल। "ओ अपना पाछाँ एहि प्रान्त सभक मैदान कें वृक्षविहीन आ शस्यशून्य बना कऽ छोड़लक जकर स्थान मनुक्ख आ जानवरक कंकाल लेलक। युद्ध, अव्यवस्था आ सरकारी असूली वाणिज्य-व्यवसाय कें चौपट कऽ देल। जतऽ युद्धक विभीषिका नहियो छल (जेना बंगाल मे) ओतहु केन्द्रीय सरकारक कमजोरी प्रान्तीय शासक सभ कें केन्द्रक निषेधक अवज्ञा करबाक साहस प्रदान कयलक; ओ सभ व्यक्तिगत लाभक हेतु व्यापार करऽ लागल, सँगहि शिल्पी आ वणिक् वर्ग सँ अवैध रीतिएँ धन असूल करऽ लागल।

हालक किछु लेखक सभ औरंगज़ेबक शासनक अन्तिम वर्ष मे मोगल साम्राज्यक पतनक प्रमुख कारणक रूप मे जागीरदारी व्यवस्थाक संकट पर ज़ोर दैत छथि। जदुनाथ हिनकालोकनि सँ पहिनहि ई विषय उठओलनि। दक्कन-युद्धक कारणें ई आवश्यक छलैक जे सेवा आ सिपहसालार (मनसबदार) सभक वृद्धि कयल जाय जे जागीरक अनुदानक माध्यमें पारिश्रमिक पबैत छल। जदुनाथ कहैत छथि, "सेनाक एहि नमहर भेल सूची मे सम्मिलित सभ अधिकारी कें देय राशिक व्यवस्था करबा लय जतेक कुल जागीर चाही तकर पूर्ति हेतु साम्राज्यक समस्त भूमि अपर्याप्त

सिद्ध भेल।" जे मनसबदार जागीर नहि पाबि सकैत छल ओ असन्तुष्ट रहि जाइत छल आ अपन सैनिक कर्त्तव्यक सन्तोषजनक रूपें पालन नहि कऽ पबैत छल। एहि तरहें सेना जे साम्राज्यक सभ सँ प्रबल अंग छल, कमज़ोर भऽ गेल।

सेनाक कमज़ोरीक प्रभुख आर्थिक कारण सूचित करबाक सँगे जदुनाथ आन महत्त्वपूर्ण कारण सभक चर्चा करैत छथि जकरा पर आधुनिक लेखक सामान्यतः ध्यान नहि दैत छथि। फौजक घोड़ा सभक भयंकर बरबादी भेल। सैनिक सभ निरर्थक अन्तहीन युद्ध सँ तंग आबि गेल। औरंगज़ेब अपन बेटा मोअज़्ज़म कें लिखलक, "जंगल आ रेगिस्तान होइत हमर प्रयाणक कारणें हमर अधिकारी सभ हमर मृत्युक कामना करैत अछि।"

साम्राज्यक शासक-दल मोगल अभिजात वर्गक नैतिक अधःपतन व्यापक रूप लऽ लेने छल। जदुनाथक कथन छनि :

> जेना-जेना सत्रहम शताब्दीक अन्त होइत गेल, अकबर आ शाहजहाँक पौरुषपूर्ण परम्परा सँ सम्बन्धित अभिजात-वर्ग जे उच्चतर स्वतन्त्र चेतनाक गुण सभ सँ समन्वित छल, क्रमशः शेष होइत चल गेल आ दरबार एवं शिविर दुहू ठाम तकर स्थान एहन अमीर-वर्ग लऽ लेलक जे औरंगज़ेबक प्रति शंकालु, आत्म-निर्णय आ उत्तरदायित्व-निर्वाह मे भयग्रस्त एवं चाटुकारित द्वारा अपन अभ्युदय करबा लय प्रयन्तशील रहैत छल।

'औरंगज़ेब आ भारतीय राष्ट्रीयता' शीर्षकबला अन्तिम अध्याय मे जदुनाथ औरंगज़ेबक चरित्रक विश्लेषण करैत छथि। ओ व्यक्तिगत शौर्य, वीरता, पांडित्य, नैतिक शुद्धता, सरल जीवन आ प्रशासन मे उद्यमशीलताक विशिष्ट गुण सभ सँ सम्पन्न व्यक्ति छल। ओकर चिरकालिक पाप छलैक अत्यधिक केन्द्रीकरण जकर प्रशासन पर विनाशकारी प्रभाव पड़ल।" एतय हमरालोकनि कें संतुलिते समीक्षा भेटैत अछि, "यद्यपि ई बात सत्य नहि जे एसगर ओएह मोगल-साम्राज्यक पतन लय जिम्मेदार छल, मुदा ओकर निवारण लेल ओ किछु टा नहि कयलक, अपितु देश मे पहिनहि सँ जे विनाशकारी शक्ति सभ क्रियाशील छल तकरा सभ कें द्रुत गति देल।"

जदुनाथ कहैत छथि, "यद्यपि मोगल साम्राज्य भारतक हेतु विविध प्रकारें बहुत किछु कयलक.....ओ जनता कें सुसंगठित कऽ राष्ट्रक रूप देबा मे असफल रहि गेल।" जनसमुदाय कें कोनो आर्थिक स्वाधीनता नहि छलैक, ने न्यायक अधिकार, ने व्यक्तिगत स्वतन्त्रते छलैक, "राजनीतिक अधिकारक कल्पनो टा नहि छल।" अमीर-वर्ग कें अधिकार छलैक आ ओ शान-शौकत सँ रहैत छल। मुदा ओकरा "कोनो निश्चित संवैधानिक स्थान नहि देल गेल छलैक किएक तऽ सरकारक व्यवस्था मे कोनो संविधानक अस्तित्व नहि छल।" यथार्थः सरकारक स्वरूप

"तानाशाही छल जकरा पर मात्र विद्रोह वा विद्रोहक भय केर अंकुश छलैक।" मोगल-साम्राज्यक मूल्यांकन करबा मे जदुनाथक दृष्टि "ताजमहल-जड़ित वा मयूर-सिंहासन-खचित रत्नक चमक-दमक" सँ अन्धीकृत नहि छल। सभ्यताक ह्रास भऽ गेल छल किएक तऽ मानव मात्र कें हेय बुझल जाइत छल" और सभ किछु "सिंहासनासीन अधिनायकक इच्छा पर अवलम्बित छल।" ई ह्रास जहिना हिन्दू तहिना मुसलमान कें प्रभावित कयलक। "औरंगजेबक शासनक प्रभाव हिन्दू कें ने केवल निरन्तर विद्रोह आ अशांन्ति करबा लेल उभाड़लक, अपितु बुद्धि, संगठन एवं आर्थिक संसाधन मे ओकरा अवनतिग्रस्त कऽ देल जाहि द्वारें राज्य कमज़ोर भऽ गेल, कारण संख्या मे ओ राष्ट्रक दू-तिंहाइ सँ अधिके छल।" "भारतक मुसलमानक पतन" तीन कारणें भेल। प्रथम, "शासक जाति वस्तुतः तुर्क जातिक छल" आ "तुर्क सभ सैनिक छोड़ि किछु नहि होइछ।" ओकर व्यवसाय ओकरा "अविरत पारिवारिक जीवनक गुण विकसित करबा मे" बाधा करैत छलैक, तें ओ सभ सामान्य मानवीय गुण वा बौद्धिक प्रवृत्तिक विकास नहि कऽ सकैत छल। "जैं सरकारक संगठन फौजी छल, सैनिके समाजक केंन्द्रीय वातावरण निर्धारित करैत छल।"

द्वितीय, विदेशी मूलक बहुतो मुसलमान भारत कें अपन घर बना लेने छल। बहुत रास मुसलमान जाति सँ भारतीय छल। ओ सभ चेहरा-मोहरा, चालि-ढालि आ रीति-रेवाजें भारतीय बनि गेल छल। "तइयो ओकर धर्मगुरु ओकरा सभ कें प्राचीन अरब दिस उन्मुख हयबा लय प्रेरित करैत छल आ अपन मानसिक तुष्टि पैगम्बरक सुदूर अतीत काल सँ लेबाक शिक्षा दैत छल। ओकर धर्मक भाषा अरबीए हयबाक चाही जकरा एको प्रतिशत मुसलमान कनेको नहि बूझि सकैत छल; ओकर संस्कृतिक भाषा फारसी छलैक जकरा किछु बेशी लोक कठिनाई सँ बूझि सकैत छल आ तकर व्यवहार एहन अशुद्ध रूपें करैत छल जे कोनो फरस मूलक लोक कें घृणा वा हँसी लागि जाइत छलैक.....अतः रूढ़िवादी मुसलमान सतत अनुभव करैत छल जे ओ भारत मे रहैत अछि मुदा एहि देशक अछि नहि। भारतक मुसलमान बौद्धिक रूपें विदेशी छल।" ई बौद्धिक रिक्तता भारतीय मुसलमानक मानसिक आ सामाजिक प्रगति कें अवरुद्ध कऽ देल।"

तेसर, इस्लामक चारू कात अनिष्टकर घास-फूस-जंगल भऽ गेल छल। "एक जीवन्त धर्मक हेतु मानवक चिर लालसाक पूर्त्ति अरबी किताबक आयत दोहरओने नहि भऽ सकैत छलैक जे सामान्य मुसलमान कें बोधगम्य नहि छल। ओकरा लोकनिक तृषित आत्मा ओहि जीवित सन्त सभ दिस उन्मुख भेल जे "चमत्कार करबाक क्षमता रखनिहार मानत जाइत छलाह।" वहाबी धर्म इस्लामक एहने अयुक्त दिशा परिवर्त्तनक विरोध छल।

तथापि मुसलमान जनसमुदाय मे एक गोट "सामाजिक संघबद्धता" छलैक जकर कल्पनो हिन्दू लोक मे नहि कयल जा सकैत छल जे परस्परविरोधी अनगिनती

जाति सभ मे बँटल छल।" हिन्दू पुरहित लोकनि अपन अनुयायीगण कें "निम्नतर बौद्धिक स्तर धरि निचाँ आनि दैत छलाह। पेशवा साम्राज्य सनक हिन्दू पुनर्जागरणो हिन्दू लोक कें एकताक सूत्र मे बन्हाबाक बदला परम्परानिष्ठा कें बढ़ा कऽ जातिगत विभेद मे आओरो वृद्धि कऽ देल..... ।"

जदुनाथ कहैत छथि, "मोगल कालक भारतीय जनता हिन्दू आ मुसलमान दूनू जड़ भऽ कऽ अपन पूर्वजक ज्ञानक प्रति श्रद्धालु छल आ आधुनिक युग कें निकृष्ट मानैत छल।" मोगल-साम्राज्य पर अँग्रेजक विजय कें जदुनाथ "पुरानपन्थी जाति" पर "प्रगतिवादी जातिक" विजयक रूप मे देखैत छथि।

जदुनाथक दृष्टिएँ "यदि समुचित रूपें अध्ययन कयल जाय तऽ इतिहास काल द्वारा एक महान् प्रयोजनक पूर्त्ति कैनिहार विधाताक औचित्य कें प्रकट करैत अछि।" की ई 'विधाताक महान् प्रयोजन' थिक जे भारत 'राष्ट्रीयता'क निर्माण करय? अकबर 'एक राष्ट्रीय एवं तर्कसगंत नीतिक प्रारम्भ' करबाक दिशा मे डेग बढ़ओलक मुदा औरंगज़ेब अकबरक कृति कें "जानि-बूझि कऽ मेटा देल।" औरंगज़ेबक शासन सँ ई शिक्षा भेटैत अछि :

> ई एक चिरन्तन सत्य जे महान जनगण विना कोनो महान् वा चिरस्थायी साम्राज्य नहि भऽ सकैत अछि, कोनो जनगण तावत धरि महान् नहि भऽ सकैत अछि यावत् ओ एहन सुसम्बद्ध राष्ट्रक निर्माण करब नहि सिखैत अछि जाहि मे सभ कें समान अधिकार आ अवसर भेटैक – एक एहन राष्ट्र जकर घटक अंग सभ समरूप होइक, जीवन आ विचारक सभ आवश्यक विन्दु पर सहमत मुदा छोट-छोट विन्दु आ निजी जीवन मे भिन्नताक प्रति मुक्तभावें सहिष्णु आ व्यक्तिगत स्वतन्त्रता कें सामाजिक स्वतन्त्रताक आधार माननिहार – एक राष्ट्र जकर प्रशासन क्षेत्रीय वा साम्प्रदायिक हितक विरुद्ध सतत राष्ट्रीय उन्नयन मात्र लेल कृतसंकल्प हो – आ एक समाज जे भय, उत्तेजना आ वन्धन सँ मुक्त भऽ ज्ञानक साधना करय। केवल सत्य आ शिव कें पूर्ण प्रकाश मे भारतक राष्ट्रीयता अपन अस्मिता, अपन अस्तित्वक सर्वोच्च शिखर धरि विकसित भऽ सकैत अछि।

ई सभ शब्द १६२४ ई. मे लिखल गेल छल– स्वतन्त्र भारतक संविधान बनबा सँ बहुत पूर्व। जदुनाथ स्रोत-सामग्रीक बड़े अन्वेषण कयल आ अत्यधिक यत्न सँ घटनाक्रम कें प्रस्तुत कयलनि। मुदा ओ सर्वदा ओकर गम्भीर अर्थ कें आ ओहि मे निहित पाठ सभ कें बहार करबाक प्रयास कयलनि। ओ एक गोट देशभक्त दलाह तें अपन देश अतीत काल मे जे गलती कयलक तकर छान-बीन करैत छलाह आ ऐतिहासिक दायक रूप मे प्राप्त हानिकारक पक्ष सभ सँ मुक्ति पयबाक मार्ग सुझबैत छलाह। ओ कहैत छथि :

यदि भारत कहियो एहन राष्ट्रक निवास बनय जे आन्तरिक शान्ति राखि सकत आ अपन सीमाक रक्षा करबा योग्य हयत, देशक आर्थिक संसाधन सभ कें विकसित करत, विज्ञान आ कालक संवर्द्धन करत, तखन हिन्दुत्व एवं इस्लाम दुहू कें पहिने मरऽ पड़तैक आ पुनः नव जन्म लेबऽ पड़तैक; बुद्धि आ विज्ञानक प्रभाव मे प्रत्येक केर शुद्धीकरण एवं नवीकरण अनिवार्य थिक।

निर्भीक, बुद्धिमत्तापूर्ण एवं अनुशासित देशभक्तिक भावना सँ बहरायल ई सभ शब्द आइयो प्रासंगिक अछि।

'औरंगज़ेबक संक्षिप्त इतिहास' जदुनाथ द्वारा तैयार कयल गेल 'औरंगज़ेबक इतिहास' केर संक्षिप्त रूपान्तर थिक जे १६३० ई. मे प्रकाशित भेल। एहि मे पाँच खण्ड बाला पुस्तकक आधा सामग्री आयल अछि आ एकटा नव अध्याय "औरंगज़ेबक साम्राज्य : ओकर संसाधन, व्यापार एवं प्रशासन-व्यवस्था" जोड़ल गेल अछि। जदुनाथ एहि पुस्तकक संरचनाक विषय मे निम्नलिखित शब्दें सूचना दैत छथि, "युद्ध सभक वृत्तान्त, गद्दी पर बैसबा सँ पूर्व औरंगज़ेबक जीवन सम्बन्धी अध्याय कें निपुणता सँ संक्षिप्त कयल गेल अछि जखन कि चरित्र-चित्रण, चिन्तन, उन्नति-अवनति वा पतनक सर्वेक्षण एवं सामान्यीकरण– अर्थात् इतिहास-दर्शन सँ सम्बद्ध सम्पूर्ण विषय प्रायः ओतबे विशद रूप मे देल गेल अछि जेना पैघ कृति मे।" जैं ई पुस्तक सामान्य पाठकक हेतु लिखल गेल अछि, एहि मे सँ पाद-टिप्पणी हटा देल गेल छैक।

'केम्ब्रिज हिस्टरी ऑव इन्डिया'क चतुर्थ खण्ड मे जदुनाथ औरंगज़ेब पर चारि अध्याय लिखलनि।

'औरंगज़ेबक इतिहास'क संक्षिप्त कथानकक पूर्त्ति जदुनाथ द्वारा लिखल आन पुस्तक सभ सँ करबाक चाही। 'ऐनेक्डोटस ऑव औरंगज़ेब' (औरंगजेबक उपाख्यान सभ) एक फारसी किताब 'अखम-इ-आलमगीरी'क अँग्रेजी अनुवाद थिक। एकर लेखनक श्रेय औरंगज़ेबक एक गोट प्रियपात्र एवं अधिकारी हमीदुद्दीन खाँ कें छनि : एहि मे अंकित बहत्तर गोट खिस्सा "ओरंगज़ेब पर प्रचुर नव प्रकाश दैत अछि आ ओकर चरित्रक बहुत रास अज्ञात विशेषता सभ, ओकर सारगर्भित संक्षिप्त कथन सभ एवं ओकर शासन-सिद्धान्त कें प्रदर्शित करैत अछि। फराक सँ प्रकाशित एकर फारसी मूल पाठ ई प्रमाणित करैत अछि जे औरंगज़ेबक "फारसी भाषा सशक्त आ कौखन कऽ मर्मभेदी शैली सँ ओत-प्रोत अछि।" एहि सँ इहो सूचित होइत अछि जे "लोकधारणाक विपरीत औरंगजेबक हृदय हास्यरसविहीन नहि छलैक।" औरंगज़ेब आ ओकर राज्यकाल पर अठारहटा विविध निबन्धक स्वतन्त्र संग्रह "स्टडीज़ इन औरंगजेब्स रेन" (औरंगज़ेबक राज्यकालक अध्ययन) नाम सँ प्रकाशित भेल अछि।

'शिवाजी ऐन्ड हिज़ टाइम्स' ('शिवाजी आ हुनक काल') क पूर्त्ति 'हाउस ऑव शिवाजी' ('शिवाजीक घराना') द्वारा कयल गेल अछि जाही मे शाही युगक मराठा इतिहासक अध्ययन आ दस्तावेज सभ अछि। मलिक अम्बर, शाहजी भोंसले, शिवाजी, शम्भूजी आ राजारामक अध्ययनक अतिरिक्त जदुनाथ मराठा जातिक तीन गोट इतिहासकार सँ परिचय करबैत छथि – रजवाड़े, परस्नीस एवं साणे। अन्तिम लेख– 'महाराष्ट्र हमरा सभ कें की शिक्षा दैत अछि'– मराठा इतिहासक रहस्योद्घाटक व्यख्या करैत अछि।

जाहि संस्थागत संरचनाक अन्तर्गत राजा आ सेनाध्यक्ष लोकनि अपन पराक्रम लीला प्रस्तुत करैत छथि तकर अध्ययन कयने विना कोनो राजनीतिक इतिह्रास अपूर्ण होइत अछि। जदुनाथक 'मोंगल प्रशासन' नामक पोथी मोगल प्रशासन-व्यवस्था आ संविधान, ओकर सिद्धान्त एवं आचरण व्यवहार, ओकर नीति आ उद्देश्य जनता पर ओकर प्रभाव, राज्यक विभिन्न वर्गक स्थान, अधिकार एवं दशा, मोंगल साम्राज्यक उपलब्धिक दार्शनिक सर्वेक्षण, ओकर पतनक कारण सभ आ देशक इतिहास पर ओकर प्रभाव पर एक गोट पूर्ण शोध-प्रबन्ध थिक।

जदुनाथ मोंगल-शासनक पाँच टा "राजनीतिक प्रभाव गनबैत छथि। पहिल, ई समस्त उत्तर भारत आ दक्षिणक पैघ भाग कें एक सरकारी भाषा, प्रशासन-व्यवस्था आ मुद्रा एवं हिन्दू पुरोहित आ जड़ ग्रामीण लोक कें छोड़ि बाँकी सभ कें एक लोक भाषा सेहो देल।" मुसलमान सवहिक दोसर देन छल ऐतिहासिक साहित्य। तेसर, "ओ सभ भारत आ बाहरी एशियाक देश सभक वीच पुनः सम्पर्क स्थापित कयलक जे कि भारत मे बौद्ध धर्मक अवसानक पश्चात् समाप्त भऽ गेल छल"। चारिम, यद्यपि इस्लाम हिन्दू कें एकेश्वरवादक शिक्षा नहि देल, ओ "हिन्दू सभक बीच विरोधी आन्दोलन कें बड़े गति प्रदान कयलक आ "इस्लामी समाजक उदाहरण हिन्दू सभक पूर्वाग्रहपूर्ण धारणा सभक समाधान करबाक काज कयलक।" पाँचम, उत्तर भारत मे हिन्दू सामाजिक रीति-रेवाज, लोक-साहित्य आ युद्धकला पर मुसलमानक प्रभाव पड़ल। ओ सभ "वास्तु-शिल्प मे स्पष्टतः उन्नत कला अनलक आ ललित कलाक क्षेत्र मे ओकर सर्वश्रेष्ठ योगदान छल भारतीय- मुसलमानी चित्रकला शैली।"

मोगल-राज्यक कमज़ोरीक विवेचना करबाक क्रम मे जदुनाथ मुसलमानी अभिजात तन्त्रक (नवाब-अमीर आदिक) ह्रास-पक्ष पर जोर दैत छथि जे किछु तऽ प्रमत्त वर्ग-संकरण आ सभ तरहक जाति, मूल आ सभ्यता-स्तरक स्त्रीगण सं भरल रनिवासक संरक्षण आ हिन्दू जातिक विकास रुकि जयबाक कारणें भेल। "राष्ट्र कें शक्तिशाली बनयबाक, राष्ट्रीय चरित्रक विकास करबाक वा जनताक आर्थिक उन्नति कें सुनिश्चित करबाक" कोनो टा प्रयास नहि कयल गेल।

मोगल-शासनक सांघातिक त्रुटि ई छल जे "ई देश पर निरन्तर मात्र सैनिक आधिपत्यक रूप रखने रहल आ एक राष्ट्र वा समरूप राज्यक निर्माणक प्रयत्न नहि कयल।" एकरा अतिरिक्त "बगदाद मे आरम्भ कालक अब्बासी खलीफा लोकनिक राजदरबार मे बुद्धिवादी (मुताज़ला) आन्दोलनक विफलताक बाद इस्लामक जे व्यख्या कयल गेल से अत्यधिक कठोर, नहि झुकऽबला आ बदलैत परिवेशक संग सामंजस्य स्थापित करबा मे अक्षम छल", जखन कि यूरोप "लगातार प्रगति कऽ रहल छल", रूढ़िवादी मुसलमान अपेक्षाकृत निचाँ चल जा रहल छल। ओ सभ एहि तथ्य कें बिसरि गेल जे "प्रगतिए चेतन जगत् केर जीवनक नियम थिक।"

जदुनाथ मोगल-साम्राज्यक व्यापक परिप्रेक्ष्य मे विभिन्न प्रान्तक विभिन्न कालक इतिहास प्रस्तुत कयलनि। एकरा अतिरिक्त, केवल प्रान्तीय इतिहासक सम्बन्ध मे ओ दू खण्ड लिखलनि आ एक खण्डक सम्पादन कयल। "मोगल-साम्राज्यक पतन-काल मे बिहार आ उड़ीसा" मे ओ एहि दूनू प्रान्तक मे मराठा गतिविधि पर विशेष रूपें ध्यान केन्द्रित कयलनि। "चैतन्यक जीवन आ उपदेश" बंगालक सभ सँ पैघ सन्त पर पूर्ण ऐतिहासिक कृति नहि थिक जे "भक्ति दर्शन एवं ब्रह्मक अवतार कृष्णक प्रति भक्तिक उपदेश सँ पूर्वी भारत मे एक सम्पूर्ण नैतिक क्रान्ति" अनलनि। हुनक उपदेश बंगाल, उड़ीसा आ असम मे मान्य भेल आ वृन्दावन मे ओकरा अनुकूल वातावरण भेटलैक। ई पोथी बँगला मे चैतन्य पर दू गोट महत्त्वपूर्ण जीवनी (कृष्णदास कविराज कृत 'चैतन्य चरितामृत' आ वृन्दावनदासक 'चैतन्य भागवत') केर किछु अंशक अँग्रेजी अनुवाद थिक। हुनक जीवन आ तीर्थयात्रा सभक वृत्तान्त जेना हुनक संगी आ शिष्यगण कें बूझल छलनि एवं हुनक उपदेशक सारतत्त्व बँगला सँ अनभिज्ञ पाठकक हेतु प्रस्तुत कयल गेल अछि। ई ने केवल इतिहासक प्रति अपितु बँगला साहित्योक सेवा छल किएक तऽ सी. एफ. ऐन्डरूज़क शब्द मे ई गैर-बंगाली पाठकक हेतु "एहि सन्तक स्पष्टतम चित्र" आ संगहि बँगला साहित्यक दू गोट मध्ययुगीन 'क्लासिकी' कें प्रस्तुत करैत अछि। यद्यपि जदुनाथ स्वयं वैष्णव नहि छलाह, तथापि ओ वैष्णव परिवारक पुत्र छलाह : हुनका प्रेमाभक्तिक उपदेष्टा चैतन्यक प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा छलनि।

धार्मिक विषय पर जदुनाथक दोसर पोथी थिक 'दशनामी सम्प्रदायक इतिहास'। ई शंकराचार्य द्वारा स्थापित नागा सन्यासी लोकनिक सम्प्रदाय पर एक शोध-प्रबन्ध थिक।

ढाका विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित मुसलमानी काल (१२००-१७५७ ई.) मे 'बंगालक इतिहास'क दोसर खण्डक सम्पादन जदुनाथ कयलनि। ओहि खण्डक विषय-क्षेत्रक निर्धारण, योगदान देनिहार सभक चयन आ लेख सभक संशोधन (कौखन आमूल रूपान्तरण) करबाक अतिरिक्त ओकर ४६६ महक २०० पृष्ठ ओ

स्वयं लिखलनि आ आकर सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची तैयार कयल। "हुनका जंगल केर सफाई करबाक आ कोनो-कोनो कालखण्डक अनछुअल क्षेत्रक सामग्रीक उद्धार करबाक छलनि।" ओ 'अनभिज्ञात अरण्य' बाटे आगू बढ़लाह आ फारसी पाण्डुलिपि एवं यूरोपीय व्यापारी सभक विवरण सभ सँ प्राप्त अनेको छिट-फुट संकेत सभ कें जोड़ि-जाड़ि कऽ एक वास्तविक कथानकक संरचना कयलनि।"

जदुनाथक 'मोगल शासनक अन्तर्गत बंगालक रूपान्तर' आ 'मुसलमानी शासनक अन्त' ई दू गोट अध्याय विशेष रूपें रोचक अछि।

मोगल शासनक पहिल शताब्दीक अभ्यन्तर "बाहरी दुनिया बंगाल मे प्रवेश कयल आ बंगाल अपना सँ बहार भऽ कऽ बाहरी दुनिया मे गेल।" ई "विशाल सामुद्रिक व्यापारक वृद्धि"क परिणामस्वरूप भेल। बंगालक आर्थिक पृथकता समाप्त भेल। दोसर, "वैष्णव धर्मक माध्यमें बंगालक सम्पूर्ण धार्मिक जीवन रूपान्तरित भऽ गेल। धार्मिक उत्साहक अतिरिक्त चैतन्यक उपदेश सामाजिक क्रान्ति अनलक।"समाजक निम्न स्तर आ निरक्षर जनसमूहक उन्नयनक सँग-सँग उच्च आ मध्यम वर्ग मे सेहो नैतिक सुधार भेल। मुदा यदुनाथ एक गोट रूढ़िवाद-विरोधी विचार सेहो प्रकट करैत छथि : वैष्णव धर्म जातीय शूरता कें नष्ट कऽ देल आ लोक कें ततेक मृदु बना देल जे ओ राष्ट्र-रक्षा करबा योग्य नहि रहि गेल।"

पलासीक युद्ध (१७५७ ई.) मे अँग्रेज सभक विजयक आधारभूत कारणक व्याख्या करैत जदुनाथ लिखलनि, ".....मोगल सभ्यता बन्दूकक खुक्ख गोली बनि गेल छल। एकर सम्भावना, एकर जीवने समाप्त भऽ गेल छल.....एक गोट पतनोन्मुख समाज पर अपन दुर्निवार शक्ति लेने यूरोपक तर्कपरक प्रगतिशील चेतना आक्रमण कऽ देल।" 'प्रगतिशील चेतना'क विजय बंगाल कें "मध्यकालीन धर्मतन्त्रीय शासनक अभिशाप सँ बचा लेल आ एकटा एहन पुनर्जागरणक पृष्ठभूमि तैयार कयलक जे यूरोपीय जागरण सँ अधिक विस्तृत, गहन आ क्रान्तिकारी छल।" 'एक नव बंगाल'क जन्म भेल आ देशक एहि कोन मे "आधुनिक कालक प्रत्येक नीक आ महान् तत्त्व प्रकट भेल जे भारतक आनो प्रान्त सभ मे गेल।"

हमरालोकनि लेल सद्यः खुजल स्वातन्त्र्य-मन्दिरक देहरि पर ठाढ़ जदुनाथ अक्टूबर १९४७ ई. मे पुछैत छथि, "अपनहुँ लेल अज्ञात बंगाल एहि उत्कर्ष-बिन्दु धरि पहँचबा लेल युग-युग सँ साधनारत नहि रहल की?"

जदुनाथ बंगाल कें सर्वप्रथम वैज्ञानिक पद्धतिएँ लिखल एकटा इतिहास देल जे सम्पूर्ण मुसलमानी शासन-काल कें व्याप्त कयने छल। यद्यपि ओकर प्रकाशन चारि दशक पूर्व भेल, कोनो देसर कृति एहि मानक ग्रन्थक स्थान नहि लऽ सकल अछि, ने कोनो विद्वत्तापूर्ण ग्रन्थ एकर वास्तविक अनुपूरण कयल अछि। प्रान्तीय आ मोगल साम्राज्यक शासनक इतिहास मे योगदान स्वरूप एकर जे महत्त्व अछि

तकरा अलावा ई बँगला साहित्यक इतिहासकार लोकनि के अपन अध्ययन करबाक हेतु व्यापक पृष्ठभूमि प्रदान करैत अछि। साहित्यक विकास बहुतो अंश मे शान्ति एवं आर्थिक स्थायित्व पर निर्भर करैत अछि जे चिन्तन आ लेखनक हेतु अनुकूल वातावरण बनबैत अछि। तुर्क लोकनि द्वारा बंगाल-विजयक पश्चात् दू शताब्दी धरि राजनीतिक अस्थिरता आ सैनिक क्रियाकलाप सँ आन्दोलित रहबाक कारणें बंगाल साहित्यक क्षेत्र मे अत्यन्त निष्क्रिय रहल। तकरा बाद शुरू भेल राजनीतिक स्थायित्वक एक युग जकर चरम रूप भेल "मोगल शान्ति"। वैष्णव-धर्म बंगालक काव्य-साहित्य-सर्जनाक एक युग प्रारम्भ कयलक। मध्यकालीन बंगालक साहित्य केर इतिहासक यथातथ्य बोध हेतु जदुनाथक कृतिक यत्नपूर्वक अध्ययन परमावश्यक अछि।

फरसी इतिवृत्त, पत्राचार एवं आन अभिलेख सभक अनवरत अध्ययन सँ जदुनाथ फारसी भाषा आ पाण्डुलिपि पढ़बाक कला मे उच्च कोटिक निपुणता प्राप्त कयलनि। ओ कतेको फारसी एतिहासिक कृति सभ कें अँग्रेजी मे रूपान्तरित कयल। 'मसिर-ए-आलमगीरी' मोगल सरकारी अभिलेख पर आधारित औरंगजेबक सम्पूर्ण राजयकालक विस्तृत इतिहास थिक। तत्कालीन एक गोट हिन्दू इतिहासकार भीमसेन द्वारा फारसी मे लिखल औरंगज़ेबक इतिहासक एक अंशक अनुवाद कयल गेल जकर प्रकाशन १९७२ ई. मे महाराष्ट्र सरकार द्वारा जदुनाथक जन्मशताब्दीक अवसर पर भेल। ओ ईश्वरदास नागर केर फारसी मे लिखल औरंगज़ेबक इतिहास आ मोगल इतिहास पर दूटा अन्य फारसी ग्रन्थक सेहो अनुवाद कयल। ओ जारेट द्वारा कयल 'आइन-ए-अकबरी'क द्वितीय आ तृतीय खण्डक अनुवादक सम्पादन आ संशोधन कयल। 'बंगालक नवाब' अठारहम शताब्दीक पूर्वार्द्धक बंगालक इतिहास पर लिखल तत्कालीन तीन गोट फारसी ग्रन्थक अनुवाद थिक। ई अनुवाद सभ ने केवल विद्वद्वर्गक हेतु बड़े सहायक अछि, प्रत्युत एहन सामान्य पाठकक हेतु सेहो उपयोगी अछि जे फारसी नहि जनैत छथि मुदा फारसी ऐतिहासिक कृति मे जनिका रुचि छनि।

'इन्डिया थ्रू द एजेज़' ('विभिन्न युग मे भारत') वैदिक युग सँ लऽ कऽ हमरालोकनिक काल धरि भारतीय जीवन आ विचारक विकासक संक्षिप्त किन्तु ज्ञानवर्धक सर्वेक्षण थिक। एहि मे भारतीय सभ्यताक विकास मे आर्य, बौद्ध, मुसलमान आ अँग्रेज लोकनिक योगदानक विस्तृत अध्ययन कयल गेल अछि। ई सूचित करैत जे कोना हमर वर्तमान अतीतक निधिएक परिणति थिक, ओ ओहि सभ क्रमागत आधार कें लेल अछि जे वर्तमान भारतक समवायिक विकास मे अपन योग देलक अछि। जदुनाथ निम्नलिखित उपसंहार करैत छथिः

> देशक इतिहासक ई अध्ययन अनिवार्य रूपें एहि निष्कर्ष पर लऽ जाइत अछि जे हमरा लोकनि प्रगतिक भावना कें निस्सन्दिग्ध निष्ठा सँ अंगीकार

करी.....हमरा ई बात कदापि नहि बिसरबाक अछि जे आधुनिक भारतीय सभ्यता दैनिक रूपें वढ़ैत एक समवायिक उपज थिक..... ।

१६२८ ई. मे एहि उक्तिक बाद एकटा बात सँ ओ स्पष्ट रूपें चेताओलः कोनो देश आधुनिक संसार मे अपन सम्भवित शत्रु द्वारा प्राप्त उच्चतम विन्दु धरि आर्थिक संसाधन आ सैनिक शक्तिक विकास कयने विना केवल अपन मानसिक शक्तिक वृद्धि सँ जीवित नहि रहि सकैत अछि ।

यद्यपि जदुनाथ इतिहासक मार्क्सवादी व्याख्याक सिद्धान्त सँ प्रभावित नहि छलाह, ओ राजनीतिक आ आर्थिक विकास क्रम कें निरूपित करबा मे आर्थिक आधारक महत्त्व कें प्रमुखता देव कहियो नहि विसरलाह । हुनक ग्रन्थ 'इकनॉमिक्स ऑव ब्रिटिश इन्डिया' ('ब्रिटिश भारतक अर्थशास्त्र') ओहन समय मे प्रकाशित भेल (१६०६ ई.) जखन विश्वविद्यालय सभ मे अर्थशास्त्र कें अध्ययनक विषयक रूप मे स्थान आ महत्त्व देव प्रारम्भे भेल छलैक । ओ तथ्य आ आँकड़ा कें बड़े यत्न आ निपुणता सँ क्रमबद्ध कयलनि आ अँग्रेज शासक सभक आर्थिक नीतिक अत्यन्त आलोचनात्मक मूल्यांकन कयल । ई ग्रन्थ विदेशी शासक द्वारा भारतक आर्थिक शोषणक निर्भीक खुलासाक रूप मे की भारत आ की इंगलैण्ड दुहू ठामक सर्वसाधारण लोकक ध्यान कें आकर्षित कयलक ।

अँग्रेजी मे ऐतिहासिक कृति (२)

'औरंगजेबक इतिहास'क पाँचम खण्ड पूरा करबा सँ पहिनहि जदुनाथ अठारहम शताब्दीक अध्ययन दिस आकृष्ट भेलाह। आइ. सी. एस.क एक गोट सदस्य विलियम इरविन जे संयुक्त प्रान्त मे सेवारत छलाह, जदुनाथक मित्र रहथिन आ सँगहि मोगलकालीन अध्ययनक क्षेत्र मे हुनक संगी रहथि; मुदा ओ अस्वस्थ भऽ गेलाह आ पछति ओकर प्रारूप कें पूरा कऽ अन्तिम रूप देबा सँ पहिनहि हुनक निधन भऽ गेलनि। हुनक पुत्री ओहि काज कें पूरा करबाक हेतु आ ओकर सम्पादन करबाक हेतु जदुनाथ कें आग्रह कयल। ओ एहि कार्यभार कें स्वीकार कयलनि; ओहि प्रारूपक संशोधन आ सम्पादन कयल आ ओहि मे नादिरशाहक आक्रमण पर तीन टा अध्याय आओर जोड़लनि। इरविन जे किछु लिखने रहथि से पूर्णतः फारसी आ अँग्रेज विद्वान सभक कृति पर आधारित छल। जदुनाथ एहि वृत्तान्तक संरचना मे मराठीक सरकारी अभिलेख आ मराठी भाषाक पत्र सभ सँ लेल सूचना कें गुम्फित कयलनि।

ई एक अस्थायी प्रसंगान्तर सँ किछु अधिके सिद्ध भेल। महान् मोगल बादशाह लोकनि कें सुयोग्य इतिहास-लेखक उपलब्ध भेलनि, मुदा मोगल साम्राज्यक पतन तऽ 'इतिहासकार सभ कें विकर्षित' कऽ देल। सभ्यता-सर्जक शक्तिक निःशेष भेलाक बाद देशक जे ध्वंस भेल से एहन मनहूस विषय छल जाहि मे मानव-मन कें उदात्त बनयबाक वा मानव-हृदय कें भावोद्वेलित करबाक कोनो परिदृश्य नहि रहि गेल छलैक। मुदा अठारहम शताब्दीक एहि 'त्रासदी' मे जदुनाथ रुचि लेल किएक तऽ ई "कोनो दुःखान्त नाटक" सँ कम प्रभावकारी नहि छल जाहि माध्यमें 'करुणा' आ 'भय' जगाकऽ मानवक अन्तर्मनक 'रेचन' सम्पन्न होइत छैक। एहि 'रेचन'क महत्त्वक अतिरिक्त एहि 'त्रासदी' मे "वर्तमानक हेतु मार्ग-दर्शन प्राप्त भेलनि किएक तऽ एहि मे गम्भीर सँ गम्भीर शिक्षाक अभाव नहि छल।" "सम्प्रति जे केओ अपन देशक जनगण केर भाग्य विधाता हयताह तनिक समुचित मार्गदर्शनक हेतु अपन पूर्वजक अनुभवक प्रकाश अनिवार्य रूपें आवश्यक।" मुसलमानी शासनक 'द्रुत गतिएँ विनाश' आ "साम्राज्य-निर्माणक दिशा मे नव हिन्दू प्रयत्नक आत्यन्तिक विफलता" एहि दुहूक बीच निकट सम्बन्ध अछि। यदि हम आधुनिक भारतक

समस्या सभक वास्तविक समाधान बहार करऽ चाहैत छी आ अतीतक घोर त्रुटि सभ सँ बचऽ चाहैत छी तऽ एकर विस्तृत वृत्तान्तक यथातथ्य अध्ययन आ एकर सम्पूर्ण कारणक गहन विश्लेषण करहि पड़त।

एहि दुस्साध्य अनुष्ठान मे जदुनाथ अपन जीवनक अन्तिम चरणक दू दशक सँ बेशी समय लगा देल। अध्ययन-कार्य सँ मुक्त भेलाक उपरान्त (१९२६ ई. सँ) आ प्रशासनिक कार्य भार सँ निवृत्त भेलाक पश्चात् (१९२८ ई.) ओ अध्ययन आ लेखन मात्र मे अपना कें लगओने रहलाह। 'मोगल साम्राज्यक पतन' केर चारि खण्ड धारावाहिक क्रम मे १९३२ ई., १९३४ ई., १९३८ ई. आ १९५० ई. मे प्रकाशित भेल। ओ सभ कुल मिला कऽ १७३९ ई. सँ १८०३ ई. धरिक कालखण्डक समावेश करैत अछि।

अठारहम शताब्दीक अध्ययन-क्रम मे जदुनाथ कें दू गोट विषम कठिनाइक मोकवला करऽ पड़लनि। पहिल छल विविध आकार-प्रकारक विपुल सामग्री। ई आवश्यक छल जे "अत्यन्त भिन्न जाति, मत आ भाषाक अनेक साक्षी सभक" द्वारा छोड़ल साक्ष्यक उपयोग कयल जाय जे घटनाक्रम कें सभ दृष्टिएँ अवलोकन कयने छल। जदुनाथ "पहिने फारसी, मराठी, अँग्रेजी, फ्रांसीसी, हिन्दी, राजस्थानी आ संस्कृत स्रोत सभक संश्लेषण करबाक प्रयास कयलनि।" हुनका विस्तृत सरकारी अभिलेखक अभाव छलनि, यथा महान् मोगल शासक सभ लेल लिखल गेल विवरण सदृश सामग्री, मुदा ओहि कालक "घटनादि मे भाग लेनिहार भारतीय पात्र आ निरपेक्ष विदेशी प्रेक्षक सभ जे प्रचुर निजी संस्मरण आ दैनन्दिनी छोड़ि गेल छल से तिथि आ नामक विस्तृत आ विशुद्ध सूचना सँ विहीन रहितहुँ पहिल कोटिक कृति सँ किछु अर्थ मे अधिक बहुमूल्य छल।" एतेक विविध आ विस्तृत स्रोत-सामग्री सँ ओहि अनवरत आ तेजी सँ परिवर्तित होइत शताब्दीक गाथाक फेर सँ रचना करब वस्तुतः इतिहास लेखन कलाक सर्वोच्च योग्यताक अपेक्षा रखैत छल। बाटक कात मे चारू कात छिड़िआयल प्रस्तर-खण्ड सभ सँ एक गोट विशाल भव्य स्मारकक निर्माण करबा सँ भिन्न नहि छल ई कार्य।

दोसर कठिनाई छल मोगल-साम्राज्यक "विघटनक फलस्वरूप जे भिन्न-भिन्न राजनीतिक संघटन आ गतिविधिक केन्द्र सभ निर्मित भेल तकर अत्यधिक संख्या।" आब औरंगज़ेब सनक कोनो केन्द्रीय व्यक्ति नहि छल जे समस्त राजनैतिक आ सैनिक गतिविधिक सभटा सूत्र अपना हाथ मे रखैत। पैघ आ छोट राज्य सभ मे बँटल भारत "पाथरक एहन फराक-फराक खण्ड सभ सँ भरल झोरी जकाँ छल जाहि मे ओ सभ सदिखन परस्पर टकराइत रहय।" अपना विवरण कें सुडौल आ सुसंगत बनयबाक हेतु ई आवश्यक छलनि जे इतिहासकार अपन ध्यान-भंग नहि कऽ अपन दृष्टि साम्राज्यक केन्द्र सम्राट ओ ओकर रक्षक सभ पर स्थिर कयने रहय आ एहन प्रत्येक अवान्तर विषय कें कठोरता सँ हटबैत जाय जे हुनक ध्यान

कें केन्द्रीय विषय-वस्तु सँ कनेको एम्हर-ओम्हर भटकबैत हो। जदुनाथ दिल्लीक इतिहासकारक भूमिका ग्रहण कयल यद्यपि ओ आब कोनो साम्राज्यरूपी ठोस इमारतक केन्द्र नहि रहि गेल छल। जदुनाथ ओहि सभ प्रान्तक इतिहास कें सम्मिलित नहि कयलनि जे मोगल-साम्राज्य सँ अपना कें पृथक् कऽ लेने छल (१७५७ ई.क बाद बिहार आ बंगाल, १७४१ ई.-१७५० ई. सँ मालवा आ गुजरात, १७५८ ई.क बाद पंजाब, १७५१ ई.क बाद अवध आ १७४८ ई.क बाद दक्षिणक छौ गोट सूबा)। ओ अन्तिम दू प्रान्त राजपुताना आ बुँदेलखण्ड कें सम्मिलित कयलनि, कारण "ओ क्षेत्र उत्तर भारतक संचालक स्थल रहल आ जे केओ दिल्ली पर कब्जा रखनक तकरा सभक क्रियाकलाप शताब्दीक अन्त धरि एहि प्रदेशक अभ्यन्तर धरि पसरैत रहल।" आँग्ल-फ्राँसीसी संघर्ष एवं मराठा राज्यक गतिविधियो कें हटा देल गेल। स्वयं नियोजित एहि 'सीमा' मे अपना कें बान्हि जदुनाथ "अपन कृतिक संरचना कें एकसूत्रता आ सम्बद्धता देवाक आशा कयलनि।" "पाठकक सम्मुख मुख्य सूत्र कें रखवा मे" हुनका जे विशिष्ट सफलता भेटलनि तकरा बूझवा मे प्रायः किनकहु भाङ्ट नहि हयतनि। एहि बातक अछैतो, जे इतिहासकार बड़ द्रुत गतिएँ एक केन्द्र सँ दोसर केन्द्र दिस बढ़ैत अछि आ ओंकरा सभक प्रयोजन. भूल-चूक आ मूर्खताक पारस्परिक प्रभावक विश्लेषण करैत अछि, चारि खण्ड आ चौदह सय पृष्टक कृति मे अपन एक आन्तरिक एकसूत्रता छैक। एहि "विविध वन-समूहक प्रदेश" मे पाठक अपन मार्ग सँ भटकैत नहि अछि; कारण इतिहासकार सतत ओंकरा सँगे रहैत अछि ई कहबा लय जे "दिल्ली दूर नहि अछि।"

एहि विशाल कृतिक नायक वस्तुतः दिल्ली थिक; एकर छाया समस्त उपमहादेश कें घेरने रहैत अछि जकरा महान् मोगल सभ एक साम्राज्य-छत्रक निचाँ अनने छल। जदुनाथ हमरासभ कें एक त्रासदी भरल कथा कहैत छथि; मध्यकालीन भारत मे निर्मित सर्वाधिक ठोस शक्तिशाली राजनीतिक भवन दीर्घ कष्टमय दशा सँ गुजरैत अछि आ अन्हार 'कब्र' मे धँसि जाइत अछि। कठपुतरी बादशाहक दरबारक घोर षड्यन्त्र-जाल, अहमदशाह अब्दालीक अफगान दस्यु सभक द्वारा निर्मम विध्वंस-क्रिया, धूर्त्त प्रान्तीय शासक सभक सिद्धान्तविहीन वदलैत राजनीति आ "हिन्दू पद पादशाही" क स्वप्न कें साकार करबाक प्रयास मे पारस्परिक कलहग्रस्त मराठा नेता सभक दयनीय विफलता सँ पाठक मर्माहत भऽ जाइत अछि। मोगल-साम्राज्य लघु सँ लघुतर होइत चल जाइत अछि आ देश विखण्डित। एक एहन सशक्त राजनीतिक प्रणालीक विघटन जे सभयता-सर्जक शक्ति सेहो छल, भारतीय चरित्रक निकृष्टतम लक्षण सभ कें आ एकर राजनीतिक परम्परा मे चिरकाल सँ जड़ीभूत विभाजन-प्रवृत्ति कें प्रदर्शित करैत अछि। विखण्डित देश विदेशी सौदागर सभक हाथ मे पड़ि जाइत अछि। ई वृत्तान्तक विभिन्न सूत्र कें एक संरचना मे गुम्फित करबाक, विविध मूलक असमान महत्त्वक स्रोत-सामग्री

कें नैतिक आ राजनीतिक विनाश-कथा क रूप देबाक आ टूटल सपना सभक कारुणिकता कें सुगठित शब्दावली मे प्रस्तुत करबाक जदुनाथक अद्‌भुत क्षमता कें प्रकट करैत अछि। हुनक द्रुत गति सँ प्रवहमान गद्य आ घटना सभक निष्ठुर तर्क-संगतिक विश्लेषण अठारहम शताब्दी कें पुनः सजीव बना कऽ ठाढ़ कऽ दैत अछि। लन्दनक 'टाइम्स' समीक्षा कयलक – "अँग्रेज शक्तिक उदय सँ पूर्व भारतक दशाक एहि सँ अधिक प्रामाणिक आकलन वा एहि सँ अधिक मार्म्मिक विवरण पाठक कें अन्यत्र कतहुँ भेटब असम्भव।" सर्वथा उचित प्रशंसाक एहि शब्दावली मे एकटा नुकायल संकेत अछि जकरा चीन्हब कठिन नहि, जे इंगलैण्ड भारत कें एहि अराजकता सँ मुक्ति दिअओलक। मुदा जदुनाथक उद्देश्य अपना देशक दिस सँ ई स्वीकार करब मात्र छल जे एकर विभिन्न नैतिक आ राजनीतिक दुर्बलता एकरा विदेशी जातिक गुलाम बना देलक।

प्रथम खण्ड (१७३६ ई.-१७५४ ई.) नादिरशाहक आक्रमणक पश्चात् पतनोन्मुख दिल्ली साम्राज्यक परिचय दैत अछि। "यद्यपि एहन लागत जे दिल्ली दरबारक बाह्य प्रतिष्ठा आ वैभव घुरि आयल हो,.....मुदा नैतिक कमज़ोरीक 'नासूर' एहि मे ततेक भीतर बैसि गेल छल जे निर्जीव परम्पराक प्रति श्रद्धा आ तकर पालनक बाह्य प्रदर्शन सँ ओ स्वस्थ भेनिहार नहि छल। बादशाह आ ओकर प्रमुख वज़ीर सभक चरित्र सँ बहरायल "दैवी प्रतिशोध" अबाध गतिएँ साम्राज्यक भावी परिणाम-शृंखला मे प्रकट होइत चल गेल।"

पाँच कोटि प्रजाक नायक बादशाह मुहम्मदशाह (१७१६ ई.-१७४८ ई.) प्रातःकालक समय सार्वजनिक न्याय वा राजकाज मे नहि बितबैत छल जेना ओकर पूर्वजक चरित्र छलैक, वरन् दू गोट भालुक द्वन्द्व-युद्ध वा बाघक खाल पहिराओल आ हाथी पर आक्रमण करबा मे प्रशिक्षित तीन जोड़ा भालु, एकटा बक्कड़, एकटा भेंड़ा आ एक गोट बनैया सुगर सभक मल्ल-युद्धक दृश्य देखबा मे बितबैत छल। हफीमक व्यसन सँ ओ दुब्बर आ क्षीणकाय भेल चल जाइत छल, ततेक धरि जे ओकरा राजमहल सँ कतहुँ लऽ जायब असम्भव भऽ गेल छलैक। ओ भीरु आ चंचल, कोनो निर्णय करबा मे अक्षम भऽ गेल छल। जीवनक अन्तिम वर्ष मे ओकर मनहूसियत तेना भऽ कऽ ओकर घेरि लेने छलैक जे ओ तीन गोट फकीर कें अपन आध्यात्मिक गुरु बनओलक। गुट्टबाज़ीक अखाड़ा बनल ओकर दरबार मे केओ "एतेक बुधियार, कर्मठ आ सशक्त वज़ीर नहि रहि गेल छल.....जे ओकर साम्राज्य कें बचा सकैत।" तें राजकाज अयोग्य प्रियपात्र सभक हाथ मे छोड़ि देल गेल छल। "जाहि प्रान्त सभ मे शक्तिशाली सूबेदार नहि छल, ताहि ठाम सार्वजनिक जीवन सँ शान्ति बिला गेल, कारण लोक कें कमजोर सरकारक कोनो टा भय नहि रहि गेलैक।" सउँसे गंगाक मैदान मे रुहेला आ बंगश अफगान सभ शक्तिशाली उपनिवेश कायम कऽ लेलक। मांगल शक्तिक पतन सँ आन कोनो जाति सँ बेशी

मराठा सभ लाभ उठओलक आ मालवा आ राजपुताना मे प्रवेश कयलक। पूर्व मे मराठा सभ बंगाल, बिहार आ उड़ीसा मे दुकि कऽ ओहि ठामक नवाब कें डेरावऽ-धमकावऽ लागल जे पूर्व मे बादशाही नियन्त्रण सँ वस्तुतः मुक्त भऽ गेल छल।

मुहम्मदशाहक स्वाभाविक मृत्यु भेलैक। ओकर बेटा आ उत्तराधिकारी अहमदशाह (१७४८-१७५४) ओतेक भाग्यशापली नहि छल; ओकर वजीर इमदुल मुल्क ओकरा गद्दी पर सँ हटा देलकैक। अपन माय उधमबाईक सँगे सैनिक द्वारा बन्हायल बन्दी बादशाह पियास आ मनोव्यथा सँ परितप्त भऽ 'पानि-पानि' कऽ आर्त्तनाद करऽ लागल।" वजीरक कोनो प्रतिनिधि गर्दा मे पड़ल टूटल-फूटल माटिक पात्र मे किछु जल लऽ कऽ ओकरा मुँह मे लगा देल आ एक घन्टा पूर्वक शाहंशाह ओहि बासन सँ पानि पीवि प्रसन्न भेल।" ओहि कालक इतिहासकार, 'तारीख-ए-अहमद'क अज्ञातनामा लेखक आक्रोश करैत छथि, "भाग्यक केहन विडम्बना!"

अहमदशाह अपन भाग्यक हेतु बहुतो अंश मे स्वंय दोषी छल, कारण ओ स्वभाव सँ मन्दबुद्धि, अल्पशिक्षित, राजनीति मे अप्रशिक्षित आ भ्रष्ट चरित्रक स्त्री-पुरुषक संगतिक प्रेमी छल। ओकर माय उधमबाई बाज़ारू नाचऽवाली छलि जकरा मुहम्मदशाह रानीक गौरव प्रदान कयने छल। ओ आ ओकर प्रेमपात्र हिजड़ा आवेद खाँ, इएह दूनू सर्वशक्तिमान छल। शाही प्रशासन ध्वस्त भऽ गेल। जखन सरकार एहन दिवालिया भऽ गेल जे फौजक वेतन देब ओकरा बुतें पार नहि लगलैक तऽ शाही भंडारक वस्तुजात सभ– हथियार, कालीन, भानसक बर्तन-बासन, थारी-बाटी धरि, किताव सभ– दोकानदार आ फेरीबलाक हाथें बेचल जाय लागल। "एहि सँ जनसाधारणक अत्यन्त अभद्र आ अकथनीय उपहासक द्वार खुजि गेल।" अवधक नवाबीक संस्थापक सफदरजंग अपन वजीर-पद कायम नहि राखि सकल आ गंगाक दोआब मे बसल अफगान सभ सँ युद्ध ठनलक। पंजाब मे सिख सभ बड़ शक्तिशाली आ आक्रामक भऽ गेल। काबुल मे नादिरशाहक उत्तराधिकारी अहमदशाह अब्दाली पंजाब पर तीन बेर चढ़ाई कयलक। ओकरा दूर रखवा मे अक्षम अहमदशाह दूटा सूबा लाहौर आ मुल्तान ओकरा समर्पित कऽ देल। पश्चिमोत्तर प्रान्त साम्राज्य सँ औपचारिक रूपें कटि गेल।

मोगल सत्ताक पतनकाल मे राजपूत सभक दशाक जदुनाथक विश्लेशण तथ्योद्घाटक अछि। ई पतन राजपूत सभ कें दू विभिन्न तरहें प्रभावित कयल। पहिल, दिल्ली ऐक्य रखनिहार सूत्र आ समान नियन्त्रक प्राधिकार नहि रहल। मोगल शासन व्यवस्थाक समाप्तिक परिणाम विनाशकारी भेल। कानूनी अधिकार कें लागू करवाक, "एक रियासति आ दोसरक बीच वा एके राजघरानाक भीतरक संघर्ष कें रोकबाक हेतु कोनो पैघ ऊपरक शक्ति नहि रहि गेल।" दोसर, जखन

बादशाह युद्ध ठानब बन्न कऽ देल तऽ राजपूत सभ चैन आ प्रतिष्ठाक जीवन नहि जीबि सकल। "अपन बंजर प्रदेश मे सीमित भऽ गेने ओ सभ अपन तरुआरि अपनहि सभक बीच उठबऽ लागल जकर मुख्य कारण जमीनक भूख छल।" सभटा दमित व्यक्तिगत महत्वकांक्षा आ राज्य सभक परस्पर प्रतिस्पर्धा विना कोनो डर वा रोक कें फूटि पड़ल। राजपुताना एहन अजायबघर बनि गेल जकर पिंजड़ा सभक सभ फाटक खोलि देल गेल होइक आ चौकीदारसभ हटा देल गेल होइक। सउँसे प्रदेश मे भीषण तामसिक प्रवृत्ति पसरि गेल। हँ, क्षतिपूर्त्ति स्वरूप कौखन कऽ भक्ति आ शौर्यक कोनो व्यक्तिगत उदाहरण देखबा लय भेटैछ जे एखनहुँ ओहि प्रदेशक लोकक रक्त सँ नहि विलुप्त भेल छल।" मुदा नैतिक ह्रास ततेक व्यापक आ जड़ीभूत भऽ गेल छल जे राजपूत लोकनिक जीवनक सभ क्षेत्र मे व्याप्त भीषण पाशविक प्रवृत्तिक प्रकोप नियन्त्रण सँ बहार भऽ गेल। "जमीन लय एहन कोनो कुकर्म नहि छल जे राजपूत सभ नहि कऽ सकैत छल। पिता पुत्रक, पुत्र पिताक हत्या कऽ सकैत छल। श्रेष्ठ सँ श्रेष्ठ कुलक स्त्री अपन विश्वासी सम्बन्धी कें ज़हर दऽ दैत छल। राजा अपन स्वामिभक्त मन्त्रीक प्राण लऽ लैत छल।"

अविचार आ विश्वासघातक एहि वातावरण मे एक गोट नव शक्ति प्रवेश कयल – मराठा जाति। ओकर मुख्य उद्देश्य छलैक राजपूत शासक सभ सँ कर असूल करब आ प्रदेश कें ध्वस्त-विध्वस्त कऽ अर्थ-संचय करब। "पाथर सँ पानि निकालबाक सतत प्रयत्न" करैत ओ सभ राजपूती गृह-युद्ध मे हस्तक्षेप करैत छल। १७५० ई. मे जयपुरक महाराज ईश्वरी सिंह जखन मराठा आक्रमण सँ अपन राजधानी कें बचयबा मे अपना कें अक्षम बुझलक तऽ आत्महत्या कऽ लेल। जदुनाथ ओहि करुण दृश्यक वर्णन करैत छथि: "ईश्वरीसिंह अपन भृत्य कें औषध बनयबाक उद्देश्य जना कऽ एक गोट जीबैत गहुमन साँप आ किछु संखिया अनबाक आदेश देल। आदेशक पालन भेल। बीच राति मे ओ कंठ मे विष ढारि अपना कें गहुमन सँ कटा लेल। ओकर तीनटा रानी आ एक गोटे प्रिय रखैल ओकरे सँगे जहर खा लेल आ राजमहलक ओहि नीरव कक्ष मे एकान्त मे पाँचो गोटे प्राण-विसर्जन कऽ देल। अठारह घंटा धरि मुर्दा सभ कें हटओनिहार आ दाह-संस्कार कैनिहार केओ नहि भेटलैक; केवल एक गोट टहुलआ कें ई रहस्य ज्ञात रहैक।"

दोसर खण्डक (१७५४ ई.-१७७१ ई.) विषयवस्तुक निर्देश स्वयं जदुनाथ एना करैत छथि :

> "ई खण्ड भारतीय इतिहासक घटनासंकुल अठारह वर्ष सँ सम्बद्ध अछि जकर प्रमुख विषय थिक दिल्ली पर कब्जा करबा लय अफगान-मराठा संघर्ष, जकरा बाद होइत अछि भरतपुरक जाट राज्यक आकस्मिक उदय आ ओहू सँ बेशी आकस्मिक दस वर्ष मात्र अभ्यन्तर ओकर पतन। एहि

अवधि मे एक बादशाह, अहमदशाह कें अपदस्थ कयल गेल आ आन्हर बना देल गेल; दोसर बादशाह आलमगीर दोसर केर हत्या आ तेसर, शाहजहाँ द्वितीय केर राजधानी सँ बारह वर्ष लेल निष्कासन आ एक आन कठपुतरी बादशाह, शाह आलम तृतीय केर दस मास मात्रक राज्यकाल, ई सभटा घटित भेल। प्रायः एहि सम्पूर्ण काल मे संत्रास पर संत्रास घटित होइत गेल, मुदा एकरा अन्त मे जे किछु भीषणतम सम्भव छैक से भऽ कऽ समाप्त होइत छैक आ लोक अपना कें प्रकाश मे पाबऽ लगैत अछि। सिख पंजाब मे अपन शासन जमा लैत छथि, अपना राज्य मे जनता कें आन्तरिक सुरक्षा दैत छथि आ विगत साठि वर्ष मे अज्ञात अभूतपूर्व कृषिक उत्थान करैत छथि। विपरीत दिशा मे, बिहार, बंगाल आ अवध मे इलाहाबाद धरि अँग्रेज द्वारा शान्ति स्थापित होइत अछि। एक संपूर्ण पीढ़ीक अनवरत अराजकता आ भयंकर प्राकृतिक विपदाक पश्चात् व्यापार, उद्योग-धन्धा आ कृषि अभूतपूर्व उत्कर्षक सीमा कें छुबऽ लगैत अछि। शीघ्र देशक संस्कृति जे साम्राज्यक राजधानी सभ मे खूनक नदी मे डूबि गेल छल, फेर सँ जीवित हयबा लेल उद्यत भऽ गेल आ विदेशी शासनक संरक्षण मे भारतीय-फारसी इतिहास-साहित्य इलाहाबाद आ बनारस, पटना आ कलकत्ता मे नव जन्म लेबाक क्रम मे आबि गेल। जखन ६ जनवरी, १७७२ ई. कें घोड़ा पर सवार शाह आलम अपन पूर्वजक राजधानी मे पैसल– जाहि रेखा पर ई खण्ड समाप्त होइत अछि– तऽ हमरा लोकनि ओहि समय मे पहुँचि जाइत छी जकरा तीने मासक अभ्यन्तर ब्रिटिश भारतक निर्माता वारेन हेस्टिंग्ज़क वायसराय-काल प्रारम्भ होइत अछि।

एहि खण्डक पाठक कें एक पर एक संत्रासपूर्ण कथा सँ मोन औनाय लगैत छैक : विश्वासघात, हत्या, निष्ठुरता आ नृशंसता, समूहक ढेहु जकाँ एक पर एक बढ़ैत अबैत छैक। सत्ताक भीषण संघर्ष सँ एहन दशा उत्पन्न होइत अछि जे बहुत किछु फ्राँसक रूसो द्वारा वर्णित 'प्राकृतिक अवस्था' सन प्रतीत होइत अछि।

आलमगीर द्वितीय पचपन वर्षक अवस्थाक मे गद्दी पर बैसाओल जाइत अछि। "अपन जीवनक पतझाड़ मे पाओल ई पद ओकरा वैभव आ आनन्दक अनुभूति मात्र करा सकलैक जाहि सँ ओ एतेक दिन धरि वंचित रहल छल।" मुदा सरकार दिवालिया भऽ गेल छल, ओकर सर्वशक्तिमान वज़ीर इमाद-उल-मुल्क "बादशाह आ ओकर परिवार कें भुखमरीक सीमा पर लऽ अनलकैक।" कौखन कऽ कतेको दिन धरि हरम केर भन्साघर मे चूल्हि नहि पजारल जाइक। दरबारी इतिवृत्त कहैत अछि जे "एक दिन शाहजादी सभ कें भूख बरदाश्त करब असम्भव भऽ गेलैक तऽ ओ सभ व्यग्र भऽ कऽ पर्दा छोड़ि कऽ महल सँ बहार भऽ गेलि आ नगर दिस बढ़ऽ लागलि, मुदा किलाक द्वार बन्द पावि आं सभ एक दिन आ राति

भरि पुरुष सभक आवास मे बसैल रहलि। पछाति ओकरा सभ कें बुझा-सुझा कऽ अपना महल मे घुरि जयबा लय राजी कराओल गेल"।

अभागल बादशाह कें गद्दी सँ उतारि देल गेल, तत्पश्चात् जे वज़ीर इमाद-उल-मुल्क ओकरा गद्दीनशीन कयने छल ओएह ओकर हत्या कऽ देल। तकरा बाद कठपुतरी बादशाह भेल शाहजहाँ द्वितीय। तेसर पानीपत-युद्धक बाद चतुर अफगान सरदार नजीब-उद-दौला अहमदशाह अब्दालीक प्रतिनिधि भऽ कऽ एक दशक धरि दिल्ली पर शासन कयलक। आलमगीर द्वितीयक जेठ बेटा अली गौहर (पछाति शाह आलम द्वितीय नाम सँ ज्ञात) कें इमाद-उल-मुल्क दिल्ली सँ भगा देने छलैक। बहुतो दिन बौअयला आ भायक चक्कर खयलाक बाद अन्त मे ओ मराठा सभक सहायता सँ १७७२ ई. मे दिल्ली घुरल आ बादशाही गद्दी पर बसैल।

दिल्लीक आधिपत्यक हेतु अफगान-मराठा संघर्ष मे तेसर पानीपत-युद्ध संकट-काल थिक। सात अध्याय मे ओहि परिस्थितिक चित्रण कयल गेल अछि जकर परिणति एहि युद्ध मे भेल। एक अध्याय मे केवल ओहि युद्धक वर्णन अछि। ई अध्याय सैन्य दृष्टि सँ इतिहास लेखन मे जदुनाथक पारंगत प्रवीणताक अन्यतम उदाहरण थिक। अपना मे इतिहासकार आ रणनीतिज्ञ दुहूक भूमिका कें एकाकार करैत ओ दुहू प्रतिपक्षीक शक्ति आ कमजोरी सभक विश्लेषण करैत छथि आ मराठा लोकनिक पराजयक सटीक कारण सभ प्रस्तुत करैत छथि। ओ नक्शा द्वारा पानीपतक स्थलाकृति कें स्पष्ट करैत छथि। ओ दू गोट रेखाचित्र द्वारा दू विभिन्न समय मे (पूर्वाह्न दस बजे आ अपराह्न २.३० बजे) दुहू फौजक अवस्थितिक निर्देश करैत मराठा सभ कोना कऽ वड़े वेग सँ विध्वंस दिस बढ़ैत अछि से स्पष्ट करैत पाठक कें ओहि युद्धक प्रत्यक्षदर्शी बना दैत छथि।

जदुनाथक अनुसार मराठा सभक हेतु पानीपत "फ्लोडेन फील्ड' जकाँ एक राष्ट्रव्यापी दुर्घटना छल। महाराष्ट्रक कोनो एहन घर नहि छल जे अपन कोनो ने कोनो लोक लेल शोक नहि मनओने हो; अनेको परिवार कें तऽ अपन प्रधाने व्यक्तिक निधन पर शोक-विलाप करऽ पड़लैक। नेता सभक पूरा पीढ़ी एकहि चोट मे मेटा गेल।" ई एक अद्वितीय सैनिक दुर्घटना पर एक संयत इतिहासकारक टिप्पणी थिक। मुदा जदुनाथ तऽ परम्परागत सीमा कें पार कऽ जाइत छथि आ प्रच्छन्न रूपें विवरणक ओहि क्षेत्र मे प्रवेश कऽ जाइत छथि जे एहि घटनाक त्रासदीपूर्ण कारुणिकता कें स्पष्ट करैत अछि। पेशवा बालाजी बाजीरावक ज्येष्ठ पुत्र विश्वासराव कें ओकर माता, ओकर पित्ती आ पानीपत अभियानक नेता सदाशिवराव भाऊक जिम्मा सौंपि देने छलि। भाऊ के खबरि भेलनि जे सवा दू बजे अपराह्न मे हुनक भातिज कें गोली मारि देल गेल। ओ आदेश देल जे ओकर शव कें ओकर सवारीबला हाथी पर राखि देल जाय आ तखन ओकरा देखबा लय स्वयं अयलाह :

"ओहि पर राष्ट्रक दुलारू मात्र सत्रह वर्षक नवयुवक पड़ल छल। ओकर टाङ हाथीक पार्श्व भाग मे लटकि रहल छल। युद्धक बाद जखन ओकर शरीर मराठा शिविर मे आनल जा रहल छल मृत्युओ मे ओकर सौम्य सुन्दर रूप देखि दुर्रानीक भयंकर सैनिक दलक मुँह सँ ओकरा प्रति वाहवाहीक ध्वनि फूटि पड़लैक।

अपन भातिज पर अन्तिम दृष्टिपात कऽ भाऊ पुनः एक बेर युद्धक्षेत्र दिस उन्मुख भेलाह। एकटा बिलखैत माय द्वारा अपना जिम्मा मे सौंपल अमूल्य वस्तु कें गमा कऽ ओ पूना मे अपन मुँह नहि देखा सकैत छलाह। मृत्युक समस्त भयंकरता आब हुनक लेल शेष भऽ गेल छलनि कारण हुनका लेल जीवनक कोनो टा अर्थ नहि रहि गेल छलनि। विजय प्राप्ति तऽ हुनका शक्ति सँ बाहरक बात भऽ गेल छलनि मुदा वीरगति नहि।

ओहि सम्पूर्ण अपराह्न मे ओ मृत्युक बाट तकैत रहलाह मुदा मृत्यु जेना हुनका टारि रहल होनि। जखन ओ स्वप्नक चित्र लोक जकाँ मैदान मे घूमि रहल छलाह तखन हुनक जगमगाइत वस्त्र आ रत्न सभक लोभ मे पाँच दुर्रानी घोड़सवारक दल हुनका घेरि लेलकनि आ चिकरि कऽ हुनका अपन प्राण बचबऽ लेल आत्म-समर्पण करऽ कहलकनि। मुदा ओ अपन प्राण तऽ बचबऽ नहि चाहैत छलाह। ओ ओकरा सभ कें कोनो उत्तर नहि देल। तखन अफगान लुटिहारा सभ हुनका पर टूटि पड़ल। आहत सिंह अन्त मे लड़बा लय प्रस्तुत भऽ गेल आ आक्रमणकारी महक तीन वा चारि कें अपन भाला सँ गाँथि देल, तखन ओ स्वंय मारल गेलाह। हुनक मस्तक काटि कऽ हत्यारा सभ चल गेल। एहि प्रकारें अपन कीर्त्ति आ अपना जातिक साम्राज्यवादी स्वप्नक समाधि पर सदाशिवराव भाऊ अपन प्राण विसर्जन कयल।"

हमरा लोकनि अपन आँखिक सोझाँ निरवलम्ब, भालाक चोट आ तोपक गोला सँ विकलांग भेल, गत दू मासक चिन्ता सँ जर्ज्जर अपने आशाक सर्वनाश लेने एक व्यक्ति कें अपने नोतल अपन मृत्यु दिस नङडाइत बढ़ल जाइत देखैत छी। मृत्युए टा ओकरा अपन अवर्णनीय दुर्गति सँ मुक्ति दऽ सकैत छलैक।

जदुनाथक विचार मराठा लेखक लोकनि सँ मूलतः भिन्न छनि। ओ लोकनि "पानीपत-युद्धक परिणाम कें मराठा सभक हेतु कोनो दीर्घकालिक दुर्घटना नहि मानि एकरा न्यून महत्त्व दैत छथि।" मुदा हिनका दृष्टिएँ "ओएह महाविपदा मराठा सभक हेतु ओकर चिर आकांक्षित स्वर्णभूमि, बिहार आ बंगाल, अवध आ पंजाबक द्वार बन्न कऽ देलक। विदेशी आक्रमणकारीक विरोध करबा मे मराठा सभक असफलता ने केवल ओकरा सभक 'साम्राज्यवादी स्वप्न' कें भंग कऽ देलकैक,

प्रत्युत भारतीय जगत कें ई विश्वास करा देल जे मराठा सभ एतेक अशक्त अछि जे असल संकट मे ओकर मित्रताक कोनो टा भरोस नहि कयल जा सकैछ। ओकरा सभक अपने घर मे सदाशिवराव भाऊ, विश्वसराव, महान् नेता आ सुयोग्य दीवानी पदाधिकारी सभक मृत्यु आ छौ मास पछाति पेशवा बालाजीरावक देहान्त भेने मराठा इतिहासक सभ सँ कलंकित पात्र रघुनाथरावक अनुचित मनसूबाक हेतु सर्वथा सुगम मार्ग उन्मुक्त भऽ गेलैक।" फलस्वरूप मराठा इतिहास मे "हत्या, आत्महत्या आ किशोर सभक मृत्युक थीब्स देशीय संत्रासक एक गोट नव अध्याय प्रारम्भ भेल।" मुदा "दिल्लीक इतिहासकार" जदुनाथ दक्षिणक एहि घटनाक्रम सँ सम्बद्ध नहि छलाह।

भरतपुर प्रदेशक हिन्दू जाट सभ "अठारहम शताब्दीक दू गोट सभ सँ पैघ भारतीय राजनेता बदल सिंह आ सूरजमलक नेतृत्व मे एक शक्तिशाली राज्य स्थापित कयलक। ई एकटा विशिष्ट किन्तु अल्पकालीन उपलब्धि छल। जदुनाथ विस्तृत विवरणपुरस्सर एकर कथा कहैत छथि; विवरण प्रासंगिक सेहो अछि। ओ सूरजमलक युद्ध कौशल, "राजनीतिक व्यवस्था करबाक जन्मजात क्षमता," अपन प्रजाक भौतिक सुख-सुविधा आ कल्याण मे बेश रूचि राखब आ संयत व्यवहारक हेतु ओकर भूरि-भूरि प्रशंसा करैत छथि

पंजाब मे सिख सभ अहमदशाह अब्दाली कें पाछाँ हटबाक हेतु बाध्य कऽ देलक आ अपन शासन स्थापित कऽ लेलक। आव पश्चिमोत्तर प्रान्त अफगान आक्रमणकारी सभक लेल एहन क्षेत्र नहि रहि गेल जतय सँ कूदि कऽ ओ सभ एहि देश मे पैसि सकय। राजपुताना मराठा सभ लय लूट-पाट करबाक इलाका बनि कऽ रहि गेल। अठारहम शताब्दीक मध्य मे भारत मे यूरोपीय युद्ध-कौशलक आगमन होमऽ लागल। ताहि दृष्टिएँ राजपूत सभ अपन शस्त्रास्त्र आ युद्ध-पद्धति मे सुधार नहि कऽ सकल। आत्मरक्षा मे असमर्थ राजपूत सभ हफीमक धूम्रपान करबा मे आ अपना "गौरव, गरीबी आ गज-गज भरिक नाम वंशावली" कें जोगयबा मे अपन समय बितबैत छल।

तेसर खण्ड (१७७२ ई.-१७८८ ई.) मे शाह आलम द्वितीय केर शासन कालक प्रथम भाग समाविष्ट अछि। एहि कालक अन्त एक रक्तरंजित त्रासदी मे होइत अछि। ई बादशाह कें मात्र अपन छाया मे परिणत कऽ दैत अछि आ शासन-तन्त्र कें स्थायी प्रतिनिधि-व्यवस्था कें हस्तान्तरित कऽ दैत अछि। एहि खण्डक "प्रमुख पात्र" महादजी सिंधिया छथि जेना पूर्व खण्डक "प्रमुख व्यक्ति" अहमदशाह अब्दाली छल। एकर लेखन मे अधिक समय आ असाधारण ऊर्जाक आवश्यकता छल, कारण जाहि ऐतिहासिक स्रोत-सामग्री पर ई आधारित छल ओ अत्यन्त विस्तृत, विविध आ जटिल छल।" जदुनाथ कहैत छथि, "वृत्तान्तक एको पृष्ठक प्रणयन करबा सँ पूर्व हमरा सहस्रो संक्षिप्त मराठी संवाद सभक तिथि सभ कें सुनिश्चित

कऽ लेबाक छल, ओहि सभक अस्पष्टता कें सुस्पष्ट करऽ पड़ैत छल आ फारसी पाण्डुलिपिबला स्रोत सामग्रीक पाठ आ क्रम कें परिशुद्ध करबाक छल।" एहि कठिन परिश्रमक फलस्वरूप पाठक आब ऐतिहासिक सामग्रीक एहि जटिल आ सघन वन मे किछु प्रकाश-किरणक दर्शन कऽ सकैत अछि। जखन जदुनाथ एहि खण्डक समापन कऽ रहल छलाह हुनक अठहत्तरिम वर्ष रहनि।

जखन शाह आलम द्वितीय दीर्घ प्रवास आ अनेको भाग्य परिवर्त्तनक उपरान्त मराठालोकनिक संरक्षण मे दिल्ली घुरल तऽ ओकर चरित्र नीक भवितव्यता नेने बूझि पड़ैत छल। मुदा एहन संसार कें जे राजनीति सँ कतेको गुना अधिक नैतिक स्तर पर विध्वस्त भऽ चुकल छल, ओ नहि सुधारि सकल। ओकरा कोनो "विश्वासी मित्र वा येग्य सहायक" नहि भेटलैक। संगक लोकसभक एकेटा उद्देश्य छलैक जे "वैध बादशाहक रूप मे ओकर प्रतिष्ठाक उपयोग अपन व्यक्तिगत स्वार्थ साधन मे करब।" "एहन घृणित वातावरण, मे जे कतोक युग सँ पतनोन्मुख समाज आ राज्यक जड़ता सँ विकृत भऽ गेल छल, कोनो देवतो किछु नहि कऽ सकैत छल।"

"१७७२ ई. क जनवरी मास मे शाह आलम द्वितीयक सम्मुख एक खंड-विखंड भेल साम्राज्य कें फेर सँ जीतबाक काज छलनि; से एहन स्थिति मे जखन खजाना खाली आ प्रबल हड़पनिहार लोक सभ चारू कात सँ घेरने छल।" परिस्थिति ओकरा एकक बाद दोसर प्रतिशासकक आश्रय लेबाक हेतु बाध्य करैत गेलैक; मुदा बादशाहीक पुरना प्रतिष्ठा आ शक्तिक पुनः प्राप्ति असम्भव छल। जदुनाथक अनुसार, ओकर आ ओकर घरानाक जे अन्तिम दुर्दशा भेलैक तकरा हेतु ओकर अपन "चरित्र मात्र" उत्तरदायी छलैक। ओ "अत्यन्त अस्थिर आ कमज़ोर लोक छल.....लक्ष्यक प्रति दृढ़ता आ कार्य-क्षमताक ओकरा मे अभाव छलैक.....हफीमक दुर्व्यसन ओकर संकल्प-शक्तिक संहार कऽ देने छलैक।"

अहमदशाह अब्दालीक घनिष्ठ संगी आ एक दशक धरि दिल्लीक शासक रोहिला सरदार नजीब-उद-दौला क पोता गुलाम कादिर १७८८ ई. मे दिल्ली पर कब्जा कऽ लेल। शाह आलम द्वितीय ओकरा चाङुर मे फँसि गेल। ई निर्मम अफगानी अभियानी अपना "कें हिन्दुस्तानक शाही घरानाक दैव द्वारा नियुक्त सफाई कैनिहार माध्यम बुझैत छल। अपन मुख्यतः अफगानी कबीला क किछु लोकक ज़ोर पर ओ 'ईश्वरक अतिशाप' (क़हर-ए-ख़ुदा) हयबाक दावा करैत छल। खुदाक ई स्वनियुक्त प्रतिनिधि जाहि तरहें शाही जनाना सभकें बहुतो दिन धरि घोर यन्त्रणा आ अपमानक शिकार बनओलक से ओकर दिल्लीक लूट-पाट कें इस्लामक रक्तरंजित इतिहासक आन प्रत्येक नृशंस काण्ड सँ भिन्न बना दैत अछि।" एहि प्रकारक अभूतपूर्व बर्बरतापूर्ण दिल्लीक लूटि सँ जे नगद आ वस्तुजात ओ एकट्ठा कयल से अनुमानतः पचीस कोटि रुपैयाक धन छल।

शाहआलम द्वितीय कें जे दुर्दशा भेलैक ताहि सँ ओ हत्याराक हाथें मरि जाइ लय आर्त्तनाद कऽ उठल, मृत्यु कें सुखद छुटकारा जकाँ स्वागत कयलक। गुलाम

क़ादिर ओकरा गद्दी सँ उतारि देल आ पूर्व बादशाह अहमदशाहक बेटा बिदर बख्त कें गद्दीनशीन कऽ देलक। ओ विदर बख्त बीस वर्ष सँ अधिक समय धरि कैद मे रहि चुकल छल। मुदा अपदस्थ मात्र कयने एहि अफगान प्रतिशोध कें सन्तोष नहि भेलैक :

> "गुलाम क़ादिर शाह आलमक आँखि मे सुइया भोंकबा देल। दोसर दिन अकल्पनीय नृशंसता सँ दरबारक चित्रकार कें बजा, अपन ओहि कालक चित्र बनयबाक आदेश देल जखन ओं अपन अधमरू स्वामीक छाती पर बैसि कऽ कटार सँ ओकर आँखिक पुतरी कें काटि रहल छल। ओकर दोसर आँखि कन्दहारी खाँ द्वारा बहार कऽ लेल गेलैक, ओकर तीन गोट नोकर-चाकरक हत्या कऽ देल गेलैक आ दूटा भिश्ती कें गुलाम क़ादिर अपना तरुआरि सँ आहत कऽ देल जं कंओ नुकाइयो कऽ शाहक कष्ट-निवारण नहि कऽ सकय।"

ई सरल संयमित शब्दक प्रयोग स्थितिक कारुणिकता कें – महान् शाही परम्पराक प्रतिनिधित्व कैनिहार ओंहि गद्दीनशीन कठपुतरीक असहाय अवस्थाक पीड़ा कें उजागर करैत अछि। ई घोर अत्याचारी स्वयं एक गोट गरीब निरक्षर अफगानक पौत्र छल जे रोज़ी-रोटी तकैत हिन्दुस्तान आयल छल। एखनहुँ तैमूरी शाही घराना कें "सभ वर्गक जनता सम्मान करैत छल, मुदा जे एकटा प्रतिशासकक बेटा आ दोसर प्रतिशासकक पोता मात्र छल आ स्वयं पदेन प्रतिशासक मात्र छल से अपन वैध स्वामी पर एहन अकथनीय जुलुम ढाहबा मे कनेको आत्मग्लानिक अनुभव नहि कयल।"

शीघ्रे ओ निर्मम अफगान स्वयं एक निष्ठुर दण्डक शिकार बनल। महादजी सिंधिया दिल्ली फतह कऽ शाहआलमक प्रतिशासक बनि गेल आ गुलाम कादिर कें बन्दी बनओलक। आन्हर बादशाह ओकरा लिखि पठओलक, "यदि रोहिलाक आँखि बहार कऽ ओकरा नहि पठाओत तऽ ओ गद्दी त्यागि कऽ भिखारिक भेष मे मक्का चल जायत। तखन प्रतिशासक आ प्रबन्धक दुहू गोटे आम जनताक अपमानक पात्र हयत।" अपना स्वामीक दवाब मे पड़ि महादजी सिंधिया गुलाम कादिरक आँखि निकालि संगहि ओकर नाक-कान सेहो काटि एकटा पेटी मे धऽ ओकरा पठा देल। बादशाह ओहि पेटी मे "विकट वस्तु" कें टो कऽ देखलक आ अनुभव कयलक जे ओकरा प्रति अन्याय कैनिहारक काजक अनुरूप प्रतिशोध लऽ लेल गेलैक।

जदुनाथक कथन अछि, "इस्लाम यहूदी धर्मक उपोत्पत्ति थिक। एहि रूपें हजरत मूसाक 'आँखिक बदला आँखि' लऽ लेबाक नियमक पालन भेल। मुदा एहि विकट कथाक अन्त एतहि नहि होइत अछि। गुलाम क़ादिरक हाथ-पैर काटि देल गेलैक;

तखन ओकर प्राण लऽ ओकरा गाछ पर टाङि देल गेलैक ; तखन "मूड़ी काटल ओ धड़ जखन उनटा कऽ गाछ पर टाङि देल गेलैक तऽ एकटा कारी कुकुर जकर आँखिक चारू कात उज्जर धारी सभ रहैक ओहि गाछक निचाँ आबि कऽ बैसि गेल आ ओकर कटल गरदनि सँ चुबैत शोणित कें जीह सँ चटैत चल गेल; यद्यपि बेर-बेर पाथर सँ मारि कऽ ओहि पशु कें भगाओल जाइक, तथापि ई वीभत्स भोजन करबा लय ओ फेर-फेर घुरि अबैत छल। दू दिनक बाद ओ मुर्दा आ कुकुर दूनू एना अदृश्य भऽ गेल जे फेर केओ ओकरा कहियो नहि देखि पओलक।"

एक सन्तुलित इतिहास मे ई बीभत्स विवरण सभ अप्रासंगिक लागि सकैत अछि मुदा सोझ-साझ कथन यथा "गुलाम कादिर शाह आलम कें आन्हर कऽ देल आ महादजी सिंधिया गुलाम कादिर कें मरबा देल", पाठक कें किछु अन्दाज नहि करा सकैत छल जे अठारहम शताब्दीक भारतीय राजनीति कतेक निचाँ धरि पतित भऽ चुकल छल। शासक आ अभिजात वर्ग दुहूक नैतिक पतनक प्रायः अति भऽ चुकल छलैक। ई मोगल-साम्राज्यक अधःपतनक कारण आ परिणाम दूनू छल। जदुनाथ पाठक कें एहि महाविभीषिकाक पूरा खोराक नहि देबऽ चाहैत छथि। ओ शाही परिवारक स्त्रीगणक संग गुलाम कादिरक जघन्य व्यवहारक विवरण नहि उपस्थित करैत छथि जाहि सँ समकालीन फारसी इतिहासक तैंतीस फुलस्केप पन्ना भरल अछि, किएक तऽ ओ कहैत छथि, "कोनो आधुनिक इतिहासकार अपन पाठक कें जिबैत नरक-यन्त्रणाक सम्पूर्ण दृश्यावली दने नहि लऽ जा सकैछ।"

गुलाम कादिरक जीवनक अन्तिम दिनुका एहि "दारुण भयंकर दृश्यक सँगे भारत मे तैमूरी सम्राट सभक इतिहासक सर्वाधिक संत्रासपूर्ण नाटक शेष होइत अछि। शाह आलम अपन जीवनक शेष वर्ष महादजी सिंधिया, ओकर उत्तराधिकारी दौलतराव सिंधिया आ अन्ततः ईस्ट इन्डिया कम्पनीक संरक्षण मे शान्तिपूर्वक बिताओल।

गुलाम कादिरक पतनक संग "राजमहलक दारुण त्रासदी आ सामूहिक हत्या सभक क्रम" समाप्त होइत अछि। नहुँए-नहुँए, अनजान गतिएँ साँस लैत, पक्षाघातक मारल देह जकाँ बिछाओन पर पड़ल मोगल साम्राज्य लाल किलाक पुरना देवाल सभक भीतर छायावत् अपन अस्तित्व रखने रहल।

उत्तर भारत मे मराठा शक्तिक पुनरूत्थान एक गोट मराठा सरदार, महादजी सिंधियाक उपलब्धि छल ने कि पूनाक पेशवा शासनक। मराठा सभक कमजोरीक कारण छल ओकर सभक आन्तरिक कलह, पेशवा माधवराव प्रथमक असामयिक निधन एवं रघुनाथरावक अपन विशेष कोटिक मनसूबा जे प्रथम अँग्रेज-मराठा युद्ध कें प्रेरित कयल। अही युद्ध मे महादजी सिंधियाक भूमिका ओकरा मराठा गतिविधि मे प्रमुख स्थान देबाक मार्ग प्रशस्त कयल। ई सभ गतिविधि जदुनाथक

इतिवृत्तक परिधि सँ बाहरक विषय अछि, कारण एकर कोनो प्रत्यक्ष प्रभाव दिल्लीक गतिविधि पर नहि पड़ैत छलैक। १७८४ ई. मे उत्तर भारतक राजनीति मे महादजी सिंधियाक प्रमुख भूमिकाक प्रारम्भ भेल। शाह आलमक वज़ीर सभक आपसी झगड़ाक चतुरता सँ लाभ उठा कऽ महादजी साम्राज्यक प्रतिशासक बनि गेल अर्थात् ओ बादशाहक नाम पर दिल्लीक शासन करबाक आ जागीरदार सभ पर कार्रवाई करबाक अधिकार प्राप्त कऽ लेलक। बादशाह पर गुलाम क़ादिरक विजय थोड कालक रहलैक।

मोगल साम्राज्यक विध्वंस पर जे नब राजनीतिक प्रभाव सभ उभरि कऽ आयल ताहि मे सूरजमलक उत्तराधिकारी सभक अयोग्यता लऽ कऽ जाट जाति कमजोर पड़ि गेल। शाही वजीर सभक प्रबलताक प्रतिरोध करबा मे ओ सभ असमर्थ छल। दोसर दिस काबुल दिस सँ अफगान सभक आतंक नहि रहने सिख सभ सतलजक एहि पारक प्रदेश पर कब्जा जमा लेल। मुदा ओकर सभक सैन्य-व्यवस्था आ राजनीतिक संगठन कोनो ठोस राज्यक स्थापनाक हेतु नितान्त अपर्याप्त छल।

राजपुताना मे आशाक कोनो किरण नहि छल ; ओतय नैतिक आ भौतिक सभ प्रकारक अधोगति मन्द गतिएँ बढ़ि रहल छल। जयपुरक शासक एहन दुर्बुद्धि छल जे ओकर मूर्खता मनमौजी हिंसाक क्रियाकलाप मे फूटि पड़ैत छलैक। मानसिंह आ मिर्जा राजाक ई उत्तराधिकारी राजा जयसिंह "भावी पतित अवधक नवाब सभक पूर्वाभास दैत माउगक वस्त्र पहिरि-ओढ़ि पयर मे घंटी बान्हि अन्तःपुर मे नाच कयल करय।" जखन महादजी सिंधिया जयपुर सँ शाही खिराज असूल करबाक प्रयास कयल तऽ तकर परिणति लालसोट अभियान मे भेल जाहि मे ने राजपूत ने मराठा केओ "पूर्ण विजय" पाबि सकल।

चारिम खण्ड (१७८६ ई.-१८०३ ई.) ओहि महान् साम्राज्यक अवसान प्रस्तुत करैत समाप्त होइत अछि जकर अध्ययन अर्धशताब्दी पूर्व जदुनाथ प्रारम्भ कयने छलाह। मेरता आ पाटन मे राजपूत सभ पर आ मराठा प्रतिद्वन्द्वी तुकोजी होलकर पर महादजी सिंधियाक विजय ओकर शक्तिक चरम उत्कर्ष विन्दुक सूचक थिक। १७९२ ई. मे ओ उत्तर भारत छोड़ि कऽ पूना चल गेल जतय माधव राव नारायणक नाम पर सर्वशक्तिशाली मन्त्री नाना फड़नवीस शासन करैत छल। ओ १७९४ ई. मे दिवंगत भेल। "ओकर चिताक भस्मक सँगहि भारतवर्षक मे मराठा शक्ति स्थापनाक आशा सेहो सदा-सर्वदाक हेतु विलीन भऽ गेल।" अगिला दशक मे घोर अनर्थकारी परिवर्त्तन सभ मराठालोकनि कें अभिभूत कऽ देल ; महादजीक बाद दौलतराव सिंधियाक राज्यरोहणक प्रति हुनक विधवा सभक आपत्ति, पेशवाक अकाल निधन आ बाजीराव द्वितीयक राज्यारोहण ; तुकोजी होलकरक बेटा सभक बीच उत्तराधिकारक संघर्ष ; नाना फड़नवीसक पटु राजनीतिक भूमिका ; दौलतराव सिंधिया आ जसवन्त राव होलकरक बीच प्रतिस्पर्द्धा ; बाजीराव द्वितीय द्वारा

अँग्रेज सभक प्रभुत्व स्वीकार करब (बैसिनक सन्धि), दोसर अँग्रेज-मराठा युद्ध। जदुनाथ ओहि सभ परिस्थिति सभक दिग्दर्शन करबैत छथि जे मराठा शक्ति कें विघटित कयलक। मुदा ओ एकर विस्तृत वर्णन सँ बचैत छथि, कारण हुनक दृष्टि मोगल साम्राज्य पर जमल छनि। दक्कनक गतिविधि हुनक वृतान्त मे ओतबे दूर धरि प्रवेश करैत अछि जतबा दूर धरि ओ उत्तर भारतक राजनीतिक स्थिति कें प्रभावित करैत अछि। सिंधिया परिवारक उत्तरी भारतक राज्यक्षेत्र आ तकर संलग्न प्रदेश "अस्थायी आ अनिश्चित दशा मे छल, ओकर सीमा निरन्तर बदलैत रहैत छल आ ओकर प्रशासन आक्रमण, विद्रोह आ लूट-पाट सँ बाधित होइत रहैत छल।" सिख "मिस्ल सभ" अपना मे लड़ैत रहैत छल। कुशल आ साहसी यूरोपीय योद्धा जॉर्ज टॉमस हरियाणा मे एक गोट स्वतन्त्र रियासति बना लेलक। दौलतराव सिंधियाक प्रधान सेनापति जेनरल पेरों दोसर अँग्रेज-मराठा युद्ध मे अपन स्वामीक संग विश्वासघात कयलक।

ओहि युद्ध मे दौलतराव सिंधियाक पूर्ण पराजय मोगल साम्राज्यक अन्त कऽ देल (३० दिसम्बर, १८०३ ई.)। विस्तृत क्षेत्र सभक आत्म-समर्पणक अतिरिक्त ओ बादशाह शाह आलम द्वितीय पर सँ अपन सभटा दावा हटा लेल ; ओ महादजी सिंधियाक मृत्यु काल सँ ओकर संरक्षण मे रहैत आयल छल।"अकबर आ औरंगज़ेबक शाही सिंहासन पर बैसल ओ आन्हर बूढ़ छायाा मात्र सनक व्यक्ति मात्र अपन रक्षा आ जीवन-निर्वाहक भिक्षा मङैत सभ तरहें अँग्रेज सभक संरक्षणक आधीन भऽ गेल।" नब व्यवस्थाक तहत "दिल्लीक बादशााह अँग्रेजक प्रजा बनि गेल।" जदुनाथ एहि विषमता कें एना कऽ इंगित करैत छथि :

> जखन महादजी सिंधिया पहिल बेर शाह आलमक दर्शन करऽ गेल छल तऽ शाही गद्दीक सोझाँ ओ साष्टांग प्रणिपात कयने छल आ बादशाहक पयर पर अपन माथ टेकने छल.....मुदा कोनो अँग्रेज गर्वनर जेनरल दिल्लीक बादशाह सँ साक्षात्कार करऽ नहि आयल ; अपन कर्यालय प्रारम्भ करबाक पूर्व ओकरा सभ मे सँ ककरो बादशाहक नियुक्ति पत्र प्राप्त करबाक कोनो आवश्यकता नहि भेलैक.....ने तकर बादे दिल्ली जिला आ लाल किलाक कोनो अँग्रेज प्रशासक कें तकर जरूरति पड़लैक। वस्तुतः अँग्रेज सभ आब बादशाहक अभिभावक आ संरक्षक भऽ गेल छल आ दिल्लीक गद्दीक सभटा शोभा-सुन्दर आ प्रदर्शन छल मात्र एक गोट चिरनाबालिग व्यक्ति जे संकल्प आ गति सँ विहीन अँगरेज सरकार द्वारा नियन्त्रित-संरक्षित छल.....आब दिल्लीक बादशाह ने अँग्रेजी ईस्ट इन्डिया कम्पनीक अधिराट् छल ने इंगलैण्डक राजाक मित्र रूपें अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे ओकर समकक्षे छल, की ओकरा मातहत छल ; ओ एहनो कोनो अधीनस्थ राजा जकाँ नहि छल जे ब्रिटिश प्रभुसत्ता मानैत अपन आन्तरिक सत्ता कायम रखने हो।.....दिल्ली

> धरि मे 'शाहक अधिकार मात्र एक गोट एहन खिस्सा-पिहानी जकाँ छल जे ककरो किछु नीक-अधलाह करबा मे अक्षम छल; ओकरा ने कोनो अपन कर-व्यवस्था सँ आमद रहि गेल छलैक, ने कोनो न्यायालय आ ने कोनो फौजे।

अन्तिम अध्याय मे जदुनाथ मोगल-साम्राज्यक ऊपर आ सँगहि भारतवर्ष पर आधिपत्य जमयबाक मराठा जातिक विफलताक मूल कारण "भारतीय समाजक आन्तरिक मर्म विकृति" देखबैत छथि। भारत सैनिक आ राजनीतिक दूनू दृष्टिएँ असहाय भऽ चुकल छल :

> देश अपन रक्षा नहि कऽ सकैत छल : राजसत्ता भ्रष्ट आ जड़ भऽ गेल छल; अभिजात वर्ग दूरदर्शिताविहीन भऽ कऽ स्वार्थ मे डूबि गेल छल ; भ्रष्टाचार, कौशलक अभाव आ विश्वासघात जनसेवाक प्रत्येक विभाग कें कलंकित कऽ देने छल। एहि अधःपतन आ अव्यवस्थाक स्थिति मे देशक अपन साहित्य, कला-कौशल, एतेक धरि जे असल धर्म पर्यन्त विनष्ट भऽ गेल छलैक।

जदुनाथ मोगल आ मराठा साम्राज्यक मृत्यु पर कोनो शिकाइत नहि करैत छथि, कारण "ओकर लोक कल्याण करबाक शक्ति शेष भऽ गेल आ आधुनिक युग आनल गेल। भारतीय पुनर्जागरण– भारतभूमि पर आधुनिक सभ्यता आ विचारक उदय– तखनहि सम्भव भेल जखन ओहि सिद्धान्त-सूत्रक आविष्कार भेल जकरा द्वारा भारत अपना अतीतक तिरस्कार कयने विना बाहरी दुनियाक आधुनिक सभ्यताक धारा मे अपना कें पूर्णतया मिला सकय। .....राम मोहन राय प्रथम व्यक्ति छलाह जे एहि मूल सिद्धान्त धरि पहुँचलाह ; ई छल भारतीय पुनर्जागरणक मूल– ई विश्वास जे आधुनिक सभ्यता हिन्दू धर्मक केन्द्रीय तत्त्वक विरोधी नहि थिक आ दुहू मे बाह्य रूप-रंगक भिन्नता आकस्मिक मात्र अछि। दुहू सभ्यताक समन्वय हिन्दू धार्मिक कर्मकाण्डक अनुगमन सँ सम्भव नहि। आधुनिक पाश्चात्य आ प्राचीन पूर्वात्यक संगमक आधार तऽ ओहि मानवतावादी दर्शन मे निहित अछि जे सर्वव्यापक परमात्मा अर्थात् सर्वेश्वरवाद सँ समुत्पन्न अछि।

मोगल साम्राज्यक सत्रहम आ अठारहम शताब्दीक दीर्घ इतिहासक आद्योपान्त अनुशीलन कयलाक उपरान्त जदुनाथ ओकर पतन मे "दैवी न्यायविधान"क दर्शन करैत छथि। एहन व्यवस्थाक बड़े विलम्ब सँ अवसानक हेतु हुनका आँखि मे कनेको नोर नहि छनि, कारण ओ भारतवर्षक आगाँ प्रगतिक मार्ग मे अवरोध बनि गेल छल।

मोगल साम्राज्यक इतिहासकार एहि बात कें नहि बिसरि सकैत छथि जे मोगल शासन-व्यवस्था "स्वभावतः सैनिक शासन छल।" जदुनाथ कहैत छथि, "मोगल शासनक प्रत्येक अधिकारी कें पहिने सेनाक सूची मे नाम दर्ज कराबऽ पड़ैत छलैक.....प्रत्येक असैनिक कर्मचारी, धार्मिक विधानक न्यायाधीश, डाक, उत्पाद शुल्क वा सीमाशुल्क अधीक्षक, उच्च कोटिक लिपिक आ लेखापालो सभ मनसबदार अर्थात् सेनाक सदस्यक स्तर पाबि जाइत छल।" सैन्यहि द्वारा साम्राज्यक शासन आ विस्तार कयल जाइत छल। स्वाभाविके छल जे इतिहासकार कें युद्धभूमि मे सेनाक क्रियाकलापक परीक्षण करऽ पड़ैत छलैक।

जदुनाथक प्रमुख इतिहास-ग्रन्थक कोनो पाठक विभिन्न युद्ध-अभियाानक हुनक विस्तृत एवं सतर्क वर्णन आ विश्लेषण सँ प्रभावित भेने विना नहि रहि सकैत अछि। आन कोनो इतिहासकार, से ओ अँग्रेज हो वा भारतीय, मोगल इतिहासक एहि पक्ष पर एतेक ध्यान नहि देने छल। तेसर पानीपत-युद्धक वर्णन 'मोगल साम्राज्यक पतन' केर द्वितीय खण्ड मे एक गोट कड़ा सैनिक भिड़न्तक उत्कृष्ट अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि। मोगल, मराठा आ राजपूत सैनिक व्यवस्थाक गुण-दोषक हुनक मूल्यांकन आ ओकरा सभक राजनीतिक भाग्य पर तकर प्रभावक हुनक प्रस्तुतीकरण अतिशय ज्ञानवर्द्धक अछि। अठारहम शताब्दीक उत्तरार्द्ध मे, महादजी सिंधिया कें छोड़ि कऽ भारत कोनो सैनिक नेता उत्पन्न नहि कऽ सकल। जदुनाथ कहैत छथि, ".....कोनो राष्ट्रक सर्वोच्च कौशलक परीक्षा युद्ध मे होइत अछि। ताहि हेतु अपन देशवासी विदेश सभक नेतृत्व सहर्ष स्वीकार करऽ लागल, भनहि ओ विदेशी नकलचीये किएक ने हो.....राजा सभ अपन सेनाक नियन्त्रण फ्राँसीसी आ पुर्तगाली वर्णसंकर, स्कूल सँ छीह काटि पड़ैनिहार यूरोपियन छौंड़ा सभ.....अशिक्षित यूरोपीय नाविक वा नौसैनिक ; एतेक धरि जे गोआक विशुद्ध कारी भारतीय ईसाई सभक हाथ मे सौंपऽ लागल। राष्ट्रीय क्षमताक सर्वोच्च परीक्षण मे भारतक असफलते एकर परतन्त्र हयबाक पूर्व पीठिका छल।

जदुनाथ सैनिक गतिविधिक कोनो नौसिखुआ कथाकार आ वर्णनकर्त्ता वा ऐतिहासिक अभिलेख आ समाचार-संवाद सभक संक्षिप्त विवरणमात्र देनिहार साधारण लेखक नहि छलाह। ओ वस्तुतः इतिहासक ओहि पक्षक गवेषणा करबाक हेतु उद्यत भेलाह जकर इतिहासकार लोकनि द्वारा सामान्यतः उपेक्षा कऽ देल जाइत छल। अपना जीवनक आरम्भिक वर्ष मे ओ अपन पिताक पुस्तकालय मे सैनिक इतिहासक अनेको ग्रन्थ पढ़लनि जाहि मे एक गोट महत्त्वपूर्ण पुस्तक नेपोलियनक रणकौशलक विषय मे छल। ओ अपन अन्तिम वर्ष मे लिखलनि– "एहि तरहें जखन हम पैघ भेलहुँ तऽ सैनिक इतिहास-लेखनक जीवाणु हमरा मस्तिष्क मे पैसि गेल आ असैनिक क्षेत्रक सैन्य-अध्येता बनब हमर नियति बनि गेल।" जीवनक उत्तरकाल मे ओ अपन ध्यान युद्धक रोमान्सपूर्ण पक्ष सँ हटा कय

ओकर तकनीकी आ शैक्षिक पक्ष पर लऽ अनलनि आ "यावत् भारत एहन राज्यक रूप मे छल जे विदेशी शक्ति सँ लोहा लऽ सकय तावत काल मे भारतक जे प्राचीन रणनीति आ कौशल छल" तकर अनुसन्धान करऽ लगलाह। ओ अनुभव कयल जे "तावत् मध्यकालीन भारतीय युद्धक राजनीति या कौशलक मूल्यांकन आ ताहि सँ भारतीय पाठक कें भेटऽबला शिक्षाक निष्कर्ष ओ नहि दऽ सकैत छथि यावत् यूरोप मे युद्धकलाक विकास आ आधुनिक तकनीकी विशेषता आ व्यावहारिक उदाहरण सभक ज्ञान प्राप्त नहि कऽ लैत छथि।" तें ओ यूरोपीय सैनिक इतिहासकार सभक गन्थ सभक परिश्रमपूर्वक अध्ययन कऽ भारतक सैनिक इतिहास लिखबाक हेतु अपना कें सक्षम बनओलनि।

'मोगल साम्राज्यक पतन' केर चारिम खण्डकें पूरा कयलाक उपरान्त (१९५० ई.) जदुनाथ कलकत्ताक एक पत्रिका मे प्रकाशनक हेतु अनेक लेख देल। एकर प्रकाशन हुनक मृत्युक दुइ वर्ष पश्चात् १८६० ई. मे 'भारतक सैनिक इतिहास' शीर्षक सँ प्रकाशित भेल। ओ जाहि बृहत् ग्रन्थक योजना बनओने रहथि तकर ई रूपरेखा मात्र थिक। ओ लिखलनि, "ई लेखमाला भारतवर्षक युद्धकला मात्रक अध्ययन थिक ; अपना भूमि पर लड़ल गेल प्रत्येक युद्धक विवरण-सूची नहि। एतय केवल ओहने युद्धक विवेचना कयल गेल अछि जे युद्धकलाक विद्यार्थी कें ई शिक्षा दऽ सकत जे की करी की नहि।" ओ एहि मे अपन समयक बाहरी सीमा सिकन्दरक आक्रमण-काल आ भीतरी सीमा अँग्रेज-मराठा युद्ध मे वेलिंग्टनक अभियान रखलनि, "कारण हमरा सभ कें अही युद्ध सभक यथातथ्य विवरण उपलब्ध अछि।" ई यथार्थतः आश्चर्यक बात छल जे अपना जीवनक अस्सी वर्ष पूरा कयलाक उपरान्त कोनो विद्वान एहन नब आ कठिन योजनाक समारम्भ करय!

जदुनाथक 'जयपुरक इतिहास' हुनक देहान्तक बहुत समय उपरान्त प्रकाशित भेल। एकर प्रकाशन अनेक वर्ष धरि रोकि राखल गेल, कारण ओ तत्कालीन जयपुर राजपरिवारक सुझाओक अनुरूप अपन कथ्य तैयार करब स्वीकार नहि कयलनि। ओ यथार्थ सत्य सँ समझौता करबा लेल तैयार नहि छलाह। ओ कल्हणक पत्नीक कथन कें कहियो नहि बिसरलाह जे "ओएह मात्र इतिहासकार बुद्धिमान आ सराहनीय होइछ जकर बीतल घटनाक्रमक वर्णन कोनो न्यायाधीशक विवरण जकाँ भावावेश, पूर्वाग्रह आ पक्षपात सँ मुक्त रहैछ।" ओ पुस्तक ओ जेना छोड़ि गेलाह ताही रूप मे प्रकाशित भेल। ओ पुस्तक मोगल इतिहास मे एहि प्रमुख राजपूती राज्यक जे भूमिका 'औरंगज़ेबक इतिहास' आ 'मोगल साम्राज्यक पतन' मे वर्णित अछि तकर पूरकक काज करैत अछि। एहि पुस्तकक प्रणयन मे ओ पूर्व जयपुर राज्यक राजकीय अभिलेखागार मे जे बहुत रास अप्रकाशित पाण्डुलिपि, पत्र आदि सुरक्षित छल तकर सभक उपयोग कयलनि।

पेशवा-कालक मराठा इतिहास पर हजारो अत्यन्त बहुमूल्य मराठी आ अँग्रेजी दस्तावेज सभक प्रकाशन करबा मे जदुनाथक सक्रिय भूमिका रहलनि। हुनक जन्मशती समारोहक अवसर पर महाराष्ट्रक शिक्षामन्त्रीक उक्ति छल– "डाक्टर जी. एस. सरदेसाईक संग जदुनाथ सरकार ऐतिहासिक सामग्रीक अन्वेषण मे महाराष्ट्र मे पचास वर्ष धरि भ्रमण करैत रहलाह।" जदुनाथक नेतृत्व मे डा० जी. एस. सरदेसाई 'पेशवा दफ्तर सीरीज़'क पैंतालिस गोट खण्डक प्रकाशन कऽ सकलाह जे मराठा इतिहासक विभिन्न पक्ष प्रस्तुत करैत अछि। डा० सारदेसाईक संग ओ 'पूना रेजिडेन्सी कॉरेस्पौन्डेन्स सीरीज़'क चौदह खण्डक प्रधान सम्पादक रहलाह।" अनुसन्धित्सु लोकनि कें ई उनसठि खण्ड स्रोत-सामग्रीक विशाल भंडार सुगमता सँ उपलब्ध करओलक जे एखन धरि उपलब्ध नहि छल आ हुनका सभक हेतु अठारहम आ उनइसम शताब्दीक प्रारम्भक इतिहासक पुनर्लेखन सम्भव बनओलक।

जी. एस. सरदेसाईक संग-संग जदुनाथ ने केवल 'इंगलिश रेकॉर्ड्स ऑव मराठा हिस्टरी : पूना रेज़िडेन्सी कॉरेसपौन्डेन्स'क चौदह खण्डक प्रधान सम्पादक छलाह, अपितु तीन खण्डक (१,८,१४) सम्पादन ओ स्वयं कयलनि। ई दस्तावेज सभ १७८६ ई. सँ १८१८ ई. धरिक कालखण्ड कें समाविष्ट करैत अछि। सरदेसाई पाँच खण्ड (२, ६, ७, १२ आ १३) केर सम्पादन कयलनि। एहि सभ खण्ड मे मुद्रित दस्तावेज सभ उत्तर भारतक संग-संग दक्षिण भारतक विविध विषय कें समाहित कयने अछि।

जदुनाथ ने केवल विद्वत्तापूर्ण गन्थ सभक, अपितु अनेक लोकप्रिय-अर्द्धलोकप्रिय निबन्धहु सभक अथक लेखक छलाह। ई सभ भारतवर्षक विभिन्न भाग सँ प्रकाशित मासिक आ दैनिक पत्र-पत्रिका कें आ विद्वत् समिति सभक पत्रिका एवं विभिन्न सभा सभक कार्यवाही मे पठाओल गेल छल जकर विवरण निम्नलिखित अछि :

माडर्न रिव्यू (कलकत्ता), बेंगाल पास्ट ऐन्ड प्रेज़ेन्ट (कलकत्ता), हिन्दुस्तान रिव्यू(पटना), इन्डो-इरानिका (कलकत्ता), द सर्वेन्ट ऑव इन्डिया (पूना), टाइम्स ऑव इन्डिया (बम्बई), हिन्दुस्तान स्टैन्डर्ड (कलकत्ता), स्टेट्समैन (कलकत्ता), भारत इतिहास संशोधक क्वार्टरली (पूना), जर्नल ऑव द हैदराबाद आरकिओलौजिकल सोसायटी, जर्नल ऑव इन्डियन हिस्टरी (त्रिवेन्द्रम), इन्डियन हिस्टॉरिकल क्वार्टरली (कलकत्ता), अमृत बाजार पत्रिका (कलकत्ता), प्रबुद्ध भारत (कलकत्ता), इन्डियन रिव्यू; द मुस्लिम रिव्यू, इस्लामिक कल्चर; जर्नल एन्ड प्रोसीडिंग्ज ऑव द एशियाटिक सोसायटी ऑव बेन्गाल, जर्नल ऑव द बिहार एन्ड ओरिसा रिसर्च सोसायटी (पटना), जर्नल ऑव द युनिवर्सिटी ऑव बॉम्बे, प्रोसीडिंग्ज ऑव द इन्डियन हिस्टॉरिकल रेकॉर्ड्स कमिशन, ईस्ट बेन्गाल टाइम्स इत्यादि। हुनक अँग्रेजी

मे लिखल निबन्धक संख्या तीन सय पचास सँ ऊपरे अछि। अँग्रेजी मे ओ एक सय सँ ऊपर पुस्तक-समीक्षा, पचीस सँ अधिक पुस्तकक 'प्राक्कथन' आ भूमिका सेहो लिखल।

इतिहास विषयक निबन्ध मे सरल, प्राञ्जल आ लोकप्रिय शैली मे ओ पाठकक सम्मुख तथ्य आ विचार राखल ओ विभिन्न स्रोत सँ यत्न सँ आ चिन्तन पूर्वक प्राप्त ज्ञान कें लोकप्रिय बनओनिहार विलक्षण लेखक छलाह। किन्तु हुनक ध्यान केवल इतिहास धरि सीमित नहि छल। ओ शिक्षा, साहित्य, कला, संगीत, सामाजिक आ भाषा विज्ञान सम्बन्धी समस्या आदि विषय पर विस्तृत रूपें लिखलनि। ओ ने केवल अतीत मे, ने एकान्त मे, ने मठ मे रहनिहार व्यक्ति जकाँ छलाह। हुनका सामयिक घटना-क्रम मे बड़े रुचि छलनि। समसामयिक घटना सभ पर देशक भविष्यक दृष्टिएँ विचार करैत छलाह। १९२७ ई. मे बम्बई विश्वविद्यालयक दीक्षान्त भाषण मे ओ अपन देशवासी लोकनि कें स्मरण कराओल जे भारत कें निर्माण करऽ पड़तैक, मात्र आयात नहि। १९५४ ई. मे जखन स्वतन्त्र भारत कें अपन प्रतिरक्षा कें सशक्त बनयबाक हेतु देशभक्त नवयुवक लोकनिक आवश्यकता भेलैक तऽ ओ 'देशभक्तिक स्रोत एन. सी. सी.' पर निबन्ध लिखलनि। ने वार्धक्य, ने प्रिय वियोगक निष्ठुर आघात हुनका अपना देशक कल्याण-चिन्तन सँ विरत कयलकनि।

बहुत पूर्वे, १९२८ ई. मे ओ देशवासी लोकनिक ध्यान इतिहास सँ प्राप्त पाठ दिस आकृष्ट करओलनि। ओ लिखेन छलाह :

> "अपना देशक इतिहासक अध्ययन अनिवार्यतः ई निष्कर्ष बहार करबाक हेतु बाध्य करैत अछि जे हमरा पूर्ण आ निर्विवाद रूपें अपना भीतर प्रगतिक चेतना जागृत करबाक चाही.....हमरा लोकनि ई कदापि नहि बिसरी जे आधुनिक भारतीय सभ्यता समवायिक नित्य वर्धिष्णु शस्य थिक।"

ताहि समयक इतिहासकार लोकनि मे भारतीय सभ्यताक संश्लेषणात्मक लक्षण पर जोर देबाक प्रवृत्ति बहुत प्रचलित नहि छल।

१९२८ हि ईस्वी मे 'पूर्ण स्वराज्य'क प्रस्तावक अंगीकृत हयबा सँ पूर्व, जदुनाथ स्वतन्त्र भारतक कल्पना कयलनि आ देशवासी कें चेतओलनि जे आधुनिक संसार मे कोनो देश मस्तिष्कक विकास मात्र कयने जीवित नहि रहि सकैत अछि। ओकरा अपन आर्थिक संसाधन आ सैनिक शक्ति कें ओहि उच्चतम सीमा धरि विकसित करऽ पड़तैक जतय धरि ओकर सम्भावित शत्रु विकास कऽ लेने हो।

जदुनाथ इतिहास कें केवल सूचनाक भंडार नहि, प्रत्युत ज्ञानक स्रोत आ भविष्यक मार्गदर्शक मानैत छलाह ओ अपन पथक अपनहि अन्वेषी छलाह, कारण इतिहासक वैज्ञानिक अध्ययन क्षेत्र मे हुनका कोनो पूर्ववर्त्ती लेखक वा पथप्रदर्शक

नहि प्राप्त छलनि। ओ लिखलनि, "हमरालोकनि कें एखनहुँ अपन सामग्रीक संकलन करबाक अछि आ आवश्यक आधारक निर्माण करबाक अछि, सुनिश्चित आ अकाट्य तथ्यक सुदृढ़ आधार-शिलाक निर्माण– तखने हमरा लोकनि सँ अधिक सौभाग्यशाली भावी लेखक लोकनि ओहि पर इतिहास-दर्शनक विशेष संरचना ठाढ़ कऽ सकताह। अपरीक्षित तथ्य आ अविश्वसनीय इतिवृत्त पर आधारित अपरिपक्व दार्शनिक व्याख्या केवल मनगढ़न्त सिद्धान्त आ अतीतक काल्पनिक पुनर्निमाणटा कें जन्म देत।" यद्यपि अँग्रेज इतिहासकार बेवरिज हुनका 'बंगालक गिबन' नाम सँ विभूषित कयलथिन मुदा ओ ताहि दार्शनिक इतिहासकारक तुलना मे बड़ कम सौभाग्य शाली छलाह, कारण गिबन केर उपयोग हेतु पहिनहि सँ प्रचुर मूल सामग्री उपलब्ध छलनि। आ तइयो जदुनाथ अपना कें तथ्य-संग्रह आ परीक्षणे धरि सीमित नहि रखलनि। जखन हुनका ठोस तथ्यात्मक आधार भेटबाक निश्चय भऽ जाइत छलनि तऽ ओ दार्शनिक चिन्तन सेहो प्रस्तुत करैत छलाह।

१९३७ ई. मे जदुनाथ डा० राजेन्द्र प्रसाद कें लिखलनि– "राष्ट्रीय इतिहास कें कोनो प्रसिद्ध आ स्थायी महत्त्वक इतिहास जकाँ तथ्यक सम्बन्ध मे परिशुद्ध आ तकर व्याख्या मे बुद्धिसम्मत होयब आवश्यक.....राष्ट्रीय इतिहासकारक प्रथम कर्त्तव्य अतीतकालीन राष्ट्रीय जीवनक प्रत्येक पक्षक चित्र प्रस्तुत करब थिक। ओ राष्ट्रीय चरित्रक कोनो दोष कें झाँपत नहि, प्रत्युत तकरा संग ओकर उचतर गुण कें सेहो सम्मिलित करत जाहि सँ ओ पहिल पक्ष सँ मिलि कऽ सम्पूर्ण व्यक्तित्व कें उभारबा मे सहायक हयत।" इतिहास कें सत्य, पूर्ण सत्य आ केवल सत्य कहबाक लक्ष्य राखऽ पड़तैक।

लब्धप्रतिष्ठ इतिहासवेत्ता गोविन्द सखाराम सरदेसाई जदुनाथक मित्र छलाह आ आध शताब्दी सँ अधिके समय धरि मराठा इतिहासक क्षेत्र मे हुनक सहकर्मी रहलाह। जदुनाथक जीवनक अन्त होइत-होइत ओ लिखल, "इतिहासकारक रूप मे जदुनाथ कोनो अप्रत्याशित घटना नहि छलाह, ने अवसरक सौभाग्यशाली पुत्र; प्रत्युत तैयारी, योजना, कठिन अध्यवसाय आ महान् लक्ष्यक प्रति समर्पित जीवनक निष्पत्ति छलाह।" सरदेसाई कें सम्बोधित जदुनाथक पत्र मे एक पंक्ति एहि निष्ठाक आभास दैत अछि, "कार्यक मस्ती खास कऽ कऽ जकरा प्रति मनुक्ख अपन हृदय अर्पित कऽ देने हो, आन कोनो वस्तु कें, भनहि ओ बाह्य बाधा, शारीरिक क्लान्ति वा प्रियवियोगक व्यथे किएक ने हो, विस्मृत करा दैत अछि।"

इतिहासक सरस्वतीक ई समर्पित पुजेगरी आजीवन अँग्रेजी साहित्यक प्रेमी रहल। बी.ए. प्रतिष्ठाक पाठ्यक्रम मे ओ एक विषय अँग्रेजी चुनल; अँग्रेजी हुनक एम.ए. परीक्षाक विषय रहल, आ पुनः प्रेमचन्द रायचन्द स्कॉलरशिपक एक विषय सेहो छल। ओ अनेक महाविद्यायल मे कतोक वर्ष अँग्रेजी पढ़ओलनि। जखैन ओ इतिहासक अनुसन्धानहु मे मग्न रहैत छलाह ओ अँग्रेजी साहित्य खूब पढ़ल करथि।

स्कॉटक 'आइवनहो' हुनक बड़ प्रिय पुस्तक छलनि आ हुनक मृत्यु काल ई पुस्तक हुनक ओछाओनक कात मे पाओल गेल। आध शताब्दी सँ अधिक समय ओ 'टाइम्स लिटररी सप्लीमेन्ट'क नियमित पाठक रहथि। एहि सँ ओ अँग्रेजी साहित्य आ साहित्यिक समालोचनाक विकास सँ नीक जकाँ अवगत रहलाह।

अँग्रेजी साहित्य मे एहि आजीवन रुचिक प्रत्यक्ष प्रभाव हुनक अँग्रेजी आ बँगलाक ऐतिहासिक कृति सभ पर पड़ल। हुनक विश्वास छलनि जे इतिहास कें पाठकक सम्मुख प्राञ्जल, समीचीन आ सुस्पष्ट रूप मे प्रस्तुत करबाक चाही आ सँगहि ओकरा साहित्यिक सौष्ठवक माधुर्य सँ समन्वित सेहो हयबाक चाही। एहि प्रकारें लिखबाक क्षमता अँग्रेजी साहित्यक गम्भीर अध्ययने सँ प्राप्त भऽ सकैत अछि। ओ १९४३ ई. मे सरदेसाई कें लिखलनि :

> "वस्तुतः सर्वोत्कृष्ट शैली प्राप्त करबाक सर्वाधिक सुनिश्चित साधन थिक (१) प्रतिदिन प्रातःकाल डाक्टर जॉनसन आ मेकॉले सन आलंकारिक-जटिल लेखक कें छोड़ि, अँग्रेजीक सर्वोत्तम गद्यक उच्च स्वरें पाठ करब, (२) तथ्यमात्रक चयन करबाक आवश्यकता छोड़ि सतत निकृष्ट कोटिक लेखकक त्याग करब, (३) लिखबाक क्रम मे समय-समय पर रुकि लिखल अंशक पुनरावृत्ति करब। कॉलेज मे किछु विशेष सुविधाक अतिरिक्त इएह तरीका हमरा हेतु सभ सँ अधिक लाभदायक रहल अछि।
>
> विषयक जतेक संक्षेपण सम्भव अछि से हम करैत छी आ तें हमरा पुनरावृत्ति करबाक आ शब्द कें परिमार्जित करबाक अवकाश भेटैत अछि अथवा ई कही जे जखन लिखब प्रारम्भ करबा सँ पूर्व हम मनन करऽ लगैत छी तऽ स्वयमेव चुनल-चुनल शब्द सभ हमरा कलम सँ बहराय लगैत अछि।..... उत्कृष्ट गद्य शैलीक तत्त्व समीचीन शब्दक चयनेटा नहि थिक, प्रत्युत तथ्यक विवेकयुक्त आ विशेष प्रभावोत्पादक संयोजन, विषयवस्तु वा जाहि प्रतिपाद्य सिद्धान्त कें प्रमाणित करबाक हो तकर सांगोपांग विकास आ प्रत्येक अंगक विस्तार मे समुचित अनुपात राखब सेहो थिक। वास्तविक कठिनाई तखन होइत अछि जखन हमरा ई निश्चय करऽ पड़ैत अछि जे कोन बात कें राखी आ कोन कें छोड़ी, कारण सभटा गप्प कें नहि राखि सकैत छी, किछु कें वा सम्भवतः बहुतो बात कें हटबऽ पड़तैक। एक ग्रीक कहबी अछि, मेकॉले जकर प्रशंसक रहथि, "पूरा सँ आधा अधिक नीक होइत अछि।"

ई पत्र जदुनाथ तेहत्तरिम वर्ष मे अपन ओहि मित्र आ सहकर्मी कें सम्बोधित कयने छलाह जे हुनका सँ पाँच वर्षक जेठ रहथिन। किछु वर्ष पूर्व ओ सरदेसाई कें हुनक जन्मदिन पर उपहार पठओने रहथिन : एच.ए.एल. फिशरक नबे प्रकाशित 'हिस्टरी ऑव यूरोप'क एक प्रति। जदुनाथक समसामयिक इतिहासकार मे सँ दू

गोट लेखक फिशर आ जी.एम. ट्रेवेलियनक कृति मे विद्वत्ताक सँग-सँग साहित्यिक सौष्ठवक बेश समावेश छल। एहि क्षेत्रक सभसँ बड़का अधिकारी विद्वान् रोमक जर्मन इतिहासकार मॉम्सेन छलाह जनिक जर्मन भाषा मे लिखल 'हिस्टरी ऑव रोम' कें साहित्यक नोबेल पुरस्कार तहिया भेटल रहैक जहिया जदुनाथ उदीयमान इतिहास लेखक रहथि।

ई विशिष्ट पत्र जदुनाथक लेखन-कौशलक अनेक सूत्र हमरा सभक सम्मुख खोलि कऽ रखैत अछि। 'आलंकारिक आ जटिल कोटिक' अँग्रेजी छोड़ि उत्तम शैलीक अँग्रेजी नियमित रूपें गम्भीरतापूर्वक पढ़ल जाय जाहि सँ तकर अदृश्य प्रभाव मे स्वयं इतिहासकारक अपन शैलीक समुचित विकास निष्पन्न हो। दोसर, लेखन-क्रम मे 'विराम', 'बारम्बार पुनरावृत्ति' आ 'शब्दक परिमार्जन' हो। तेसर, कलम चलयबा सँ पूर्व चिन्तन कयल जाय। एहि सँ लेखक ने केवल समीचीन शब्दक चयन कऽ सकत, अपितु गद्य-रचनाक कतेको समस्या जेना तथ्य-विन्यास, जे वास्तव मे अनावश्यक अछि तकर त्याग, आलोच्य विषयक विभिन्न अंगक बीच समुचित अनुपात राखब इत्यादिक समाधान करबा मे सहायता भेटतैक।

वास्तविक वास्तुशिल्पी जकाँ जदुनाथ गम्भीरतापूर्वक चिन्तन आ कठिन परिश्रम करथि। पाथरक टुकड़ी सभ कें अनियोजित रूपें जमा करब आ तकरा अनगढ़ पुंजक रूप मे जोड़बा सँ ओ सर्वथा दूर रहलाह। हुनक सुचिन्तित कार्य छलनि एहन सुडौल संरचना ठाढ़ करब जाहि महक प्रत्येक अनावश्यक आँकर-पाथर बहार कऽ हटा देल गेल हो। आलंकारिक शैलीक प्रयोग ओ विरले करथि ; हुनक उद्देश्य छलनि वृत्तान्त कें सुस्पष्ट बनायब ने कि शब्दाडम्बरक चकचौन्ही उत्पन्न करब। तथ्य कें यत्न सँ प्रस्तुत करैत काल पर्यन्त जदुनाथ बड़ सरल, संयमित शब्दें स्थितिक कारुणिकता कें अभिव्यंजित करथि। तथ्य आ तथ्यक प्रस्तुति आ समीक्षाक हेतु शब्द-प्रयोगक सम्बन्ध मे ओ छेनीक प्रयोग निधोख करथि। हुनक वृत्तान्तक सार-तत्त्व छल सुबोधता। पाठक कें लेखकक अभिप्राय कें हृदयंगम करबा मे रुकबाक वा ठोकर खयबाक कोनो अवसर नहि रहैत छलैक। जदुनाथक गद्य पहाड़ी झरना जकाँ तीव्र गतिशील, जीवन्त आ प्रज्ञाक रश्मि सँ झलमलाइत प्रवाहित होइत छल। सरदेसाईक शब्द मे "हुनक लेखनी मोगल-साम्राज्य कालक दरबारी कलाकारक कुशल तूलिका जकाँ चलैत छल।"

बँगला साहित्य मे योगदान

यद्यपि जदुनाथ प्रथमतः इतिहासकार छलाह, मुदा हुनका बँगला साहित्य सँ सेहो वास्तविक प्रेम छलनि आ ओकर प्रगति मे ओ विविध प्रकारें महत्त्वपूर्ण योगदान देल। १९५२ ई. मे ओ लिखलनि जे हुनक पितृव्य बँगला उपन्यास आ कविताक बड़े उत्साही पाठक छलाह। ओ बंकिमचन्द्र चटर्जी, रमेश चन्दर दत्त आ रवीन्द्रनाथ ठाकुरक सभटा पोथी प्रकाशित होइते देरी कीनि लेथि। तत्कालीन बँगला साहित्यक पत्रिकादिक सेहो ओ ग्राहक रहथि। हुनक पुस्तकालय जदुनाथ कें आकृष्ट कयल आ तें बाल्यावस्थहि मे हुनका बँगला उपन्यास आ कविता पढ़बा मे अभिरुचि जागि गेलनि जकरा ओ आजीवन अक्षुण्ण रखलनि। वस्तुतः यूरोपीय आ संस्कृत साहित्यक विशद अध्ययन बँगला साहित्यक प्रति हुनक अभिरुचि कें आओरो गम्भीर बनाओल। ओ लिखलनि, "हमर जीवनक सर्वोच्च लाभ रहल अछि अतीतक महान् साहित्य-मनीषी लोकनिक कृतिक सहाचर्य—जेना संस्कृत काव्य साहित्य, उपनिषद, यूरोपीय काव्य साहित्य, इतिहास आ जीवनी; बँगला साहित्यक तऽ कोनो कथे नहि। ई सभ हमरा एक गोट नवे साम्राज्य प्रदान कयलक अछि जाहि मे कोनो शत्रुक प्रवेश नहि भऽ सकैछ। एहि राज्य मे हम नव जीवन पबैत छी।" इतिहासक ई महान् विद्यार्थी साहित्योक उच्च कोटिक अध्येता छल। मानवीय आत्माभिव्यक्तिक ऐतिहासिक आ सामाजिक दुहू पक्ष हुनका लेखन मे एकमेक छलनि।

जदुनाथ कें संस्कृतक प्रति बड़ गम्भीर आदरक भाव रहनि, कारण एहि भाषाक माध्यमे भारत अतीत काल मे अपन आत्माभिव्यक्ति कयने छल। ओ लिखलनि ; "यदि भारत मे सजग रूपें संस्कृतक अध्ययन नहि हयत, तऽ भारत आत्मविहीन भऽ जयत।"

जदुनाथ अँग्रजी साहित्यक प्रतिभाशाली विद्यार्थी आ शिक्षक छलाह। मुदा हुनक मंतव्य ई छल जे कोनो विषयक शिक्षा मे ओकर समुचित आन्तरिक ज्ञान मातृभाषेक माध्यम सँ भऽ सकैत अछि। यद्यपि हुनका समय मे शिक्षा-परीक्षाक एकमात्र माध्यम अँग्रेजी छल, ओ पटना कॉलेज मे कौखन कऽ इतिहासक व्याख्यान हिन्दी मे देथि। शैक्षिक व्यवस्था मे मातृभाषाक शिक्षणक स्थान गौण छल। कटक केर रेवेन्शॉ

कॉलेज मे ओ स्वेच्छा सँ बँगला पढ़ाओल करथि यद्यपि इतिहास आ अँग्रेजी विभागक भारी कार्यभार हुनका पर रहैत छलनि। १९१६ ई. मे ओ शिक्षाक माध्यम मातृभाषा रखबाक पक्ष मे एक गोट लेख लिखलनि।

बँगला मे जदुनाथक पहिल रचना 'हरिद्वार ओ कुम्भ मेला' शीर्षक निबन्ध छल। ओ १९८५ ई. मे एकटा छोट-छीन पत्रिका 'सुहृद' में छपल जे प्रेसिडेन्सी कॉलेज सँ सम्बद्ध इडेन हिन्दू होस्टल मे रहनिहार विद्यार्थी लोकनि द्वारा बहार कयल जाइत छल। पछाति जीवन मे ओ तीन गोट पुस्तक लिखलनि– (१) 'पटनार कथा' (१९१६ ई.); (२) 'शिवाजी' (१९२९ ई.); आ (३) 'मराठार जातीय विकास' (१९३६ ई.)

प्रथम पुस्तक पटना नगरक प्रति हुनक रुचिक परिचायक थिक जतय ओ अनेक वर्ष धरि रहलाह। शेष दूनू पोथी बँगलाभाषी लोकनि कें मराठा जातिक इतिहास पर हुनक शोध-कार्यक फल अपलब्ध करबैत अछि। एकरा द्वारा ओ राष्ट्रीय आन्दोलन कें प्रेरणा देल। ओ कोनो उपन्यास वा कविता नहि लिखलनि यद्यपि अँग्रेजी आ बँगला साहित्यक एहि विधाक ओ प्रबल प्रेमी छलाह।

जदुनाथ विभिन्न पत्रिका सभ मे डेढ़ सय सँ ऊपरे बँगला निबन्ध देल; ओहि मे सँ अधिकांश रामानन्द चटर्जी द्वारा सम्पादित "प्रवासी" पत्रिका मे प्रकाशित भेल जे ताहि दिनक प्रमुख पत्रिका छल। रामानन्द चटर्जी जदुनाथक मित्र छलथिन; ओ अँग्रेजी मासिक पत्रिका 'मार्डन रिव्यू'क सम्पादक सेहो छलाह जाहि मे जदुनाथक अनेको अँग्रेजी निबन्ध प्रकाशित भेल। दूटा अन्य प्रमुख बँगला पत्रिका 'भारतवर्ष' आ 'साहित्य परिषत् पत्रिका' सेहो हुनक किछु निबन्ध छपलक। ओ अनेक अल्पज्ञात पत्रिका जेना 'बंगश्री', 'शनिबारेर चीठी', मासिक 'बसुमति', 'प्रभाती', 'इतिहास' आदि मे अपन लेख देल। साहित्यिक सम्मेलन सभ मे देल हुनक व्याख्यान किछु पत्रिका आ दैनिक पत्र मे बहरायल। ओ किछु बँगला पोथीक समीक्षा अँग्रेजी आ बँगला पत्रिका मे कयल। अनेक बँगला पोथीक ओ भूमिका लिखलनि। ई सभ जतऽ ततऽ बिखरल लेखन कहियो संकलित रूपें प्रकाशित नहि भऽ सकल अछि। हुनक बँगला लेखन शैली सरल आ सुस्पष्ट छलनि। ओ तथ्य आ अपन दृष्टिकोण कें प्रस्तुत करबा मे सचेत रूपें शब्दाडम्बर एवं अलंकारक उपेक्षा करथि। एहि शैलीक ओ अग्रदूत छलाह। हुनक समवर्ती अधिकांश इतिहासकारण (यथा अक्षय कुमार मैत्र, काली प्रसन्न बनर्जी, निखिलनाथ राय, रजनीकान्त गुप्त, रजनीकान्त चक्रवर्ती, राखालदास बनर्जी) पाठकक हेतु बोझिल रचना प्रस्तुत करबाक उनइसम शताब्दीक जे परम्परा छल तकरे अनुसरण कयलनि। जदुनाथ लोकक भावना कें नहि, सोझे विवेक कें सम्बोधित करथि। दोसर ई जे हुनक बँगला आ अँग्रेजीक ऐतिहासिक निबन्ध अनुसन्धान पर आधारित रहैत छलनि। हुनक उद्देश्य छलनि अँग्रेजी सँ कम परिचित पाठक सहित सर्वसाधारण

पाठकक सम्मुख एहन ऐतिहासिक सत्य राखब जे एखन धरि अँग्रेजीक भारी-भरकम ग्रन्थेटा मे उपलब्ध छल। ओ प्रामाणिकताक सँग-सँग लोकप्रियताक समावेश कयलनि आ बँगला मे इतिहास-लेखनक नवीन धारा चलओलनि। तेसर, यद्यपि ओ हृदय सँ दृढ़ राष्ट्रवादी छलाह, तथापि ओ अपन लेखन कें राष्ट्रवादी पूर्वाग्रह सँ सर्वदा मुक्त रखलनि; एहि तरहक पूर्वाग्रह हुनक किछु समसामयिक इतिहास लेखक सभक कृति कें प्रभावित करैत छल। ओ बँगलाक अपन ऐतिहासिक कृतिक विशिष्ट संरचना सत्यक नेंव पर ठाढ़ करैत छलाह। अँग्रेजीक अपन ग्रन्थ सभ सँ अधिक ओ पत्र-पत्रिकादिक स्तम्भ द्वारा विस्तृत क्षेत्रक पाठकक सम्पर्क मे अयलाह।

यद्यपि जदुनाथक लेख सभ आब प्रायः विलुप्त भऽ गेल अछि, तथापि ओ जे आदर्श उदाहरण दऽ गेलाह से बाँचल अछि। बँगला मे इतिहासक रचयिता आ अन्य लेखकगण भाषाक सरलता आ सुस्पष्टताक हुनक उदाहरणक अनुगमन करैत छथि। बँगला साहित्यक एहि क्षेत्र मे हुनक सम्मानपूर्ण स्थान सुरक्षित छनि।

यद्यपि जदुनाथ मुख्यतः ऐतिहासिक विषय पर कलम चलाओल, ओ आनो विषय पर पाठक कें चिन्तन-सामग्री प्रदान कयल– यथा बँगला भाषा आ साहित्य, बंगालक सामाजिक जीवन, बँगला नाटकक विकास, शिक्षा, बँगला प्रेसक विकास इत्यादि। ओ अपन लेख सभ मे राममोहन राय, बंकिमचन्द्र चटर्जी आ रवीन्द्रनाथ ठाकुर पर प्रकाश देल।

एहि सम्बन्ध मे बंगीय साहित्य परिषत् द्वारा प्रकाशित बंकिमचन्द्र चटर्जीक उपन्यासक शतवार्षिकी संस्करणक हेतु लिखल गेल हुनक भूमिका विशेष रूपें उल्लेखनीय अछि। एहि हेतु बंकिमचन्द्रक सात गोट उपन्यास बीछल गेल कारण ओ ऐतिहासिक विषय सँ सम्बद्ध छल। जदुनाथक मतें 'दुर्गेशनन्दिनी', 'राजसिंह', 'सीताराम', 'मृणालिनी' आ 'चन्द्रशेखर' ऐतिहासिक उपन्यास थिक, किन्तु 'आनन्दमठ' (जाहि मे 'वन्दे मातरम्' सँ आरम्भ होमऽबला महान् गीत अछि) आ 'देवी चौधुरानी' नहि। एहि वर्गीकरणक हेतु ओ जाहि कसौटीक प्रयोग कयलनि तकर विवेचना निम्नलिखित शब्दें करैत छथिः

> मात्र एहि कारणें जे कोनो उपन्यास ऐतिहासिक चरित्र वा घटना कें अपन विषय बनबैत अछि, ओ वास्तविक ऐतिहासिक उपन्यासक श्रेणी मे नहि राखल जा सकैछ। यथार्थतः ऐतिहासिक उपन्यास ओ उपन्यास थिक जाहि मे इतिहास सँ संग्रहीत सामग्रीक समावेश प्रचुर अंश मे आ समुचित रूपें कयल गेल हो आ लेखकक कल्पना ओकर सामान्य योजना आ निम्न पात्रक चरित्र कें मात्र गढ़ने हो। नगर, जनपद, ग्राम, पुरुष आ नारी, वेश-भूषाा, अस्त्र-शस्त्र, चालि-ढालि, रीति-रेवाज, जाहि युगक घटनादिक चित्रण हो ताहि युगक प्रचलित विचारधारा, अन्धविश्वास पर्यन्तक सम्बन्ध मे ज्ञात जे कोनो सत्य अछि ताहि मे कोनो संशोधन नहि हो।

जाहि पाँच उपन्यास कें जदुनाथ ऐतिहासिक कोटि मे रखलनि ओहि मे ओ ने केवल आवश्यक ऐतिहासिक तथ्य अपितु असल ऐतिहासिक युगक प्राण-स्पन्दन सेहो पाओल। मुदा 'देवी चौधुरानी' मे ओ ऐतिहासिक तथ्य नगण्य पओलनि। 'आनन्दमठ' मे अँग्रज सँ दू गोट सैनिक भिड़न्त वर्णित अछि, तकरा छोड़ि अधिकांश पात्र आ घटना के ओ कल्पना-प्रसूत पाओल। स्वभावतः ओ निर्णय दैलनि जे ई दू गोट उत्कृष्ट उपन्यास ऐतिहासिक कसौटी पर नहि उतरैत अछि।

एतय हमरालोकनि कें बंगालक सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकारक दू-दू गोट सर्वोत्कृष्ट उपन्यास पर भारतक सभ सँ पैघ इतिहासकारक निर्णय देखि सकैत छी। जदुनाथ इतिहासकार मात्र नहि छलाह; ओ साहित्यक गम्भीर अध्येता आ आलोचक सेहो रहथि। तें ओ कहलनि जे पाठक 'दैवी चौधुरानी', 'आनन्दमठ' आ 'सीताराम' मे जाहि अमृत रसक आस्वादन करैत अछि ओ आन उपन्यास मे नहि भेटैत अछि भनहि ओ एहि तीनू सँ इतिहासक क्तवो अधिक लग किएक ने हो। स्पष्टतः बंकिमचन्द्रक उपन्यासक मूल्यांकन मे ऐतिहासिक प्रामाणिकता हुनक एकमात्र वा सर्वप्रमुख आधार नहि छलनि। ओ साहित्यिक कृतिक मूल्यांकन प्रमुखतः साहित्यिक दृष्टिएँ करैत छलाह। उपन्यासक पुरुष आ नारी पात्रक हुनक विश्लेषण सूचित करैत अछि जे ओ साहित्यिक मापदण्डक प्रयोग कतेक यत्न सँ करैत छलाह। एतावता एहि सभ मे हुनक लिखल भूमिका साहित्यिक समालोचनाक रत्न थिक।

केवल अपन लेखने द्वारा जदुनाथ बँगला साहित्यक श्रीवृद्धि कयलनि से नहि। ओ बँगला भाषा आ साहित्यक समुन्नतिक प्रति समर्पित प्रमुख गैर सरकारी संस्था 'बंगीय साहित्य परिषत्' कें अपन संरक्षण प्रदान कयलनि। ओ बाजल छलाह जे बंगाली जनता द्वारा निर्मित ई अत्यन्त विशिष्ट संस्था थिक जाहि पर ओ यथार्थतः गर्व कऽ सकैत अछि। ई १८९३ ई. मे २३ जुलाइ कें कलकत्ता मे स्थापित भेल। तखन एकर नाम 'द बेंगाल एकेडमी ऑव लिट्रेचर' राखल गेल छल। मुदा किछु मासक अभ्यन्तरे ई अँग्रेजी नाम 'बंगीय साहित्य परिषत्' मे बदलि देल गेल। जदुनाथ एकर दीर्घ जीवन, प्रशंसनीय कार्यकलाप आ बँगलाक मुद्रित एवं हस्तलिखित ग्रन्थ आ पाण्डुलिपिकक समृद्ध संग्रहक हेतु एकर शुभाशंसा कयलनि।

बँगलाक साहित्यक एहि दुर्लभ भंडार सँ जदुनाथक दीर्घकालीन एवं आन्तरिक सम्बन्ध छलनि। ओ बाइस वर्ष पर्यन्त एकर उपाध्यक्ष आ आठ वर्ष एकर अध्यक्ष रहलाह। एकर क्रियाकलाप मे हुनक सक्रिय योगदान रहैत छल आ एकर कोषक संग्रह मे ओ सहायता प्रदान करथि। हिनक मार्गदर्शन मे ई पुरान पोथी आ पाण्डुलिपि सभक हेफाजतिक सँगे नब पुस्तक सभक प्रकाशन मे विशेष सफल भेल। एकर 'साहित्य परिषत् पत्रिका' मे जदुनाथ उनइसटा निबन्ध प्रकाशनार्थ देल। ओ परिषत् द्वारा आयोजित 'आधारचन्द्र मुखर्जी भाषणमाला'क अन्तर्गत बँगला मे मराठा इतिहास पर तीन टा व्याख्यान देल।

जदुनाथक अठहत्तरिम वर्ष पूरा करबाक अवसर पर 'परिषत्' हुनका 'मानपत्र' प्रदान कयलक (६ फरबरी, १९४९ ई.) जाहि मे अनुसन्धान, शिक्षा आ बँगला साहित्यक क्षेत्र मे हुनक सेवाक हेतु भावपूर्ण प्रशस्ति अर्पित कयल गेल।

यद्यपि जदुनाथ गोष्ठी सभ मे उपस्थिति सँ बचथि, मुदा साहित्यिक आयोजन मे भाग लेब ओ सर्वदा अस्वीकार नहि कऽ पबैत छलाह। ओ 'रविबासर' नामक गैर सरकारी संस्था सँ सम्बद्ध छलाह। ओ रवि दिन कऽ साहित्यिक चर्चाक हेतु बैसार करैत छल। ओहि मे कहियो-काल उपस्थित होइत छलाह आ बँगला साहित्यक विभिन्न पक्ष पर विरल कोटिक सरल, सोझ आ सुस्पष्ट शैली मे बजैत छलाह। कलकत्ताक बाहरहु (बर्दवान, मालदह, आगरा) ओ अनेक साहित्यिक समारोहक अध्यक्षता कयलनि। हुनक एकान्त जीवन मे इतिहास आ बँगला साहित्यक आह्वान छोड़ि कऽ आन कोनो बातक प्रवेश नहि छल।

ऐतिहासिक आ साहित्यिक विषयक दू गोट प्रसिद्ध बँगला लेखक ब्रजेन्द्रनाथ उपाध्याय आ जगदीशचन्द्र बागल अपन लेखन मे हुनका सँ प्रेरणा आ मार्गदर्शन प्राप्त कयलनि।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर सँ जदुनाथक मित्रतापूर्ण सम्बन्ध छलनि। जदुनाथक पिता रवीन्द्रनाथक पिता देवन्द्रनाथ ठाकुरक सम्पर्क मे आयल छलाह। हुनक गाम टैगोर-परिवारक राजशाही जिलाक (आब बाँगलादेश) एक जमीन्दारी जमीनक लग पड़ैत छल जकर प्रबन्ध देवेन्द्रनाथ कतोक वर्ष धरि स्वयं कयल करथि। जखन जदुनाथ कलकत्ताक एक विद्यालय मे पढ़ैत रहथि तऽ हुनका एक बेर देवेन्द्रनाथक दर्शन हेतु आनल गेल। ताहि काल धर्मक प्रति अपन निष्ठाक कारणें ओ व्यापक रूपें 'महर्षि' उपाधि सँ आदृत छलाह। सरकार-परिवार आ ठाकुर-परिवारक बीच बढ़ैत सम्पर्क पारिवारिक परम्पराक रूप लऽ लेलक। अपना सँ नौ वर्ष जेठ रवीन्द्रनाथक प्रति जदुनाथ कें बड़ आदर-भाव रहनि। ओ आजीवन कविक रचना सभ बड़े उत्सुकता सँ पढ़ल करथि।

रवीन्द्रनाथ बंग-विभाजन (१९०५ ई.) सँ बड़ आन्दोलित भेलाह, तहिना जदुनाथो; मुदा सरकारी सेवा मे रहने ओ अपन भावना कें सार्वजनिक रूपें व्यक्त नहि कऽ सकथि। लॉर्ड कर्ज़नक अन्तिम घोषणाक एक वर्ष पूर्व जदुनाथ बोधगया मे रवीन्द्रनाथ, जगदीश चन्द्र बोस (सभ सँ महान् वैज्ञानिक) आ भगिनी निवेदिता सँ भेंट कयलनि (अक्टूबर १९०४ ई.)। ओतय हुनका सभक वार्त्तालापक विषय ओएह छल जकरा बंगाली जनसमुदाय आसन्न महासंकट बुझैत छल। जदुनाथ ओहि काल कहलथिन जे निराशाक कोनो कारण नहि किएक तऽ बंगालक मुक्तिदाता रवीन्द्रनाथ हुनका सभक बीच वर्तमान छथि। सँगहि ओ रवीन्द्रनाथ द्वारा किछुए दिन पूर्व रचित एक गोट पदक अनुवाद ओतहि कऽ देल; एहि पद मे आशाक एक सन्देश आ नवप्रभातक स्वप्न छल :

कोन स्वर सुनि पड़इछ
ऊषाक एहि आङन सँ–
'भय त्यागू, भय त्यागू!
सभ किछु केर मोह छोड़ि,
प्राणहु जे उत्सर्ग करत,
हयतैक नहि अन्त तकर,
कहियो नहि मरत ओ!

विभाजनक दिन (१६ अक्टूबर, १९०५ ई.) कवि जदुनाथ कें (ओ तखन पटना मे छलाह) पत्रक सँग राखी पठओलथिन।

एक समय छल जखन किछु आलोचक सभक ई उपालम्भ छलनि जे रवीन्द्रनाथक कविता दुर्बोध अछि आ पाठक ओकर अर्थ तकबा मे अन्हार मे बौआइत रहि जाइत अछि। जदुनाथ 'प्रवासी' मे एक लेख दऽ एहि आरोपक खण्डन कयलनि। ओ रवीन्द्रनाथक प्रसिद्ध कविता 'सोनार तरी'क स्पष्ट व्याख्या देलं जे ताहि काल दुरुह रचना मानल जाइत छल। ओ लिखलनि, "कविता बुझबा मे पाठकक मानसक सहायता आवश्यक अछि.....पाठक कविता सँ अपन चेतना शक्ति आ मानसिक क्षमताक विकासक अनुपाते मे किछु उपलब्ध करैत अछि।" ओ आगाँ कहलनि जे कविताक माध्यम सँ रवीन्द्र जे भाव सम्प्रेषित करैत छथि से अधिकांशतः नवीन अछि आ हमरालोकनिक पुरान परिचित भाव सँ सर्वथा भिन्न; स्वाभाविक अछि जे एहि कविता सभ कें केओ एके बेर पढ़ि कऽ एकर अपरिचित भाव कें ग्रहण नहि कऽ सकैत अछि। एकरा अतिरिक्त कोनो एकटा कविता मात्र कें ओहि खास कालखण्ड मे रचित आन कविता सँ फराक कऽ पढ़ने कविक जे भाव-प्रवाह आ सर्जना-संसार अछि तकर केवाड़ नहि खुजि पबैत अछि।

१९११ ई.-१९१३ ई. क मध्य जदुनाथ रवीन्द्रनाथक पन्द्रह गोट रचनाक अँग्रेजी रूपान्तर कऽ 'मार्डन रिव्यू' मे प्रकाशित कयल। हुनक उद्देश्य छलनि बँगला भाषेतर पाठकक प्रति कविक भाव सम्प्रेषित करब। किछु वर्ष बाद (१९२७ ई., १९३१ ई. मे) जदुनाथ द्वारा अनूदित रवीन्द्रनाथक तीन गोट कविताक प्रकाशन 'माडर्न रिव्यू' मे भेल। कवि हुनका प्रति हार्दिक सम्मानक भावें अपन नाटक 'अचलायतन' जदुनाथ कें समर्पित कयलनि।

रवीन्द्रनाथक प्रधान सम्पादकत्व मे बंगाल मे जे विभिन्न विषय पर किछु सरल ग्रन्थ ('विश्व विद्या संग्रह') प्रकाशित भेल ताहि मे जदुनाथ अपन सक्रिय सहयोग देल। एकर उद्देश्य छल जे मातृभाषाक माध्यमे सामान्य ज्ञानक प्रचार-प्रसार हो।

विभिन्न अवसर पर जदुनाथ रवीन्द्रक साहित्यिक कृतिक विविध पक्ष पर बहुमूल्य लेख लिखलनि। 'इतिहास-दर्शन' कें विशेष रूपें उद्घाटित करऽबला

कविक इतिहास विषयक मार्म्मिक लेखमाला मे ओ विशेष अभिरुचि देखओलनि। हुनका विचारें एहि लेखसभक द्वारा केओ कविमानसक अतिरिक्त भारतक अतीत कालक विषय मे हुनक दृष्टिकोण वास्तविक रूपें बूझि सकैत अछि।

१६२२ ई. मे रवीन्द्रनाथ जदुनाथ कें लिखलनि–

"कतोक वर्ष सँ अहाँक प्रति हमरा जे आदर-भाव प्रकट भेल तकर मुख्य कारण ई थिक जे सत्यक अन्वेषण मे व्यक्तिगत पूर्वाग्रह आ मिथ्या भावुकता दुहू मे सँ कोनो वस्तु अहाँ कें विचलित नहि कऽ सकैत अछि।"

जदुनाथ मानवक रूप मे

जदुनाथक व्यक्तित्व दबंग छलनि। ताहि सँगे हुनक स्वाभाविक गम्भीरता ने केवल अपरिचित प्रत्युत अपन परिचितो व्यक्ति सँ हुनका दूर रखलनि। मुदा जे केओ हुनका नीक जकाँ जनैत-बूझैत रहथि से अनुभव करथि जे ओ कतेक सहृदय आ दयालु लोक छलाह। लोक सभ सँगे हुनक व्यवहार सर्वदा शिष्ट आ निश्छल रहैत छलनि।

यद्यपि हुनका अपन वेतन, जमीन्दारी जे पैतृक सम्पत्ति छलानि, आ अपन पुस्तक सभ सँ बेश पैघ आमद छलनि, तथापि ओ सरल आडम्बरहीन जीवन व्यतीत कयलनि। अपना घर मे रहनिहार बंगाली आ इतर शोधकर्त्ता विद्यार्थी लोकनिक प्रति ओ जे आतिथ्य प्रदर्शित करैत छलाह से हुनकर व्यक्तिगत दयालुता आ विद्याक संवर्द्धन मे हुनक रुचिक विशेष उदाहरण छलनि। ओ हुनका सभक सँगे भोजनेटा नहि करथि, ओ हुनका लोकनिक सुख-दुःख, आशा-निराशा मे सेहो सहभागी रहैत छलाह। खेलक मैदान मे आ भ्रमण मे ओ कोलेजिया छात्रसभक स्तर पर चल अबैत छलाह, स्वच्छन्द भावें हुनका सभक सँग दैत छलाह।

ओ अपन समयक सर्वाधिक लाभदायी उपयोग करैत छलाह। हुनकर गप्प-शप सूत्र शैली मे होइत छलनि। व्यर्थक वार्त्तालाप आ गप्पबाजी मे कहियो समय नहि गमाओल। ओ अपन पुस्तकालय मे बड़ी कालें कार्यमग्न रहैत छलाह। अपन आयक बेश पैघ अंश पोथी आ पाण्डुलिपि (खास कऽ कऽ फारसीक पाण्डुलिपि सभ) किनबा मे खर्च कयल। ई विपुल संग्रह हुनक मरणोपरान्त कलकत्ताक राष्ट्रीय पुस्तकालय, 'नैशनल लाइब्रेरी' कें दान कऽ देल गेल।

अपन कर्त्तव्यपालन आ ऐतिहासिक तथा साहित्यिक कार्यक्षेत्रक परिश्रम मे ओ अपन दीर्घ जीवन भरि अनवरत आ नियमित रूपें सक्रिय रहलाह। यत्न सँ बनाओल दिनचर्याक अनुसार काज करथि। ककरो मे आलस्य वा अन्यमनस्कता कें ओ सहन नहि कऽ सकैत छलाह। हुनका बड़ तीव्र नैतिक मूल्य-बोध रहनि आ हुनका ई विश्वास छलनि जे इऐह टा कोनो व्यक्ति आ राष्ट्रक चरित्रक सुदृढ़ आधार भऽ सकैत अछि। धर्म मे हुनका श्रद्धा छलनि, मुदा "माताक गर्भ सँ उत्पन्न कोनो नश्वर प्राणीक ओ भक्त नहि छलाह, ने ओ अवतार वा पैगम्बर कें मानैत

छलाह।" उपनिषदक हुनका पर गम्भीर प्रभाव छल। अपना दैनिक जीवन मे ओ अपना कें जाति आ सम्प्रदायक भेद सँ बहुत ऊपर रखलनि। ओ विशुद्ध उदारवादी आ मानवतावादी छलाह।

जदुनाथ कें कार्यक हेतु कार्य सँ प्रेम छलनि। लोक-प्रचलित पुरस्कार-लालसा हुनका कनेको नहि डगमगा सकैत छल। ओ लिखलनि, "केओ ई नहि बुझथु जे हम अपन साधना (पूजा) मे सिद्धि (परितोष) प्राप्त कऽ लेलहुँ। हमर मृत्युक पश्चाते संसार ई निर्णय कऽ सकत जे हमर कतबा प्रयत्न निरर्थक आशा मात्र रहल।" तथापि अपना जीवन काले मे ओ अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त कयलनि। इंगलैण्ड आ आयरलैण्डक 'रॉयल एशियाटिक सोसायटी' हुनका 'मानार्थ सदस्यता'क उच्च प्रतिष्ठा प्रदान कयलक (१६२३ ई.)। 'इंगलिश हिस्टॉरिकल सोसायटी' हुनका 'सम्बन्धित सदस्य'क रूप मे मान्यता देल (१६३५ ई.)। वाशिंग्टनक 'अमेरिकन हिस्टॉरिकल एसोसिएशन' हुनका 'आजीवन सम्मानित सदस्य' मनोनीत कयलक (१६३५ ई.)। अपना देशक बम्बई केर 'रॉयल एशियाटिक सोसायटी' हुनका अपन 'सम्मानित फेलो'क रूप मे चयन कयलक (१६२३ ई.)। रॉयल एशियाटिक सोसायटी ऑव बेन्गाल' हुनका अपन 'फेलो' बनओलक (१६२६ ई.)। ढाका विश्वविद्यालय (१६२६ ई.) तथा पटना विश्वविद्यालय (१६४४ ई.) द्वारा ओ 'मानद डी.लिट' क उपाधि सँ विभूषित कयल गेलाह। १६५२ ई. मे ओ सरदेसाई कें लिखलनि, "आब भारतक विश्वविद्यालय सभ द्वारा देल गेल डॉक्टरेटक उपाधि सभ कें हम अस्वीकार करैत छी।" हुनक अस्सी वर्ष पूरा भेला पर (१६५० ई.) 'कलकत्ता हिस्टॉरिकल सोसायटी' हुनका मानपत्र प्रदान कयल। पंजाब विश्वविद्यालय दू खण्ड मे 'सर जदुनाथ सरकार स्मृति ग्रन्थ' प्रकाशित कऽ (१६५७-१६५८ ई.) हुनका प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित कयलक।

१८६६ ई. आ १६५७ ई.क मध्य जदुनाथ कें तीनटा बेटा, चारिटा बेटी, दूटा जमाय आ एक गोट प्रपौत्रक वियोग सहन करऽ पड़लनि। वियोगक ई क्रम हुनका एकाकी बना देल, मुदा हुनक साहस कें नहि तोड़ि सकल, ने हुनक काज मे व्यवधाने ठाढ़ कऽ सकल। जीवनक अन्तिम चरण मे हुनक पत्नी कादम्बिनी देवी १८६३ ई. सँ हुनक सुख-दुःखक समर्पित सहभागिनी रहि स्थायी रूपें चलबा-फिरबा सँ असमर्थ भऽ गेलथिन। मुदा तइयो ई लौहपुरुष पूर्ववते पढ़ैत-लिखैत आ चिन्तन करैत रहल यावत् १६ मइ, १६५८ ई. कें सुषुप्तावस्थाक शान्ति मे जदुनाथ कालकवलित नहि भऽ गेलाह।

ग्रन्थ - सूची

जदुनाथ केर कृति

अँग्रेजी

१. ए शॉर्ट हिस्टरी ऑव औरंगज़ेब, १६३० ई.

२. एनेक्डोट्स ऑव औरंगज़ेब ऐन्ड हिस्टोरिकल एसेज़, कलकत्ता, एम. सी. सरकार ऐन्ड सन्ज़, १६१२ ई.

३. बिहार ऐन्ड ओरिसा इ्यूरिंग द फॉल ऑव मुगल एम्पायर (बंगाल आ उड़ीसा मे मराठा सभक विस्तृत अध्ययन सहित), पटना युनिवर्सिटी, १६३२ ई.

४. कृष्णदास कविराज
चैतन्य : हिज़ पिलग्रिमेज ऐन्ड टीचिंग्ज़ (हुनक समकालीन बँगला जीवनी 'चैतन्य चरितामृत : मध्य लीला' सँ) जदुनाथ सरकार द्वारा अँग्रेजी मे अनूदित, कलकत्ता, १६१३ ई.

५. एकनौमिक्स ऑव ब्रिटिश इन्डियां, कंलकत्ता, एस.के. लाहिड़ी, १६०६ ई.

६. फॉल ऑव द मुगल एम्पायर; वॉल्युम १, १६३२ ई., वॉल्युम २, १६३४ ई., वॉल्युम ३, १६३८ ई., वॉल्युम ४, १६५० ई., कलकत्ता, एम.सी. सरकार ऐन्ड सन्ज़.

७. हिस्टरी ऑव औरंगज़ेब:बेस्ड ऑन पर्शियन सोर्सेज़,
वॉल्युम १ रेन ऑव शाहजहाँ, १६१२ ई.
वॉल्युम २ वार ऑव एक्सेशन, १६५७-'५८ ई., कलकत्ता, एम.सी. सरकार ऐन्ड सन्ज़, १६१२ ई.
वॉल्युम ३ नौर्दर्न इन्डिया १६५८-१६८१ कलकत्ता, एम. सी. सरकार ऐन्ड सन्ज़, १६१६ ई.

वॉल्युम ४ सदर्न इन्डिया १६४५-१६८६ ई. कलकत्ता, एम. सी. सरकार ऐन्ड सन्ज़ १६१६ ई.
वॉल्युम ५ क्लोज़िंग इयर्स १६८६-१७०७ ई. कलकत्ता, एम. सी. सरकार ऐन्ड सन्ज़ १६२४ ई.

८. हिस्टरी ऑव बेन्गाल (ढाका युनिवर्सिटी) वॉल्युम २ मुस्लिम पीरियडः १२६६-१७५७ जदुनाथ सरकार द्वारा सम्पादित एवं आंशिक लिखित, ढाका युनिवर्सिटी, १६४८ ई.

९. ए हिस्टरी ऑव दशनामी सेक्ट, वॉल्यूम १ आ २, इलाहाबाद, श्री पञ्चायती अखाड़ा महानिर्वाणी, एन. डी.

१०. हिस्टरी ऑव जयपुर, १६८३ ई.

११. हाउस ऑव शिवाजी – स्टडीज़ ऐन्ड डॉक्यूमेन्ट्स ऑव मराठा हिस्टरीःरॉयल पीरीयड; कलकत्ता, एस. एन. सरकार, १६४० ई.

१२. द इन्डिया ऑव औरंगज़ेब (टोपोग्राफी, स्टैटिस्टिक्स ऐन्ड रोड्ज़), अकबरक भारत सँ तुलना, खुलासातु-त-तवारीख आ चहर गुलशन सँ उद्धृत अंश सहित; अनुवाद एवं व्याख्या, कलकत्ता, बोस ब्रदर्स, १६०१ ई.

१३. इन्डिया थ्रू दि एजेज़
कलकत्ता, एम. सी. सरकार ऐन्ड सन्ज़, १६२८ ई.

१४. विलियम इरविन
लेटर मुगल्स, जदुनाथ सरकार द्वारा सम्पादित एवं नादिरशाहक आक्रमणक इतिहास सँ संवर्धित, कलकत्ता, एम. सी. सरकार ऐन्ड सन्ज़, १६२२ ई.
वॉल्युम १ : १७०७-१७२० वॉल्युम २ : १७१६-१७३६ ई.

१५. मिलिटरी हिस्टरी ऑव इन्डिया
कलकत्ता, एम. सी. सरकार ऐन्ड सन्ज़, १६६० ई.

१६. मुगल ऐडमिनिस्ट्रेशन
पटना युनिवर्सिटी, १६२० ई.

१७. नादिरशाह इन इन्डिया
पटना युनिवर्सिटी, १६२५ ई.

१८. ए निउ हिस्टरी ऑव दि इन्डियन पीपुल :
प्रधान सम्पादक : जदुनाथ सरकार
कलकत्ता, १६४६ ई.

१९. शिवाजी – ए स्टडी इन लीडरशिप
पूना, इन्टरनैशनल बुक सर्विस, १९५० ई.

२०. शिवाजी ऐन्ड हिज़ टाइम्स
कलकत्ता, एम. सी. सरकार ऐन्ड सन्ज़, १९१९ ई.

२१. स्टडीज़ इन औरंगज़ेब्स रेन ('स्टडीज़ इन मुगल इन्डिया, फर्स्ट सीरीज़क अन्तर्गत) कलकत्ता, एम.सी.सरकार ऐन्ड सन्ज़, १९३३ ई.

२२. स्टडीज़ इन मुगल इन्डिया
(तथाकथित हमीदुद्दीन खाँक लिखल 'अखम-ई-आलमगीरी'क खिस्सा सभक अँग्रेजी अनुवाद सर्वप्रथम १९१२ ई. मे मुद्रित आ फेर 'ऐनेक्डोट्स ऑव औरंगज़ेब ऐन्ड हिस्टॉरिकल एसेज़'क रूप मे तकरा सँगे निबद्ध कऽ बहार कयल गेल। ओही अनुवाद आ जीवनीक मुद्रण कें 'अखम-ई-आलमगीरी'क संगे निबद्ध कऽ १९१५ ई. मे बहार कयल गेल आ क्रमशः अही नाम सँ प्रकाशितःअखम-ई आलमगीरी' (१९२५ ई.) ऐनेक्डोट्स ऑव औरंगज़ेब (१९२५ ई.) आ 'स्टडीज़ इन मुगल इन्डिया' (१९१९ ई.)। एहि मे दोसर आ तेसर कृतिक सँगे समान रूपें औरंगज़ेबक जीवनी देल गेल आ तेसर कृति मे बारह टा नब लेख जोड़ल गेल।

२३. द केम्ब्रिज हिस्टरी ऑव इन्डिया, वॉल्युम ४, सर रिचर्ड बर्न द्वारा सम्पादित, चारि टा अध्याय जदुनाथ सरकार द्वारा लिखल गेल।

फारसी ऐतिहासिक कृति आ अभिलेख सभक अँग्रेजी अनुवाद

१. आइन-ई-अकबरी ऑव अबुल फज़्ल-ई-अल्लम्मी; वॉल्युम २ (अकबरक साम्राज्य आ भारतक अतीतकालीन इतिहासक गजेटीयर एवं प्रशासनिक पुस्तिका; कर्नल सच.एस.जारेट द्वारा अँग्रेजी अनुवाद); दोसर बेर जदुनाथ सरकारक व्याख्या सँग सम्पादित आ संशोधित।
कलकत्ता, रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑव बेन्गाल, १९४९ ई.

२. आइन-ई-अकबरी ऑव अबुल फज़्ल-ई-अल्लामी
वॉल्युम ३ (लेखकक जीवन-परिचय आ अकबरक सूक्ति-संग्रहक सँग हिन्दू दर्शन, विज्ञान, साहित्य आ रीति-रेवाज सभक बृहत् कोष)। कर्नल एच. एस. जारटेक अँग्रेजी अनुवाद; जदुनाथ सरकार द्वारा संशोधित एवं किछु विस्तृत व्यख्या सँ संवर्धित कलकत्ता, रॉयल एशियाटिक सोसायटी ऑव बेन्गाल, १९४८ ई.

३. अखम-ई-आलमगीरी (औरंगज़ेबक खिस्सा), कलकत्ता, १६१२ ई.

४. बेंगाल नवाब्स; आज़ाद-अल-हुसैनीक 'नौबहार-ई-मुर्शिद कुली ख़ाँ; करम अलीक 'मुजफ्फरनामा' आ युसुफ अलीक 'अह्वल-ई-महबत जंग' सहित, कलकत्ता, रॉयल एशियाटिक सोसायटी ऑव बेन्गाल, १६४२ ई.

५. इंगलिश रेकॉर्ड्स ऑव मराठा हिस्टरी; पूना रेजिडेन्सी कॉरेसपोन्डेन्सेज; जेनरल एडिटर्स : सर जदुनाथ सरकार ऐन्ड जी. एस. सरदेसाई;
१४ खण्ड आ एक अतिरिक्त खण्ड
खण्ड १, ८, १४ जदुनाथ सरकार द्वारा सम्पादित, १६३६ ई., १६४३ ई., १६५१ ई.
खण्ड १ आ ८, गवर्नमेन्ट सेन्ट्रल प्रेस, बम्बई
खण्ड १४, मॉर्डर्न इन्डिया प्रेस, बम्बई

६. दि इन्डिया ऑव औरंगज़ेब (टोपोग्रैफी, स्टैटिसटिक्स ऐन्ड रोडज़) खुलासातु-त-तबारीख आ चहर गुलशनक उद्धरण सभक अँग्रेजी मे व्याख्या सहित अनुवाद, कलकत्ता, बोस ब्रदर्स, १६०१ ई.

७. मुस्ताद खाँ
मस्सिर-ई-आलमगीरी : ए हिस्टरी ऑव दि एम्पेरर औरंगज़ेब आलमगीर (रेन १६५८ ई. - १७०७ ई.) ऑव साक़-ई-मुस्ताद खाँ : जदुनाथ सरकार द्वारा अँग्रेजी मे व्याख्या सहित अनुवाद

८. नुस्खा-ई-दिलकश (ब्रिटिश म्यूज़ियमक पाण्डुलिपिक जदुनाथ सरकार द्वारा अनुवाद; सर जदुनाथ सरकार बर्थ सेन्टेनरी कौम्ममोरेशन वौल्युमक दोसर भाग के मुद्रित, बम्बई, डिपार्टमेन्ट ऑव आर्काइव्स, गवर्नमेन्ट ऑव महाराष्ट्र, १६७२ ई.

९. पर्शियन रेकार्ड्स ऑव मराठा हिस्टरी : जदुनाथ सरकार द्वारा अनूदित एवं सम्पादित
वॉल्युम १, देल्ही ऐफेयर्स: १७६१ ई.-१७८८ ई. (निउज़ लेटर फ्रॉम परस्नीस कलेक्शन), जदुनाथ सरकार द्वारा टिप्पणी सहित अनुवाद,
कलकत्ता, १६५३ ई.
वॉल्युम २, सिन्धिया ऐज़ रीजेन्ट ऑव देल्ही (१७८७ ऐन्ड १७८८ ई.–१७६१ ई.), टिप्पणी सहित फारसी सँ अनुवाद;
बम्बई, डयरेक्टर ऑव आर्काइव्स; १६५४

विविध

१. ग्लिम्पसेज़ ऑव मुगल आर्किटेक्चर : जदुनाथ सरकार द्वारा लिखित ऐतिहासिक विश्लेषण सहित भूमिका; एस. के. सरस्वती द्वारा लिखित पाठ, कलकत्ता, ऑक्सफर्ड बुक ऐन्ड स्टेशनरी कम्पनी, १६५३ ई.

२. सर जदुनाथ सरकार कौम्मेमोरेशन वॉल्युम, एच. आर गुप्त द्वारा सम्पादित आ पंजाब विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित; १६५७ ई.-१६५८ ई., सरकार-सरदेसाई पत्राचार सँ संगृहीत सामग्री जे किछु ऐतिहासिक समस्याक सम्बन्ध मे सरकार दृष्टिकोण पर प्रकाश दैत अछि।

बँगला

१. हिजिर मसनद-ई-अला (मसनद-ई-अला ऑव हिज्ली), महेन्द्रनाथ करन द्वारा लिखल आ जदुनाथ सरकार द्वारा सम्पादित, १६५८ ई.

२. मराठा जातीय विकास (इवौल्यूशन ऑव मराठा नैशनलिज़्म) कलकत्ता, १६३६ ई.

३. पटनार कथा (स्टोरी ऑव पटना),
कलकत्ता, १६१६ ई.

४. शिवाजी, कलकत्ता, एम. सी. सरकार ऐन्ड सन्ज़, १६२६ ई.

५. सियार-उल-मुतखेरीन; गौरसुन्दर मित्र द्वारा अपूर्ण बँगला अनुवाद, जदुनाथ सरकार द्वारा सम्पादित, कलकत्ता, १६१५ ई.

117137
9.12.04
SHIMLA

यद्यपि जदुनाथ सरकार (१८७०-१९५८) प्रमुखत: ऐतिहासिक अनुसन्धानक क्षेत्रक अग्रदूत आ मार्गनिर्धारक रूप मे विख्यात छथि, लेखक आ लेखक-निर्माताक रूपें बँगला भाषा आ साहित्य मे हुनक योगदान कोनो कम विशिष्ट नहि ।ओ बंगालक सामाजिक जीवन, बँगला भाषा आ साहित्य, बँगला नाटकक विकास, शिक्षा आदि विविध विषय पर ताहि कालक प्रमुख सभ मे डेढ़ सय सँ ऊपरे ज्ञानवर्धक लेख लिखल । राममोहन राय, बंकिमचन्द्र चटर्जी ओ रवीन्द्रनाथ ठाकुर पर लिखन हुनक निबन्ध साहित्यिक समालोचनाक रत्न थिक ।केनल लेखने द्वारा ओ बँगला साहित्यक श्रीवृद्धि नहि कयल, अपितु बँगला भाषा आ साहित्यक समुत्थानक हेतु कार्यरत अग्रगण्य संस्था बंगीय साहित्य परिषद् केर बाइस वर्ष धरि उपाध्यक्ष आ आठ वर्ष धरि अध्यक्ष सेहो रहलाह ।एहि प्रबन्धक अन्त मे देल ग्रन्थसूची सँ विदित होइछ जे ओ आजीवन सत्यक अन्वेषण मे दत्तचित्त रहलाह, से ऐतिहासिक क्षेत्रकहो वा साहित्यक क्षेत्रक ।१९३२ मे रवीन्द्रनाथ ठाकुर जदुनाथ कैं लिखल, "अहाँक प्रतिएँ हमर श्रद्धाक कारण ई अछि जे सत्यक अन्वेषण मे व्यक्तिगत पूर्वाग्रह वा मिथ्या भावुकता अहाँ के डिगा नहि सकैत अछि ।"

डॉ. अनिलचन्द्र बनर्जी कलकत्ता विश्वविद्यालयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धक शतवार्षिकी-प्राध्यापक एवं जादवपुर विश्वविद्यालयक भारतीय इतिहासक गुरू नानक-प्राध्यापक रहि चुकल छथि । क्षेत्र मे बहुश्रुत डॉ. बनर्जी एहि प्रबन्ध मे जदुनाथ [illegible] गहन अध्ययन प्रस्तुत कयल अछि ।

Library IIAS, Shimla
HT 954 Sa 73 B
00117137

ISBN 81-7201-980-3

पन्द्रह टाका